सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

# परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 43, नई दिल्ली । गुरुवार, 25 अप्रैल 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

कोशिश हमें अंतिम क्षण तक करनी चाहिए जीवन में सफलता मिले या ना मिले परंतु तजुर्बा तो मिलेगा ही।

03 तिहाड़ के मुलाकाती जंगले में हुई केजरीवाल और सौरभ की मुलाकात
06 मशहूर हस्तियों का सार्वजनिक आचरण
08 उडीशा मे नबीन का लुंगी पहनका राजनीति

## आचार संहिता दिल्ली में लागू या नहीं, बड़ा सवाल ?

संजय बाटला

**नई दिल्ली।** दिल्ली परिवहन विभाग में कार्यरत विशेष परिवहन आयुक्त शहजाद आलम के लिए जो कार्य वह नही करना चाहते चाहें उन पर इलेक्शन कमिशन की रोक ना भी हो अनके लिए उस कार्य पर जवाब है अभी दिल्ली में आचार संहिता लागू है इलेक्शन के बाद इस पर विचार करेंगे लेकिन जो कार्य वह करना चाहते हैं चाहे उससे इलेक्शन में वोट डालने वाले का मन बदल सकता हो उसके लिए आचार संहिता लागू नहीं है। इसके कुछ उदाहरण है की दिल्ली में सबसे बडी संख्या में व्यवसायिक वाहनों में आटो का समूह और इस समूह को लेकर उनकी तरफ़ से एक मीटिंग बुलाई गई जिसमें उस मुद्दे पर चर्चा का विषय था जिसे स्वयं विभाग ने 2020 से बंद कर रखा था और आटो वाले भी उसी लागू होने देना नही चाहते, ऐसे समय में जब इलेक्शन का दौर जारी है उस समय में इस मुद्दे को उठाना और उस पर बैठक करना क्या इतने बड़े समूह का किसी राजनैतिक दल के प्रति मन में विरोध भरवाने के लिए तो नहीं, क्या इस समय लिया गया यह फैसला सही है ?

दिल्ली सरकार द्वारा लागू सभी फ्री की स्कीम लागू रखना पर परिवहन विभाग द्वारा एक अप्रैल से दिल्ली की एक व्यवसायिक श्रेणी के लिए फ्री की सुविधा की वजह से वाहन मालिको की फिटनेस रुकवा देना और कोई हल नहीं निकालना क्या समूह को किसी राजनैतिक दल के प्रति मन में विरोध भरवाना तो नही, क्या ऐसे समय में लिया गया यह फैसला सही है ?

माल धोने वाले वाहनों जिनकी फिटनेस जांच बुराड़ी फिटनेस सेंटर में होती आ रही है उन्हे या उनकी दिल्ली की किसी भी एसोसिएशन को नोटिस जारी किए बिना/ विभाग द्वारा बिना किसी नोटिस जारी किए प्राइवेट कम्पनी को फायदा पहुंचाने के लिए वाहनों की फिटनेस को अंदर ही अंदर फैसला लेकर झुलझुली फिटनेस शाखा में बदलना समूह का किसी राजनैतिक दल के प्रति मन में विरोध भरवाने के लिए तो नहीं, क्या इस समय लिया गया यह फैसला सही है ?

**क्या दिल्ली परिवहन विभाग पर आचार संहिता लागू नहीं होती या विशेष परिवहन आयुक्त की दृष्टि में इलेक्शन कमिशन के द्वारा जारी आदेश/ दिशा निर्देश सिर्फ जनता के उन कार्यों को रूकवाने के लिए है जिन पर इलेक्शन कमिशन की रोक कभी होती ही नहीं, बड़ा सवाल ?**

एनओसी प्राप्त कर अपने वाहन को दूसरे राज्य में पंजीकरण करवाना कभी इलेक्शन की आचार संहिता में नहीं आता पर दिल्ली के समय सीमा समाप्त कर चुके व्यवसायिक वाहनों को एनओसी देना रोक रखा है और बात करने पर उस पर फैसला आचार संहिता खत्म होने यानी इलैक्शन के बाद करा जाएगा का अर्थ दिल्ली के व्यवसायिक वाहन मालिक क्या समझे और इस प्रकार के आदेशों, दिशा निर्देशों को इलेक्शन कमिशन क्या मानता है, बड़ा सवाल?

अगर ऐसे आदेशों और जवाबों के कारण 50% व्यवसायिक वाहन मालिको/ चालकों का मन किसी राजनीतिक दल के खिलाफ या दूसरे के पक्ष मे बदल गया तो दिल्ली का इलेक्शन रिजल्ट ही कुछ और हो जाएगा और उसका पूर्ण श्रेय होगा परिवहन विभाग के आला अधिकारी का।

## पार्किंग की उचित व्यवस्था न करने व यातायात व्यवस्था को बाधित मामले में फार्म हाउस संचालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज: डीसीपी उषा

### 3 मैरिज गार्डन संचालकों के खिलाफ इससे पहले भी मुकदमे किए जा चुके हैं दर्ज

सुनील कुमार जांगड़ा

**फरीदाबाद।** पुलिस आयुक्त राकेश कुमार आर्य के दिशा निर्देश तथा डीसीपी ट्रैफिक उषा के मार्गदर्शन में कार्रवाई करते हुए सुरजकुंड थाने में के के उज्जवल फार्म हाउस संचालक के खिलाफ पार्किंग की उचित व्यवस्था न करने और यातायात बाधित करने का मुकदमा दर्ज किया है। पुलिस को सूचना मिली कि फार्महाउस के बाहर रोड पर जाम लग गया है जिसकी वजह से वाहन चालकों को बहुत परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। फार्म हाउस प्रबंधक/संचालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई की गई है। इस संबंध में फार्म हाउस मैरिज गार्डन वाटिका संचालकों को यातायात व्यवस्था का उचित प्रबंध करने के आदेश किए गए थे जिनका उल्लंघन करने पर उनके खिलाफ कार्रवाई की गई है।

पुलिस उपायुक्त यातायात ऊषा के द्वारा शादियों के सीजन के चलते एक ट्रेफिक एडवाइजरी जारी की थी जिसके चलते सभी मैरिज गार्डन, वाटिका, रिजॉर्ट, बैंक्विट हॉल, रेस्टोरेंट, धर्मशाला, होटल इत्यादि को अपने यहां आने वाले यात्रियों की पार्किंग की उचित व्यवस्था करने के निर्देश दिए थे। शादी एवं पार्टी में शिरकत करने वाले आगंतुकों वाहन चालक अपने वाहन सड़क पर खडा कर देते है जिसके कारण यातायात व्यवस्था बाधित होती है। इसके चलते या ता या त व्यवस्था बिगड़ने के कारण फार्म हाउस के मालिक व मैनेजर के खिलाफ कार्रवाई करते हुए संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया है।

पूर्व में सभी मैरिज गार्डन, वाटिका, रेस्टोरेंट, धर्मशाला, होटल संचालक को वाहन पार्किंग की उचित व्यवस्था, सीसीटीवी कैमरा निगरानी, सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध एवं यातायात व्यवस्था के लिए अपने निजी कर्मचारियों की तैनाती के निर्देश पुलिस उपायुक्त यातायात के द्वारा दिए गए थे। जिसके चलते 105 मैरिज गार्डन, वाटिका, धर्मशाला, सामुदायिक केंद्र इत्यादि के प्रबंधकों / संचालकों को इस सम्बन्ध में दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 149 के तहत नोटिस देकर सूचित किया गया था।

1- सम्पूर्ण मैरिज गार्डन (पार्किंग सहित) सीसीटीवी कैमरा की निगरानी में हो,

2- मैरिज गार्डन के आसपास रोड पर वाहन पार्क न किये जावे। मैरिज गार्डन के समक्ष / आ स पा स यातायात व्यवस्था बाधित न हो इस हेतु मैरिज गार्डन परिसर में ही पार्किंग व्यवस्था रखी जावे। पार्किंग में वाहनों को व्यवस्थित लगवाने के लिए गार्डन से सुरक्षाकर्मी(गार्ड) लगाया जावे।

3- मैरिज गार्डन के गेट एवं कार्यकम स्टेज पर गार्डन संचालक की ओर से अतिथियों के सामान की सुरक्षा हेतु सुरक्षा गार्ड उपस्थित रहना चाहिए।

4- डीसीपी ट्रैफिक के निर्देशानुसार गार्डन में डीजे/साउण्ड तेज आवाज में नहीं बजना चाहिए तथा रात्रि 10.00 बजे के उपरांत डीजे बंद कराया जावे।

## मारूति से लेकर बीएमडब्लू कार के नकली एयर बैग्स मेड इन झुग्गी की सप्लाई होती थी देशभर में

परिवहन विशेष न्यूज

**एसडी सेठी।** आम जनता के जीवन से खिलवाड करने के तहत नकली एयबैग्स बनाने वालों को दिल्ली पुलिस ने छापेमारी के दौरान पकडा है। इन शातिर लोगों ने नई दिल्ली स्थित माता सुंदरी कॉलेज के पास बनी झुग्गी में करीब16 ब्रांडेड कारों के एयरबैग्स बनाने का काम धडल्ले से चल रहा था। इनके पास से नकली एयरबैग्स बनाने का कच्चा माल, समेत तैयार 921नकली एयरबैग्स रिकवर किया गया है। इसके अलावा एयरबैग्स के 287 मोटर और 109 रॉ मैटेरियल की चीजे भी बरामद की है। बरामद नकली एयरबैग्स की मार्किंग कीमत करीब 1 करोड, 84 लाख ,20 हजार रूपये आंकी गई है। दिल्ली पुलिस हेडक्वार्टर और एमसीडी के हेडक्वार्टर सिविक सेंटर की नाक तले पिछले 3 साल से अवैध तरीके से खाकी से बेखौफ धड्डले से काम कर रहे थे। मिंटो रोड के नजदीक माता सुंदरी कॉलेज,गुरुद्वारा के पास झुग्गी नंबर -24 और 248 में नामी कंपनियों के गाडियों के एयरबैग्स बनाए जाते थे। पुलिस के मुताबिक इन शातिरों के द्वारा अबतक हजारों नकली एयरबैग्स मार्किट में बेचे जाने की आशंका है।

पुलिस के मुताबिक पकडे गए आरोपी के नाम दिल्ली के तुर्कमान गेट निवासी फैजान (26) साल, फुरखान(35) यहीं की झुग्गी बस्ती निवासी मौहम्मद फराज (35) है। पुलिस पूछताछ में आरोपी मौहम्मद फराज ने बताया कि वे लोग माया पुरी स्थित कबाड की एक्सीडेंट, गाडियों से रॉ मैटेरियल इक्ट्ठा करते थे।इसके अलावा खुद भी वेल्डिंग के जरिये तैयार करते थे। पुलिस के मुताबिक

सभी आरोपी पहले से पुरानी गाडियों को स्क्रैप करने का काम करते थे। आरोपियों को एयरबैग्स बनाने का आइडिया यूट्यूब से सीखा।जिसके बाद वह इसे बनाने लगे। उल्लेखनीय है कि ऑटो मार्किंग में कंपनी के एयरबैग्स की कीमत 1.50 लाख रूपये है। लेकिन ये लोग ब्रांडेड कंपनी का लोगो लगाकर नकली एयरबैग्स 30 से 50 हजार रूपये में बेच रहे थे। इन नकली एयरबैग्स की डिमांड दिल्ली-एनसीआर समेत देश में निजी गैराज- वर्कशाप चलाने वालों सबसे ज्यादा थी। ब्रांडेड कंपनी की कीमत से बेहद सस्ती के झांसे में आकर वह गाडियों में चेक देते थे। धीरे-धीरे ऑटोमोबाइल मार्किट में इनकी अच्छी खासी पहचान बना ली थी। अब इनके पास दिल्ली एनसीआर समेत देश के दूसरे राज्यों से भी डिमांड आने लगी थी। आने लगी थी। इनका धंधा इतना बढ गया था कि ये लोग अब कूरियर के जरिए भेजने लगे थे। पुलिस की पूछताछ में आरोपियों ने कुबूल किया कि उनके पास कोई तकनीकी जानकारी नहीं है। बहरहाल दिल्ली में नकली एयरबैग्स बनाने वाली झुग्गी में मिनी फैक्ट्रियां पकडे जाने के बाद एक बार फिर से ऑटो पाट्र्स की सेफ्टी और असली नकली पर सवाल खडे हो गए हैं। नकली एयरबैग्स में तकनीकी खराबी या सेंसर की मिसिंग से जान के लाले जरूर पड रहे हैं।हाईवे पर ओवर स्पीड गाडियों में नकली एयरबैग्स से आखिर जान बचे तो कैसे? जांच तो बनती है। बहरहाल ब्रांडेड ऑटोमोबाइल कंपनियों के लिए आंखे खोल देने वाले इस कारनामें के चलते पुलिस प्रशासन समेत लोकल ऐजेंसियों तक शक के दायरे में आ गई हैं।

## दिल्ली सरकार और ट्रांसपोर्ट विभाग के अधिकतर मुद्दों को लेकर दिल्ली टैक्सी टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एंड टूर ऑपरेटर्स एसोसिएशन ने की कॉन्फ्रेंस आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

**नई दिल्ली।** 24 अप्रैल 2024 क़ो हम जो प्रेस क्लब ऑफ़ इंडिया मे 3 बजे प्रेस कॉन्फ्रेंस करी, उसमे हमारे ज्यादातर मुद्दे दिल्ली सरकार और उसके ट्रांसपोर्ट विभाग के हैं. जिसकी वजह से भ्रस्टाचार हो रहा हैं और टैक्सी बस मालिक / चालक को मानसिक पीड़ा भी हो रहीं हैं. कुछ मुद्दे केंद्र सरकार के और कुछ दुसरे राज्यों की भी हैं.इसमें काफी मुद्दे महिलाओ की सुरक्षा से भी जुड़े हुए हैं और इन मुद्दों से भारत हीं नहीं पूरे संसार से आने वाली महिलाओ से जुडा हैं खासकर विदेशी पर्यटको से. दिल्ली सरकार के ट्रांसपोर्ट विभाग द्वारा दिल्ली की कमर्सयल टूरिस्ट टैक्सी बसों मे पेनिक बटन (वहीक्ल लोकेशन ट्रैकिंग डिवाइस) बहुत सालो से लगाया जा रहा हैं. इसके लिए दिल्ली सरकार ने परिवहन विभाग द्वारा प्राइवेट डीलर का पेनल बनाया हुआ हैं जो की इन पेनिक बटन (VLTD) लगाने के 15 हजार तक पैसे लेते हैं और DIMMTS जो की दिल्ली सरकार के साथ मिलकर काम करता हैं वो सिम कार्ड के लिए 2850 रुपये हर 2 साल बाद चार्ज करता हैं. जबकि यें पेनिक बटन मात्र 5 रुपये का एक प्लास्टिक बटन हैं जिसके दबाने से कुछ नहीं होता. इसके अलावा स्पीड लिमिट डिवाइस से हमारी टूरिस्ट टैक्सी बसों की स्पीड हाईवे और एक्सप्रेस वे पर मात्र 80 किलोमीटर प्रति घंटा हैं जबकि प्राइवेट कारो की स्पीड 120 किलोमीटर प्रति घंटा हैं, इसकी वजह से देसी विदेशी पर्यटको की जान माल का खतरा हमेशा बना रहता हैं और खासकर महिलाओ पर्यटको के साथ बलात्कार होने की संभवाना बनी रहती हैं क्योंकी हाई वे पर लूटेरे ओवरटेक करके गाड़ियों को लूट लेते हैं.

लगभग 10 साल सालो से हमारी जायज मांगो को सरकारों द्वारा अनुसूना किया जा रहा हैं जो की निम्नलिखित हैं

1:- पैनिक बटन के नाम पर करोंड़ो रूपए का भ्रष्टाचार हो रहा हैं.

2:- स्पीड लिमिट डिवाइस (स्पीड गवर्नर) के कारण महिलाओ की सुरक्षा से खिलवाड़ हो रहा हैं, महिलाओ के साथ बलात्कार होने की संभवाना हो रहीं हैं और उनकी जानमाल को खतरा हैं.

3:- MCD टोल टैक्स के नाम पर भ्रष्टाचार हो रहा हैं

4:- प्रदूषण के नाम पर गाड़ियों को स्क्रीप(कूड़ा )बनाया जा रहा हैं.

5:- ग्रेप सिस्टम लगाकर गाड़ियों पर 20 हजार तक जुर्माना करा जाता हैं.

6:- RFID MCD टोल टैक्स से नाजायज पैसा काटा जा रहा हैं.

7:- उत्तर प्रदेश के डिसट्रिक्ट मजिस्ट्रेट /चुनाव अधिकारी द्वारा बसों को जबरजस्ती छीन कर उन्हें इलेक्शन ड्यूटी मे लगाकर पैसा नहीं दिया जा रहा हैं.

8:- हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन नंबर प्लेट रुपये 250 की जगह रुपये 800 की जा रहीं हैं.

इतने सालो में ना तो दिल्ली के मुख्य मंत्री और ना हीं इनके दुसरे मंत्रियो ने हमें मिलने का समय कभी नहीं दिया. ऐसा हीं हाल केंद्र सरकार के मंत्रियो का रहा उन्होंने भी हमें मिलने का समय नहीं दिया और ना हीं हमारी कोई मांग पूरी करी. इसलिए हम लोगों ने तय किया हैं की हम इस चुनाव में वोट नहीं डालेंगे और चुनाव का बहिष्कार करेंगे क्योंकी जब कोई सरकार हमारी बाते हीं नहीं सुनती हैं तो हमारा वोट देना भी एक मजाक हैं

## सड़क सुरक्षा पाठशाला : तनाव मुक्त ड्राइविंग के लिए रोड मैप

ड्राइविंग कई लोगों के लिए तनाव का एक स्रोत हो सकती है, चाहे वह ट्रैफ़िक से गुज़रना हो, आक्रामक ड्राइवरों से निपटना हो, या समय पर अपने गंतव्य पर पहुँचने की चिंता हो। हालाँकि, सही दृष्टिकोण और मानसिकता के साथ, आप गाड़ी चलाने के अपने समय को एक आरामदायक और आनंददायक अनुभव में बदल सकते हैं। सड़क पर तनावमुक्त होकर गाड़ी चलाने में आपकी मदद के लिए यहां कुछ सुझाव दिए गए हैं:

**आगे की योजना बनाएं:**

सड़क पर उतरने से पहले, अपने मार्ग की योजना बनाने के लिए कुछ मिनट का समय लें। ट्रैफ़िक की स्थिति और सड़क बंद होने की जाँच करने के लिए नेविगेशन ऐप्स का उपयोग करें और अनुमान लगाएं कि आपकी यात्रा में कितना समय लगेगा। यह जानने से कि क्या अपेक्षा की जानी चाहिए, चिंता को कम करने और अंतिम समय की भागदौड़ को रोकने में मदद मिल सकती है।

**जल्दी निकलें:**

अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए खुद को पर्याप्त समय दें। जल्दी निकलने से न केवल हड़बड़ी का दबाव कम होता है, बल्कि ट्रैफिक जाम या चक्कर जैसी अप्रत्याशित देरी भी होती है। साथ ही, जल्दी पहुंचने से आपको अपनी अगली नियुक्ति से पहले आराम करने का समय मिल जाता है।

**रक्षात्मक ड्राइविंग का अभ्यास करें:**

सड़क पर ध्यान केंद्रित रखें और अन्य ड्राइवरों की गतिविधियों का अनुमान लगाएं। अपने सामने वाली कार से सुरक्षित दूरी बनाए रखें, अपने इरादों का स्पष्ट संकेत दें और आक्रामक चालों से बचें। रक्षात्मक रूप से गाड़ी चलाकर, आप दुर्घटनाओं के जोखिम को कम कर सकते हैं और तनाव के स्तर को कम कर सकते हैं।

**ट्रैफ़िक में शांत रहें:**

ट्रैफ़िक जाम ड्राइविंग का एक अनिवार्य हिस्सा है, लेकिन इससे आपका दिन बर्बाद नहीं होता है। इस समय का उपयोग आराम करने और आराम करने के लिए करें - अपना पसंदीदा संगीत या पॉडकास्ट सुनें, गहरी साँस लेने के व्यायाम का अभ्यास करें, या बस दृश्यों का आनंद लें। याद रखें, आप ट्रैफ़िक में नहीं फंसे हैं; आप बस इसका एक हिस्सा हैं.

**विकर्षणों को कम करें:**

संदेश भेजने, खाने या रेडियो को समायोजित करने जैसी विकर्षणों से तनाव बढ़ सकता है और सुरक्षित रूप से गाड़ी चलाने की आपकी क्षमता ख़राब हो सकती है। गाड़ी चलाते समय अपना ध्यान सड़क पर रखें और एक साथ कई काम करने से बचें। यदि आपको कॉल करने या किसी संदेश का जवाब देने की आवश्यकता है, तो पहले किसी सुरक्षित स्थान पर पहुंचें।

**ब्रेक लें:**

यदि आप लंबी यात्रा पर जा रहे हैं, तो अपने पैरों को फैलाने, नाश्ता करने और रिहाइड्रेट करने के लिए नियमित ब्रेक लेना सुनिश्चित करें। थकान आपके निर्णय और प्रतिक्रिया समय को ख़राब कर सकती है, इसलिए गाड़ी चलाते समय तरोताजा और सतर्क रहना आवश्यक है।

**अपने वाहन को अच्छी तरह से बनाए रखें:**

एक अच्छी तरह से बनाए रखा वाहन खराब होने या यांत्रिक समस्याओं का अनुभव करने की संभावना कम है, जो सड़क पर तनाव और निराशा का कारण बन सकता है। नियमित रखरखाव जांच शेड्यूल करें, अपने टायरों को ठीक से रखें और सुनिश्चित करें कि सभी आवश्यक तरल पदार्थ ऊपर रखे गए हैं। यह जानना कि आपका वाहन अच्छी स्थिति में है, आपको गाड़ी चलाते समय मानसिक शांति मिल सकती है।

**व्यस्त समय से बचें:**

जब भी संभव हो, व्यस्त यातायात के समय में गाड़ी चलाने से बचने का प्रयास करें। भीड़-भाड़ को कम करने और सड़क पर आक्रामक ड्राइवरों या तनावपूर्ण स्थितियों का सामना करने की संभावना को कम करने के लिए भीड़-भाड़ वाले समय से बाहर अपनी यात्राओं की योजना बनाएं।

**कृतज्ञता का अभ्यास करें:**

ड्राइविंग के सकारात्मक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करके अपना दृष्टिकोण बदलें। देरी या असुविधाओं पर ध्यान देने के बजाय, ड्राइविंग से मिलने वाली स्वतंत्रता और आजादी के बारे में सोचें। एक स्थान से दूसरे स्थान तक सुरक्षित यात्रा करने की क्षमता के लिए आभार व्यक्त करें, और यात्रा को प्रशंसा और खुशी की भावना के साथ स्वीकार करें।

इन युक्तियों को अपनी ड्राइविंग दिनचर्या में शामिल करके, आप सड़क पर अपना समय तनावपूर्ण अनुभव से आरामदायक और आनंददायक अनुभव में बदल सकते हैं। ध्यान केंद्रित रखना, शांत रहना और बाकी सब से ऊपर सुरक्षा को प्राथमिकता देना याद रखें। सही मानसिकता और दृष्टिकोण के साथ, आप आसानी और शांति के साथ राजमार्गों और उपमार्गों पर नेविगेट कर सकते हैं। आशा है आपकी यात्रा सुखद हो!

*डॉ अंकुर शरण, सड़क सुरक्षा ओमनी फाउंडेशन*

## हमारे राष्ट्र के प्रिय युवाओं...

जैसे ही आप नित्य जीवन में अपनी यात्रा शुरू करते हैं, याद रखें कि कार आपकी हो सकती है, लेकिन आप अपने देश के हैं। हर बार जब आप गाड़ी चलाते हैं, तो आप न केवल अपने साथ, बल्कि अपने प्रियजनों और अपने समुदाय की आशाओं और सपनों को भी साथ लेकर चलते हैं।

मैं आपसे ईमानदारी और करुणा के साथ गाड़ी चलाने का आग्रह करता हूं। आपकी मानवता एक अनमोल संपत्ति है, खासकर सड़क पर जहां धैर्य और समझदारी जिंदगियां बचा सकती है। कोई भी गंतव्य आपकी सुरक्षा या दूसरों की सुरक्षा को जोखिम में डालने लायक नहीं है।

अपनी सफलता की खोज में, सावधानीपूर्वक योजना और स्थिर प्रगति के मूल्य को कभी न भूलें। तेज़ गति से गाड़ी चलाना आकर्षक लग सकता है, लेकिन यह अक्सर आपदा का कारण बनती है। लापरवाही का एक क्षण न केवल आपके सपनों को चकनाचूर कर सकता है बल्कि उन लोगों के दिलों को भी चकनाचूर कर सकता है जो आपकी परवाह करते हैं।

जीवन एक अनमोल उपहार है, और प्रत्येक यात्रा को श्रद्धा और देखभाल के साथ किया जाना चाहिए। आइए हम सुरक्षित रूप से अपने गंतव्य तक पहुंचने का प्रयास करें, यह जानते हुए कि सड़क पर हम जो भी निर्णय लेते हैं वह न केवल हम पर बल्कि हमारे परिवार और हमारे समाज पर भी प्रभाव डालता है।

इसलिए, मेरे साथी युवाओं, मैं आपसे सावधानी से गाड़ी चलाने, गाड़ी चलाने के साथ आने वाली जिम्मेदारी को अपनाने और इस ख़ूबसूरत यात्रा के दौरान जीवन के उपहार को संजोने का आग्रह करता हूं। आपकी सुरक्षित यात्रा और उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

**आपका शुभचिंतक**
**डॉ अंकुर शरण, सड़क सुरक्षा ओमनी फाउंडेशन**

# दोस्ती क्यों टूट जाती है? रोमांटिक रिश्ते के टूटने से भी बदतर होता है अनुभव, दर्द के सैलाब से कैसे निपटें?

एकता

अगर आप भी ऐसी किसी परिस्थिति से गुजरे हैं तो यकीन मानिए आप अकेले नहीं है। अमेरिका के एक अध्ययन से पता चला है कि 86% टीनएजर्स ने दोस्ती टूटने का अनुभव किया है। इनके मुताबिक, रोमांटिक रिश्ते के टूटने पर जितना बुरा महसूस होता है, दोस्तों को खोना भी उतना ही कठिन अनुभव है।

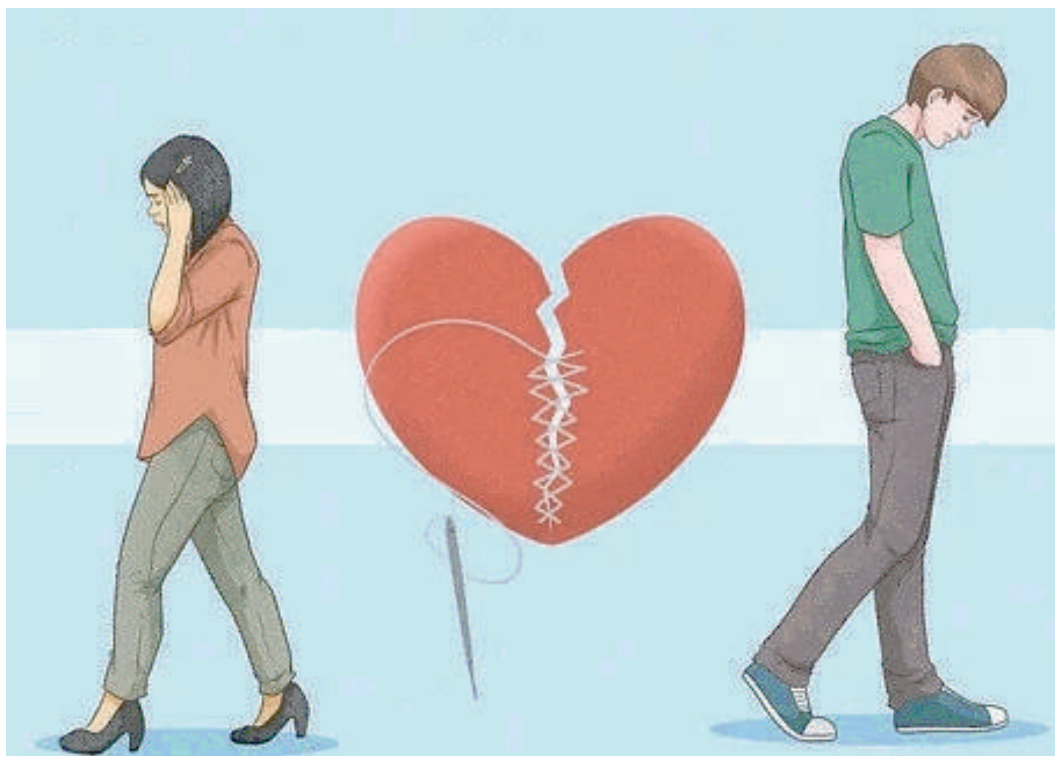

जिंदगी में दोस्ती और दोस्तों का होना जरुरी है। इनके होने से हमारी जिंदगी इंद्रधनुष के सात रंगों की तरह खुशियों से भरी रहती है। कहा जाता है कि दोस्ती एक ऐसा रिश्ता है, जो हमेशा एक जैसा रहता है। हालाँकि, सच्चाई इससे कोसो दूर है। अन्य रिश्तों की तरह दोस्ती के रिश्ते को भी देखभाल और समर्थन की जरुरत होती है। निरंतर देखभाल न की जाए तो दोस्ती का रिश्ता भी टूट जाता है। ये रोमांटिक रिश्ते के खत्म होने से भी ज्यादा बुरा हो सकता है। दोस्तों के साथ में हम अच्छा, बुरा और मनोरंजक समय बिताते हैं। इसीलिए दोस्ती टूटने पर हम बुरी तरह प्रभावित हो जाते हैं। हमें समझ नहीं आता कि आगे क्या करें? खुद को कैसे संभालें? आगे कैसे बढें?

अगर आप भी ऐसी किसी परिस्थिति से गुजरे हैं तो यकीन मानिए आप अकेले नहीं है। अमेरिका के एक अध्ययन से पता चला है कि 86% टीनएजर्स ने दोस्ती टूटने का अनुभव किया है। इनके मुताबिक, रोमांटिक रिश्ते के टूटने पर जितना बुरा महसूस होता है, दोस्तों को खोना भी उतना ही कठिन अनुभव है।

एक व्यक्तिगत विकास समूह के हालिया सत्र में, 20 और 30 साल के कई लोगों ने दोस्ती टूटने और दोस्तों के छूट जाने पर बातचीत की। सभी के अनुभव लगभग एक जैसे थे। सभी लोगों की दोस्ती लगभग एक जैसे कारणों की वजह से टूटी थी। लोगों ने बताया कि सब कुछ ठीक था, लेकिन फिर एक दिन दोस्त ने लंबा चौड़ा मैसेज भेजा और कहा कि वह दोस्ती से खुश नहीं हैं और आगे इसे बढ़ाना नहीं चाहते हैं।

**दोस्तों के दोस्ती खत्म करने पर लोगों की क्या प्रतिक्रिया थी?**

सभी लोगों ने एक जैसी प्रतिक्रिया दी। मैंने इसे आते हुए कैसे नहीं देखा? मेरा दोस्त इसे कैसे ख़त्म कर सकता है? इतना ही नहीं उन्होंने यह भी कहा, 'मैं इतना निराश क्यों महसूस कर रहा हूँ, जबकि ऐसा नहीं है कि वे मेरे जीवन साथी या कुछ और हैं?' एक अन्य ने कहा, 'मैं इस बारे में कैसे बात कर सकता हूं कि यह कितना बुरा लगता है। लोग शायद सोचेंगे कि मैं जरूरत से ज्यादा प्रतिक्रिया कर रहा हूं?'

**दोस्ती में अहम भूमिका निभाता है लगाव?**

किशोरावस्था के दौरान हम बदलावों से गुजरते हैं। हमारे साथ हमारे रिश्ते भी बदलते हैं। बचपन में हमारा रिश्ता माता-पिता के साथ होता है, जो देखभाल पर जुड़ा होता है। लेकिन किशोरावस्था में चीजें बदलती है और ये हमें भविष्य के लिए तैयार करती हैं। किशोरावस्था हमारे झुकाव को माता-पिता से हटाकर ऐसे लोगों की ओर स्थानांतरित कर देती है, जिनपर हम सबसे अधिक भरोसा करते हैं या फिर जिसके साथ अंतरंग संपर्क चाहते हैं जैसे रोमांटिक पार्टनर या सच्चा दोस्त। जहाँ रोमांटिक पार्टनर बदलते रहते हैं, वहीं दोस्त लंबे समय तक रह सकते हैं। इसलिए एक दोस्त के साथ के रिश्ते को अन्य किसी भी रिश्ते से मजबूत माना गया है।

सदमा और अस्वीकृति- एक्सपर्ट के अनुसार, यदि आपने इसे (दोस्ती टूटने) को आते हुए नहीं देखा तो यह विशेष रूप से भ्रामक हो सकता है। शोध से पता चलता है कि ज्यादातर लोग दोस्ती तोड़ देते हैं और इसके पीछे के मुद्दों पर बात करने की बजाय इन्हें टाल देते हैं। यह एक सदमे जैसा महसूस हो सकता है और इस बात को अस्वीकार्य करना परेशान कर सकता है। इससे आपका आत्मविश्वास कमजोर हो सकता है।

**दोस्ती ख़त्म होने के पीछे क्या कारण?**

युवावस्था में दोस्ती खत्म होने के कई कारण होते हैं। इन कारणों में शारीरिक अलगाव होना, पुराने दोस्तों की जगह नए दोस्त बना जाना, दोस्त के प्रति नापसंदगी बढ़ना और डेटिंग या शादी के कारण हस्तक्षेप होना शामिल है। जब हम एक रोमांटिक रिश्ते में शामिल हो जाते हैं तब दोस्ती को कम समय देने लगते हैं। ऐसे में अगर आपका कोई दोस्त सिंगल है तो यकीनन उसके दिल में बुरे ख्याल आने लगेंगे। वह अकेला महसूस कर सकता है, उसे जलन हो सकती है या फिर वो डरा हुआ महसूस कर सकता है।

**सहानुभूति और संचार मदद कर सकता है**

दोस्ती का रिश्ता जीवन में हो रहे बदलावों की वजह से खत्म नहीं होना चाहिए न ही आपको इसे खत्म होने देना चाहिए। दोस्त जरुरी है क्योंकि हम हर बात अपने पार्टनर या परिवार से साझा नहीं कर सकते हैं। इसलिए अगर आपके जीवन के बदलाव आपकी दोस्ती को प्रभावित कर रहे हैं तो दोस्त के साथ बैठिये और उनसे बात कीजिये। बातें करने से मुद्दे साफ हो जाएंगे। बात करके, आप एक-दूसरे को दोस्ती के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के बारे में आश्वस्त भी कर सकते हैं। भले ही आपको एक साथ पहले जितना समय नहीं मिल रहा, लेकिन जितना मिल रहा है उसके हिसाब से एडजस्ट करने की कोशिश करें।

**संचार विफल हो जाए तो क्या करें?**

हमेशा अच्छे की उम्मीद करने से अच्छा नहीं होता है। जरुरी नहीं कि आपने अपनी दोस्ती को ठीक करने की जो दिमाग में कल्पना की है वैसे ही सब हो जाए। हो सकता है जिस रिश्ते को आप ठीक करने की कोशिश कर रहे हैं वो अब ठीक करने लायक बचा ही नहीं है। आप दोस्त से बात करना चाहते है, लेकिन वे आपसे बात नहीं करना चाहते हैं? फिर क्या करेंगे आप? इससे आपकी भावनाएँ आहत हो सकती हैं। इससे भी बदतर अगर कुछ होगा तो वो ये कि जिस दोस्त के साथ आप सब ठीक करना चाहते हैं वो आपको और ज्यादा बुरा महसूस करवा सकता है। हो सकता है कि हर चीज के लिए वो आपको दोष दे सकता है। ऐसे में क्या किया जाए? इस परिस्थिति में दोस्ती को जाने देना सबसे अच्छा है।

**दोस्ती टूटने के बाद तनाव कम करने के लिए क्या करें?**

दोस्ती टूटने के बाद खालीपन महसूस हो सकता है, लेकिन एक चीज जो आपको समझने की जरूरत है वो यह है कि समय के साथ सब ठीक हो जाएगा। घाव भरने में थोड़ा समय लग सकता है, लेकिन ये भर जायेंगे। इस दौरान आप इन्हें खुद से खुरेदने की कोशिश न करें। कभी-कभी दर्द का सैलाब महसूस हो सकता है, जिसे ब्रीथिंग एक्सरसाइज की मदद से कम किया जा सकता है। जब तक शांत महसूस न करें तब तक ब्रीथिंग एक्सरसाइज का अभ्यास करते रहें।

# वैक्सिंग कराने के बाद स्किन होती है डैमेज, तो इन बातों का रखें ख्याल

दिव्यांशी भदौरिया

अगर आप घर में वैक्सिंग करते हैं तो आपको कुछ बातों का खास ध्यान रखना चाहिए ताकि स्किन डैमेज न हो और इस लेख में हम आपको टिप्स बताने जा रहें, इन्हें फॉलो जरुर करें। कई महिलाएं घर पर ही वैक्सिंग करती हैं लेकिन घर पर वैक्सिंग करने के दौरान कुछ बातों का खास ध्यान रखना चाहिए ताकि स्किन डैमेज न हो।

अनचाहे बाल पैरों और हाथों की खूबसूरती को कम कर देते हैं। वहीं इनकी सुंदरता में बनाए रखने के लिए महिलाएं वैक्सिंग का सहारा लेती हैं। महिलाएं ब्यूटी पार्लर में जाकर वैक्सिंग करवाती हैं लेकिन ये काफी खर्चीला होता है। वहीं इस दौरान कई महिलाएं घर पर ही वैक्सिंग करती हैं लेकिन घर पर वैक्सिंग करने के दौरान कुछ बातों का खास ध्यान रखना चाहिए ताकि स्किन डैमेज न हो। वहीं इस आर्टिकल में हम आपको इसी बातों का खास ध्यान रखना चाहिए। चलिए आपको बताते हैं किन बातों का रखना है ध्यान।

**क्वालिटी का रखें ध्यान**

वैक्सिंग करते समय इस बात का ध्या रखें कि वैक्स की क्वालिटी अच्छी ही ताकि इसका इस्तेमाल करने से स्किन से जुड़ी कोई समस्या पैदा न हो। वहीं वैक्स की क्वालिटी का हमेशा ध्यान रखें, क्योंकि इससे स्किन डैमेज नहीं होगी।

**पाउडर का करें इस्तेमाल**

कई महिलाओं की स्किन सेंसिटिव होती हैं। वहीं गर्म वैक्सिंग को हाथ -पैरों पर लगाने से पहले आप पाउडर का इस्तेमाल करें, क्योंकि वैक्सिंग की वजह से स्किन डैमेज हो जाती है। पाउडर के यूज से त्वचा पर नमी नहीं रहती और वैक्सिंग के बाद किसी भी तरह परेशानी नहीं आती है।

**अच्छी स्ट्रिप्स का यूज करना**

अगर आप घर में वैक्सिंग करती हैं तो डिस्पोजेबल स्ट्रिप्स का इस्तेमाल कर सकते हैं। कई बार महिलाएं एक ही स्ट्रिप्स का इस्तेमाल न करें। वहीं स्ट्रिप की जगह अगर आप जीन्स का कपड़ा का इस्तेमाल करती हैं। लेकिन ऐसा करने से स्किन से जुड़ी समस्या शुरु हो सकती है।

**वैक्सिंग के बाद नहाएं जरुर**

वैक्सिंग करवाने से पहले नहाना जरुरी नहीं हैं लेकिन वैक्सिंग के बाद नहाना भी जरुरी हैं ताकि स्किन पर लगी वैक्स आराम से निकल जाए और कोई इंफेक्शन न हो। वैक्सिंग से पहले पैच टेस्ट करना जरुरी है वैक्सिंग करने से पहले जहां बाल निकल जाते हैं तो वहीं कई वैक्सिंग के बाद और स्किन डैमेज हो सकती हैं। वहीं ऐसे में वैक्सिंग करवाने से पहले टेस्ट करवा लें।

# अपेक्षाओं में बहकर कहीं आप भी तो नहीं कर रहे ये गलतियां? रिश्ते को हो सकता है नुकसान

हम अपनी इन अपेक्षाओं में भटक जाते हैं और फिर हमारे रिश्ते को सुरक्षित रखने वाली सीमाओं को भूल जाते हैं और कुछ ऐसी हरकते कर बैठते हैं, जिससे रिश्ते को नुकसान पहुँचता है। चलिए रिलेशनशिप एक्सपर्ट तालिया कोरेन से हम अपेक्षाओं में बहकर होने वाली उन गलतियों के बारे में जानते हैं, जो अक्सर लोग कर बैठते हैं और फिर उनका रिश्ता खराब हो जाता है।

> उम्मीद से अधिक देना और फिर उन्हें वापस देने के लिए प्रेरित करता है- एक्सपर्ट ने बताया कि वह अपनी आवश्यकताओं और अनुरोधों को पार्टनर को सीधे बताने की बजाय आशा करती थी कि वे इस पर ध्यान देंगे और बदले में कुछ अच्छा करेंगे। लेकिन रिश्ते ऐसे काम नहीं करते हैं। पार्टनर के लिए अपने मन से चीजें करने और बदले में उनसे उसी चीज की अपेक्षा करना केवल नाराजगी का कारण बनता है। इसलिए बदले में वापस कुछ पाने की अपेक्षा रखे बिना पार्टनर के लिए चीजें करें। परेशानी में पीछे हट जाना ताकि वो आपका पीछा कर सकें- एक्सपर्ट ने अपने अतीत के अनुभव को साझा करते हुए बताया कि जब मैं पार्टनर से नाराज़ महसूस करती थी तो आगे बढ़ने के बजाय मैं उनसे दूर चली जाती थी ताकि उन्हें मेरा पीछा करना पड़े। यह बिल्कुल भी अच्छा संचार नहीं था।

जब आप किसी रिश्ते में होते हैं तो अपने साथी से थोड़ी बहुत अपेक्षाएं रखना स्वाभाविक है। दरअसल, अपेक्षाएं हमारे रिश्ते को आकार देने में मदद करती है। इन्हीं की वजह से हम अपने साथी के साथ आगे बढ़ते हैं। इसलिए साथी से अपेक्षाएं रखने में कोई भी खराबी नहीं है। लेकिन कभी-कभी हम अपनी इन अपेक्षाओं में भटक जाते हैं और फिर हमारे रिश्ते को सुरक्षित रखने वाली सीमाओं को भूल जाते हैं और कुछ ऐसी हरकते कर बैठते हैं, जिससे रिश्ते को नुकसान पहुँचता है। चलिए रिलेशनशिप एक्सपर्ट तालिया कोरेन से हम अपेक्षाओं में बहकर होने वाली उन गलतियों के बारे में जानते हैं, जो अक्सर लोग कर बैठते हैं और फिर उनका रिश्ता खराब हो जाता है।

दूसरे व्यक्ति को बदलने का प्रयास करना- यह एक हार है। रिलेशनशिप एक्सपर्ट ने अपना उदाहरण देते हुए कहा कि मेरे लिए, यह एक निरंतर कठिन संघर्ष और निराशा जैसा महसूस हुआ। वे मेरे जैसे क्यों नहीं बन सके? वे अधिक सहानुभूतिपूर्ण क्यों नहीं हुए? जैसे-जैसे मेरी हताशा बढ़ती गई, दूसरे व्यक्ति को और अधिक अपर्याप्त महसूस होने लगा और एक भागीदार के रूप में उसका सारा विश्वास खो गया। हम दूसरे लोगों को नहीं बदल सकते हैं।

उम्मीद से अधिक देना और फिर उन्हें वापस देने के लिए प्रेरित करता है- एक्सपर्ट ने बताया कि वह अपनी आवश्यकताओं और अनुरोधों को पार्टनर को सीधे बताने की बजाय आशा करती थी कि वे इस पर ध्यान देंगे और बदले में कुछ अच्छा करेंगे। लेकिन रिश्ते ऐसे काम नहीं करते हैं। पार्टनर के लिए अपने मन से चीजें करने और बदले में उनसे उसी चीज की अपेक्षा करना केवल नाराजगी का कारण बनता है। इसलिए बदले में वापस कुछ पाने की अपेक्षा रखे बिना पार्टनर के लिए चीजें करें।

परेशानी में पीछे हट जाना ताकि वो आपका पीछा कर सकें- एक्सपर्ट ने अपने अतीत के अनुभव को साझा करते हुए बताया कि जब मैं पार्टनर से नाराज़ महसूस करती थी तो आगे बढ़ने के बजाय मैं उनसे दूर चली जाती थी ताकि उन्हें मेरा पीछा करना पड़े। यह बिल्कुल भी अच्छा संचार नहीं था। यह मूल रूप से एक खेल है। इसे और भी बदतर बनाने वाली बात यह थी कि अगर उन्होंने ध्यान ही नहीं दिया कि मैं बिल्कुल भी पीछे हट रही हूँ। फिर कोई कनेक्शन नहीं होता। अब, अगर मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि मुझे और अधिक कनेक्शन चाहिए, तो मैं तुरंत संपर्क करती हूँ।

अपनी ज़रूरतें अपने तक ही सीमित रखना- तालिया ने बताया कि पहले मैं अपनी जरूरतें नहीं बता पाती थी। और अगर मैंने कोशिश की, तो मेरा शरीर घबराहट की स्थिति में आ जाता था। इसका एक कारण यह है कि मैंने अपनी जरूरतों को खुलकर बोलने के लिए कभी भी खुद को सुरक्षित महसूस नहीं कराया था, लेकिन अतीत में मैंने ऐसा मुश्किल से ही किया है, यहां तक कि उन दुर्लभ क्षणों में भी जब मैंने सुरक्षित महसूस किया था। अब, मैं अपने भीतर सुरक्षा पैदा करने पर काम करती हूँ और मैंने एक ऐसा साथी चुना है जो मुझे बहुत सुरक्षित महसूस कराता है।

संघर्ष से बचने के लिए कुछ भी करना- एक्सपर्ट ने कहा कि लोग संघर्ष से भागते हैं, जो उनके रिश्ते में जहर घोल देता है। एक्सपर्ट ने लोगों को राय दी कि ऐसा करने से बचे और अपने अंदर के दर्द और नाराजगी को पार्टनर के साथ साझा करें। एक्सपर्ट ने कहा, 'पहले मैं संघर्ष से बचने के लिए जो कुछ भी कर सकती थी करती थी, लेकिन अब मैं इसका सामना करने में सक्षम हूँ।'

# मछुआरों, महिलाओं और स्थानीय संस्कृति का सहारा

उमेश चतुर्वेदी

तमिलनाडु में मौजूदा सत्ताधारी डीएमके का मोर्चा बढ़त की उम्मीदे पाले हुए है तो बीजेपी इस बार बड़ी सेंध लगाने का दावा कर रही है। बीजेपी के दावे की वजह है, प्रधानमंत्री की सभाओं में उमड़ती रही भीड़। जिसे बढ़ाने में अमित शाह अपनी ओर से जोर देते रहे।

अपने दम पर बहुमत के साथ लगातार दो बार से केंद्रीय सत्ता को संभाल रही भारतीय जनता पार्टी के लिए तमिलनाडु और केरल अब तक प्रश्न प्रदेश रहे हैं। इस लिस्ट में 25 सीटों वाले आंध्र प्रदेश को भी शामिल किया जा सकता है। 'अबकी बार चार सौ पार' के नारे में दक्षिण का अभेद्य बना किला फतह करने की कोशिश भी शामिल है। पार्टी को पता है कि जब तक वह अभेद्य समझे जाने वाले दक्षिण के दुर्ग में जोरदार सेंध नहीं लगाएगी, उसका यह नारा जमीनी हकीकत के नजदीक नहीं पहुंच पाएगा। यही वजह है कि पार्टी का शिखर नेतृत्व लगातार तमिलनाडु पर अपना ध्यान फोकस किए हुए है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह की दक्षिण भारत की लगातार जारी चुनावी और सामान्य यात्राएं इन्हीं कोशिशों का उदाहरण है। तमिलनाडु में चुनाव बीत चुके हैं। राज्य के चुनाव नतीजों को लेकर अटकलबाजी और दावे-प्रतिदावों का दौर जारी है।

तमिलनाडु में मौजूदा सत्ताधारी डीएमके का मोर्चा बढ़त की उम्मीदे पाले हुए है तो बीजेपी इस बार बड़ी सेंध लगाने का दावा कर रही है। बीजेपी के दावे की वजह है, प्रधानमंत्री की सभाओं में उमड़ती रही भीड़। जिसे बढ़ाने में अमित शाह अपनी ओर से जोर देते रहे। लोकसभा सीटों के लिहाज से दक्षिण भारत के सबसे बड़े राज्य तमिलनाडु में 2019 के आम चुनावों में भी अमित शाह ने पूरा जोर लगाया था। फिर भी पार्टी को 2014 के साढ़े पांच प्रतिशत के मुकाबले महज 3.6 फीसद वोट से ही संतोष करना पड़ा था। राज्य में इस बार चुनाव हो चुका है। जिस तरह मोदी और शाह की जोड़ी ने इस बार राज्य में जोर लगाया, इसकी वजह से इस बार पार्टी की उम्मीदें बढ़ी हुई हैं। इसकी वजह है पार्टी की अरसा पहले से जारी तैयारी और तमिलनाडु में तेज-तर्रार और युवा अन्नामलाई के हाथ में पार्टी की कमान। अन्ना मलाई की सभाओं में उमड़ती रही भीड़ पार्टी की उम्मीदों को परवान चढ़ाने में मददगार बनती रही। अन्ना मलाई ने सात महीने तक 'एन मन, एन मक्कल' नाम से राज्यव्यापी यात्रा की, जिसमें खूब भीड़ जुटी। इस यात्रा की बीजेपी हलके में महत्ता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इसका समापन खुद प्रधानमंत्री मोदी ने किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी अन्ना मलाई का नाम अपनी सभाओं में खूब लेते हैं। अन्ना मलाई को उस कोयंबटूर सीट से मैदान में उतारा गया है, जिस पर 1998 और 1999 में पार्टी का कब्जा रहा। उस वक्त इस सीट की नुमाइंदगी करने वाले सीपी राधाकृष्णन इन दिनों झारखंड के राज्यपाल हैं। उनके जिम्मे तेलंगाना के राज्यपाल और पुदुचेरी के उपराज्यपाल का चार्ज भी है। जब सीपी राधाकृष्णन कोयंबटूर से सांसद चुने गए थे, तब वे 41 साल के युवा थे। यह संयोग है कि कुछ और कि अन्ना मलाई इन दिनों चालीस की उम्र पूरी करने वाले हैं। यानी अगर कोयंबटूर से वे जीतते हैं तो वे भी सीपी राधाकृष्णन की तरह युवा ही होंगे।

भारतीय जनता पार्टी की शिखर यात्रा की ओर जब हम देखते हैं तो पता चलता है कि उसने जिस राज्य में भी पैर जमाया, वहां वह पहले छोटे भाई की भूमिका में रही। बाद में वह अपना प्रभाव बढ़ाते हुए बड़े भाई की भूमिका में आ जाती है और मौका मिलते ही शिखर पर पहुंच जाती है। दो चुनाव पहले तक बीजेपी हरियाणा और पश्चिम बंगाल में इंडियन नेशनल लोकदल और तृणमूल कांग्रेस के छोटे भाई की भूमिका में रही। बाद में उसने प्रभाव बढ़ाया। अब हालत यह है कि हरियाणा में इंडियन नेशनल लोकदल अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है तो तृणमूल कांग्रेस उसकी चुनौती से पार पाने का उपाय खोज रही है। कुछ ऐसी ही स्थिति महाराष्ट्र में रही। पहले वह शिवसेना की बी टीम की तरह काम करती रही और पिछले कुछ चुनावों से वह पहले नंबर पर आ गई है। पंजाब में इसी तरह वह 1997 से लगातार शिरोमणि अकाली दल की बी टीम रही और इस बार उसने खुद को अकेले मैदार में उतार दिया है। कुछ इसी अंदाज में पार्टी तमिलनाडु में भी 1998 में डीएमके के साथ रही तो 1999 में एडीआईएमके की जूनियर पार्टनर बनी। 2014 तक वह अन्ना द्रमुक के साथ रही, लेकिन अब वह तकरीबन अकेले दम पर आगे आ रही है।

हाल के दिनों में पार्टी तार्किक रणनीति के साथ मैदान में उतरती रही है। उसके वायदों और शासन के तरीके पर सवाल जरूर उठ सकते हैं, लेकिन रणनीतिक कदम के लिए उसकी प्रशंसा करनी होगी। प्रश्न प्रदेश बने तमिलनाडु को हल करने के लिए पार्टी ने अरसा पहले काम शुरू कर दिया था। केंद्रीय सत्ता संभालने के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने एक कार्यक्रम शुरू कराया, एक भारत, श्रेष्ठ भारत। इसके जरिए राज्यों को उनके पारंपरिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक रिश्तों के साथ जोड़ना शुरू किया। इसके तहत तमिलनाडु का काशी से संगम शुरू हुआ। काशी भगवान भोलेनाथ की नगरी है और तमिलनाडु में शैव परंपरा को मानने वालों की अच्छी-खासी संख्या है। महाशिवरात्रि के वक्त काशी में तमिलनाडु, आंध्र और कर्नाटक के यात्रियों की बाढ़ रहती है। काशी और तमिलनाडु के करीबी रिश्तों के जरिए प्रधानमंत्री मोदी ने तमिल दिलों में उतरने की कोशिश साल 2022 में तेज की। काशी-तमिल संगमन इसकी अगली कड़ी के रूप में सामने आया। इसके बाद प्रधानमंत्री ने तमिलनाडु में विकास योजनाओं की तेजी लाने की कोशिश की। अटल बिहारी वाजपेयी सरकार द्वारा शुरू की गई स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना को पूरा करने का आश्वासन के साथ ही मछुआरों के कल्याण पर काम तेज हुए। इसके साथ ही प्रधानमंत्री ने तमिलनाडु में रोड शो किए।

तमिलनाडु ऐसा राज्य है, जहां की 87 फीसद आबादी हिंदू है। इसके बावजूद राज्य के मुख्यमंत्री स्टालिन के बेटे और राज्य सरकार में मंत्री उदयनिधि मारन ने सनातन धर्म पर हमला बोला। भारतीय जनता पार्टी को इस बयान ने मौका दे दिया। जिसके खिलाफ ना सिर्फ प्रधानमंत्री मुखर हुए, बल्कि अमित शाह ने भी हमला बोला। तमिलनाडु के लोग एक बात पर खूब जोर देते हैं कि उनके यहां धार्मिक कार्ड नहीं चलता। इसीलिए बीजेपी का हिंदुत्व का मुद्दा भी नहीं चलेगा। लेकिन प्रधानमंत्री के रोड शो में उमड़ी भीड़ हो या अमित शाह के कार्यक्रमों में जुटती भीड़, इस धारणा को कमजोर कर रही है। भारतीय जनता पार्टी की मौजूदा हिंदुत्ववादी राजनीति को दो दशक पहले तक उत्तर भारत में इतना तवज्जो नहीं मिलता था कि वह केंद्रीय सत्ता की अपने दम पर दावेदारी कर सके। लेकिन अब हालात बदल चुके हैं। कुछ इसी अंदाज में पार्टी तमिलनाडु में भी जोर लगाती रही। पार्टी तमिल सांस्कृतिक परंपराओं मसलन जलीकट्टू की बहाली का जहां समर्थन कर रही है, वहीं वह तमिल मार्का सनातन की प्रतिष्ठा पर भी जोर दे रही है। पार्टी ने पीएमके और टीएमसी (एस) जैसी कुछ छोटी पार्टियों के साथ जातीय गणित भी साधने की कोशिश की है। इन कोशिशों से उपजी आस ही है कि पार्टी इस बार राज्य की 23 सीटों पर चुनाव लड़ रही है, जबकि बाकी 16 सीटें अपने सहयोगियों के लिए छोड़ दी है।

बीजेपी की कोशिशों के बावजूद हाल ही में आई एक सर्वे रिपोर्ट ने पार्टी को एक भी सीट नहीं दिया। हालांकि सर्वे करने वाली एजेंसी भी मान रही है कि राज्य में बीजेपी का वोट बैंक बढ़ने जा रहा है। वैसे याद किया जाना चाहिए कि मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव में सर्वे एजेंसियों ने बीजेपी की जीत की उम्मीद नहीं के बराबर जताई थी। लेकिन जब नतीजे आए तो सर्वे एजेंसियों के नतीजों के उलट थे। भारतीय जनता पार्टी ठीक उसी अंदाज में तमिलनाडु से भी उम्मीद लगाए हुए है।

दक्षिण भारत में लोकसभा की 132 सीटें हैं, जिनमें सिर्फ 29 सीटें ही बीजेपी के पास हैं। उनमें से सबसे ज्यादा 25 सीटें कर्नाटक की हैं, जबकि चार तेलंगाना की। पार्टी इस बार भी कर्नाटक में बेहतर करते नजर आ रही है। तेलंगाना में भी वह मुकाबले में है। इसके बाद उसका सारा ध्यान तमिलनाडु पर ही है। इसलिए वह मछुआरों, महिलाओं और युवाओं पर जहां उम्मीद लगाए बैठी है, वहीं पार्टी को एआईडीएमके की कमजोरी से विपक्षी खेमे में उपजे शून्य को भरने की भी आस है। पार्टी को कितनी सफलता मिलती है, यह तो चार जून को पता चलेगा। लेकिन इतना तय है कि तमिलनाडु की राजनीति में बड़े भाई की भूमिका की ओर भारतीय जनता पार्टी ने कदम बढ़ा दिया है।

# दिल्ली मेयर और उपमहापौर चुनाव के लिए आयोग की मिली अनुमति, फिर भी चल सकते हैं चुनाव; जानिए कहां फंसा पेंच

*लोकसभा चुनाव के बीच तय हुए एमसीडी में महापौर व उप महापौर के चुनाव को लेकर चुनाव आयोग को कोई आपत्ति नहीं है। उसने इसके लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) भी जारी कर दी है बावजूद इसके महापौर और उप महापौर के चुनाव टल सकते हैं। क्योंकि पीठासीन अधिकारी के नियुक्ति पर पेंच फंसा हुआ है।*

परिवहन विशेष न्यूज

**नई दिल्ली।** लोकसभा चुनाव के बीच तय हुए एमसीडी में महापौर व उप महापौर के चुनाव को लेकर चुनाव आयोग को कोई आपत्ति नहीं है। उसने इसके लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) भी जारी कर दी है बावजूद इसके महापौर और उप महापौर के चुनाव टल सकते हैं। क्योंकि पीठासीन अधिकारी के नियुक्ति पर पेंच फंसा हुआ है।

आबकारी घोटाले में जेल में बंद मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के हस्ताक्षर बिना ही उपराज्यपाल को पीठासीन अधिकारी के नियुक्ति की फाइल भेजी गई है। अब, सबकी निगाहें उपराज्यपाल के निर्णय पर है कि वह बिना मुख्यमंत्री के हस्ताक्षर वाली फाइल पर क्या निर्णय लेते हैं? हालांकि राजनिवास सूत्रों के मुताबिक बिना सीएम के हस्ताक्षर के पीठासीन अधिकारी की नियुक्ति मुश्किल है। ऐसे में संभव है कि 26 अप्रैल को निर्धारित तारीख पर महापौर के चुनाव न हो।

**एलजी को लेना होगा निर्णय**

उल्लेखनीय है कि महापौर चुनाव की बैठक को लेकर एमसीडी ने जो एजेंडा वितरित किया था, उसमें पीठासीन अधिकारी की नियुक्ति और चुनाव आयोग की अनुमति की दो शर्तें लगाई हैं। उपराज्यपाल को इस मामले पर बृहस्पतिवार तक निर्णय लेना होगा। अन्यथा चुनाव को टालना पड़ेगा।

**पीठासीन अधिकारी की नियुक्ति न होने से...**

इससे पहले वर्ष 2020 व 2021 में कोरोना के चलते भी अप्रैल माह में महापौर के चुनाव नहीं हुए थे। जून में इस प्रक्रिया को पूरा कराया गया था। पीठासीन अधिकारी की नियुक्ति न होने से दिल्ली में संवैधानिक संकट के बादल मंडराने लगे हैं।

**आचार संहिता लागू होने की वजह से जरूरी थी चुनाव आयोग की इजाजत**

दिल्ली में आम चुनाव को लेकर आदर्श आचार संहिता लागू है, इस वजह से महापौर के चुनाव के लिए चुनाव आयोग की इजाजत जरूरी हो गई थी। नियमानुसार हर वर्ष अप्रैल माह में होने वाली निगम की पहली बैठक में महापौर व उप महापौर का चुनाव होता है। ऐसे में निगम ने प्रत्याशियों के नामांकन की प्रक्रिया को 18 अप्रैल को पूरा कर लिया था। अब चुनाव आयोग के नोटिस से चुनाव की उम्मीद बढ़ गई है, लेकिन पेंच पीठासीन अधिकारी के नियुक्ति तक अटकी रहेगी।

**निर्वाचित पार्षदों में से कोई एक होता है पीठासीन अधिकारी नियुक्त**

एमसीडी में हर वर्ष महापौर चुनाव होता है। उसके लिए निर्वाचित पार्षदों में से किसी एक को उपराज्यपाल द्वारा पीठासीन अधिकारी नियुक्त किया जाता है। बस शर्त यह होती है कि जो पार्षद पीठासीन अधिकारी होगा, वह प्रत्याशी नहीं होना चाहिए। एमसीडी में बैठक से 72 घंटे पहले तक एजेंडा वितरित होने का नियम है। इसलिए 26 अप्रैल की तय बैठक के लिए निगम ने 23 अप्रैल को एजेंडा वितरित करना शुरू कर दिया है।

**14 विधायकों का हुआ निगम में मनोनयन**

एमसीडी में हर वर्ष 14 विधायकों के मनोनयन वाली प्रक्रिया के तहत 14 विधायकों को सदस्य निगम के लिए मनोनीत कर दिया गया है। इन 14 विधायकों में से आप के 13 तो भाजपा के एक विधायक ओम प्रकाश शर्मा को सदस्य मनोनीत किया गया है। इससे पहले भाजपा के विधायक

अनिल बाजपेयी निगम में सदस्य थे।

दिल्ली विधानसभा ने आप के जिन 13 विधायकों को निगम सदस्य के लिए मनोनीत किया है उसमें राजौरी गार्डन से विधायक धनवती चंदेला, बादली से अजेश यादव, शालीमार बाग से बंदना कुमारी, तिमारपुर से दिलीप पांडेय, मुस्तफाबाद से हाजी युनुस, आदर्श नगर से पवन शर्मा, जंगपुरा से प्रवीण कुमार, त्रिनगर से प्रीति तोमर, मोती नगर से शिव चरण गोयल, सदर बाजार से सोमदत्त और करोल बाग से विशेष रवि का नाम शामिल है। पूर्व के 14 विधायकों का निगम में कार्यकाल 31 मार्च को खत्म हो गया था। इन 14 विधायकों को महापौर और उप महापौर चुनाव में मतदान का अधिकार होता है।

# तिहाड़ के मुलाकाती जंगले में हुई केजरीवाल और सौरभ की मुलाकात, शीशे की दीवार और माइक्रोफोन से क्या हुई बात

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली सरकार के मंत्री सौरभ भारद्वाज ने बुधवार को तिहाड़ जेल में बंद मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से मुलाकात की। सौरभ भारद्वाज ने मुख्यमंत्री से मुलाकात के बाद कहा कि चर्चा बहुत हुई पर यहां नहीं बता सकता। सौरभ भारद्वाज ने जेल में बंद मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से मुलाकात के बाद कहा कि दिल्ली की जनता को चिंता करने की जरूरत नहीं है

**नई दिल्ली।** दिल्ली सरकार के मंत्री सौरभ भारद्वाज ने बुधवार को तिहाड़ जेल में बंद मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से मुलाकात की। आज आतिशी को केजरीवाल से मिलना था, लेकिन उनकी बैठक को रद्द कर दिया गया। सौरभ भारद्वाज ने मुख्यमंत्री से मुलाकात के बाद कहा कि चर्चा बहुत हुई पर यहां नहीं बता सकता। सौरभ भारद्वाज ने जेल में बंद मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से मुलाकात के बाद कहा कि दिल्ली की जनता को चिंता करने की जरूरत नहीं है, मुख्यमंत्री ठीक हैं और मजबूत हैं। करीब आधे घंटे की चर्चा किस-किस मुद्दे पर बात हुई, इस पर उन्होंने कहा कि कई चर्चाएं हुईं, लेकिन इसे सभी के सामने नहीं कहा जा सकता है। दोनों के बीच भेंट मुलाकाती जंगले पर हुई। यह बात माइक्रोफोन के माध्यम से हुई।

**संजय सिंह ने तिहाड़ प्रशासन पर लगाए गंभीर आरोप**

संजय सिंह ने बुधवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि ऐसा व्यवहार ब्रिटिश शासन में भी देखने को नहीं मिला था। फिलहाल इस मामले में तिहाड़ जेल

प्रशासन की कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है। संजय सिंह ने कहा कि दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सौरभ भारद्वाज और आतिशी को तिहाड़ जेल में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से मिलना था, लेकिन आतिशी की मुलाकात की कल पुष्टि नहीं हुई थी। शिक्षा मंत्री आतिशी ने मुलाकात के लिए आवेदन किया था, लेकिन आखिरी समय में उनकी केजरीवाल से मीटिंग को रद्द कर दिया गया।

# दिल्ली में कांग्रेस को बड़ा झटका, शीला सरकार में 15 साल मंत्री रहे राजकुमार चौहान ने पार्टी से दिया इस्तीफा

लोकसभा चुनाव से पहले दिल्ली कांग्रेस में असंतोष खुलकर सामने आ रहा है। कांग्रेस सरकार में 15 साल मंत्री रहे राजकुमार चौहान ने बुधवार को पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। वह उत्तर पश्चिमी दिल्ली से टिकट के दावेदार थे लेकिन टिकट नहीं मिलने से आहत थे। उन्होंने प्रदेश प्रभारी दीपक बाबरिया के व्यवहार को इस्तीफे का मुख्य कारण बताया है।

**नई दिल्ली।** राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में लोकसभा चुनाव के लिए मतदान होने से पहले कांग्रेस का बड़ा झटका लगा है। शीला दीक्षित की कांग्रेस सरकार में 15 साल मंत्री रहे राजकुमार चौहान ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। वह उत्तर पश्चिमी दिल्ली से टिकट के दावेदार थे, लेकिन टिकट नहीं मिलने से आहत थे। उन्होंने प्रदेश प्रभारी दीपक बाबरिया के व्यवहार को इस्तीफे का मुख्य कारण बताया है। कांग्रेस ने उत्तर पश्चिमी दिल्ली से उदित राज को चुनावी मैदान में उतारा है।

**राजकुमार चौहान के खिलाफ की गई थी शिकायत:** उत्तर-पश्चिमी दिल्ली से कांग्रेस प्रत्याशी उदित राज का विरोध कर रहे पूर्व मंत्री राजकुमार चौहान के विरुद्ध शिकायत की गई। नरेंद्र नाथ की अध्यक्षता में मंगलवार को प्रदेश कांग्रेस की अनुशासनात्मक समिति ने पार्टी कार्यालय में एक बैठक की थी। जहां इस शिकायत पर कार्रवाई का निर्णय सर्वसम्मति एआइसीसी पर छोड़ दिया गया। पूर्व मंत्री राजकुमार चौहान पर उदित राज के खिलाफ गलत बोलने का आरोप लगा था।

**आप के साथ गठबंधन में चुनाव लड़ रही है कांग्रेस :** मालूम हो कि इस बार दिल्ली की सभी सात सीटों के लिए आम आदमी पार्टी और कांग्रेस सीट शेयरिंग फॉर्मूला के तहत गठबंधन में चुनाव लड़ रही है। इसमें आप ने चार और कांग्रेस ने तीन लोकसभा सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारे हैं। उल्लेखनीय है कि कांग्रेस ने लोकसभा चुनाव के लिए तीन सीटों में से उत्तर-पूर्वी दिल्ली से कन्हैया कुमार, चांदनी चौक से जेपी अग्रवाल और उत्तर पश्चिमी दिल्ली से उदित राज को प्रत्याशी बनाया है।

**छठे चरण में 25 मई को होगा मतदान :** दिल्ली की सात लोकसभा सीटों पर छठे चरण में 25 मई को वोटिंग होगी, जबकि मतगणना 4 जून को होगी।

# दिल्ली की अदालत ने सीएम केजरीवाल को जवाब दाखिल करने के लिए दिया समय, जानिए क्या है मामला

दिल्ली की एक अदालत ने बुधवार को मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को एक्साइज पॉलिसी मामले में ईडी के जवाब पर हलफनामा दायर करने के लिए समय दिया। दरअसल ईडी ने मुख्यमंत्री केजरीवाल की दो याचिकाओं पर एजेंसी के समन से कथित तौर पर बचने के आदेश के खिलाफ पुनरीक्षण की मांग की है। केजरीवाल को ईडी ने 21 मार्च को गिरफ्तार किया था। वह फिलहाल न्यायिक हिरासत में हैं।

**नई दिल्ली।** दिल्ली की एक अदालत ने बुधवार को मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को एक्साइज पॉलिसी मामले में ईडी के जवाब पर हलफनामा दायर करने के लिए समय दिया। दरअसल, ईडी ने मुख्यमंत्री केजरीवाल की दो याचिकाओं पर एजेंसी के समन से कथित तौर पर बचने के आदेश के खिलाफ पुनरीक्षण की मांग की है। केजरीवाल ने मामले में एजेंसी के समन से कथित तौर पर बचने के लिए प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा दायर एक शिकायत पर उन्हें तलब करने वाले मजिस्ट्रेट अदालत के आदेश के खिलाफ विशेष अदालत का दरवाजा खटखटाया था। विशेष न्यायाधीश राकेश सयाल ने बुधवार को केजरीवाल को आप संयोजक की अपील पर ईडी के जवाब पर जवाब दाखिल करने के लिए दो सप्ताह का समय दिया। अदालत का यह निर्देश केजरीवाल के वकीलों द्वारा यह कहते हुए समय मांगने के बाद आया कि उन्हें उनसे निर्देश नहीं मिल सकते, क्योंकि उन्हें मामले में ईडी ने गिरफ्तार कर लिया है। अदालत अब याचिका पर 14 मई को सुनवाई करेगी। केजरीवाल को ईडी ने 21 मार्च को गिरफ्तार किया था। वह फिलहाल न्यायिक हिरासत में हैं।

# मुख्यमंत्री केजरीवाल के साथ आतंकियों से भी बदतर किया जा व्यवहार, संजय सिंह ने तिहाड़ जेल प्रशासन पर लगाए गंभीर आरोप

आम आदमी पार्टी राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने दिल्ली की मंत्री आतिशी की मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से आखिरी समय पर मुलाकात रद्द करने का आरोप लगाया है। संजय सिंह ने बुधवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि ऐसा व्यवहार ब्रिटिश शासन में भी देखने को नहीं मिला था। फिलहाल इस मामले में तिहाड़ जेल प्रशासन की कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है।

**नई दिल्ली।** आम आदमी पार्टी (AAP) राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने दिल्ली की मंत्री आतिशी की मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से आखिरी समय पर मुलाकात रद्द करने का आरोप लगाया है। संजय सिंह ने बुधवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि ऐसा व्यवहार ब्रिटिश शासन में भी देखने को नहीं मिला था। फिलहाल इस मामले में तिहाड़ जेल प्रशासन की कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है।

संजय सिंह ने कहा कि दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सौरभ भारद्वाज और आतिशी को तिहाड़ जेल में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से मिलना था, लेकिन आतिशी की मुलाकात की कल पुष्टि नहीं हुई थी। शिक्षा मंत्री आतिशी ने मुलाकात के लिए आवेदन किया था, लेकिन आखिरी समय में उनकी केजरीवाल से मीटिंग को रद्द कर दिया गया।

**संदीप पाठक की बैठक भी रद्द की**

संजय सिंह ने कहा कि आतिशी की बैठक रद्द होने के बाद आप के महासचिव (संगठन) संदीप पाठक को केजरीवाल के साथ मुलाकात करनी थी, लेकिन सुबह लगभग साढ़े 9 बजे संदीप पाठक की भी मीटिंग रद्द कर दी गई।

**पत्नी से भी मिलना करा सकते हैं बंद**

संजय सिंह ने मीटिंग रद्द करने के पीछे वजहों पर सवाल उठाए हैं। साथ ही उन्होंने आशंका जताई है कि भविष्य में सीएम केजरीवाल से उनकी पत्नी को भी मिलने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

**ब्रिटिश शासन में भी नहीं था ऐसा व्यवहार**

उन्होंने आगे कहा कि एक सांसद और एक मंत्री की मुख्यमंत्री केजरीवाल के साथ बैठक रद्द कर दी। तिहाड़ प्रशासन ने पहले मेरी भी केजरीवाल के साथ मीटिंग रद्द कर दी थी। कल आप उनकी पत्नी के साथ बैठक रद्द कर सकते हैं। यहां तक कि ब्रिटिश शासन में भी इस तरह का व्यवहार नहीं देखा था।

संजय सिंह ने कहा कि वह इस संबंध में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना को पत्र लिखेंगे। उन्होंने कहा कि अरविंद केजरीवाल के साथ आतंकियों और कट्टर अपराधियों से भी बदतर व्यवहार किया जा रहा है। उन्हें अपने वकीलों और उनके परिवारों से व्यक्तिगत रूप से मिलने की अनुमति है, लेकिन तिहाड़ प्रशासन उनकी मुलाकातों को रोक रहे हैं।

**सौरभ भारद्वाज की हुई मुलाकात**

आप नेता ने कहा कि बैठक रद्द करने का कोई कारण नहीं बताया गया। इससे पहले दिन में सौरभ भारद्वाज ने केजरीवाल के साथ 30 मिनट लंबी बैठक की।

# चुनाव के चलते नोएडा में बदला रहेगा ट्रैफिक, इन सड़कों पर एंट्री रहेगी बैन

**गौतमबुद्ध नगर में लोकसभा चुनाव के लिए 26 अप्रैल को मतदान होगा। भारी मध्यम हल्के मालवाहक वाहन 25 अप्रैल बृहस्पतिवार यानी कल सुबह सात बजे से रात दस बजे तक और 26 अप्रैल मतदान के दिन यानी शुक्रवार को सुबह सात बजे से रात 12 बजे तक मालवाहक वाहनों का आवागमन प्रतिबंधित रहेगा। इसके साथ ही कुछ मार्गों पर डायवर्जन किया जाएगा।**

परिवहन विशेष न्यूज

**नोएडा।** आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर फेज-2 स्थित स्ट्रांग रूम के आसपास ट्रैफिक डायवर्जन लागू किया जाएगा। डीसीपी ट्रैफिक अनिल यादव का कहना है कि फेज-2 फूल मंडी से 25 अप्रैल को पोलिंग पार्टियां वाहनों से रवाना होंगी।

26 अप्रैल को मतदान के उपरांत पोलिंग पार्टी द्वारा ईवीएम फूल मंडी में जमा की जाएगी। सुचारू यातायात व्यवस्था उपलब्ध कराए जाने के लिए फूल मंडी के आसपास की मुख्य एवं आंतरिक मार्गों पर डायवर्जन किया जाएगा।

**26 अप्रैल की रात 12 बजे तक रहेगा डायवर्जन**

भारी, मध्यम, हल्के मालवाहक वाहन 25 अप्रैल बृहस्पतिवार यानी कल सुबह सात बजे से रात दस बजे तक और 26 अप्रैल मतदान के दिन यानी शुक्रवार को सुबह सात बजे से रात 12 बजे तक मालवाहक वाहनों का आवागमन प्रतिबंधित रहेगा।

फूल मंडी परिसर के आसपास आंतरिक मार्गों पर निर्वाचन से संबंधित वाहनों को छोड़कर अन्य समस्त प्रकार का यातायात प्रतिबंधित रहेगा। फूल मंडी तिराहा से सेक्टर-88 कैंट आरओ चौक तक फूल मंडी के गेट नंबर-3, 4 व 2 के सामने मार्ग बंद रहेगा। मार्ग से केवल उच्च अधिकारी के वाहनों का आवागमन रहेगा।

यातायात डायवर्जन के दौरान इमरजेंसी वाहनों को सकुशल पास कराया जाएगा। असुविधा से बचने के लिए वैकल्पिक मार्गों का प्रयोग करें। यातायात असुविधा उत्पन्न होने पर यातायात हेल्पलाइन नंबर-9971009001 पर संपर्क कर सकते है।

**इन मार्गों पर रहेगा प्रतिबंध**

सूरजपुर की ओर से कुलेसरा होकर फेज-2 नोएडा की ओर आने वाले डीएससी रोड पर समस्त प्रकार के मालवाहक चालकों का आवागमन प्रतिबंधित रहेगा।

भंगेल, जेपी फ्लाईओवर से गेझा तिराहे, एनएसइजेड होकर सूरजपुर की ओर जाने वाले डीएससी मार्ग पर समस्त प्रकार के मालवाहक वाहनों का आवागमन प्रतिबंधित रहेगा।

पंचशील, एल्डिको सेक्टर-93 की ओर से सेक्टर-83 याकूबपुर, सेक्टर-87 नयागांव, सेक्टर-88 कैंट आरओ चौक, एनएसइजेड, फेज-2 होकर सूरजपुर की ओर जाने वाले मार्ग पर समस्त प्रकार के मालवाहक वाहनों का आवागमन प्रतिबंधित रहेगा।

सोहरखा, सेक्टर-78 की ओर से ककराला फेज-2 होकर डीएससी मार्ग की ओर आने वाले मार्ग पर समस्त प्रकार के मालवाहक वाहनों का आवागमन प्रतिबंधित रहेगा।

**इन मार्गों पर रहेगा ट्रैफिक डायवर्जन**

सूरजपुर से कुलेसरा डीएससी रोड होकर फेज-2 नोएडा की ओर जाने वाले समस्त प्रकार के मालवाहक वाहन कच्ची सड़क तिराहा से दाहिने टर्न कर इंडस्ट्रियल एरिया मार्ग ईकोटेक-3

होकर अपने गंतव्य को जा सकेंगे।

भंगेल, जेपी फ्लाई ओवर से गेझा तिराहे होकर सूरजपुर की ओर डीएससी मार्ग पर जाने वाले समस्त प्रकार के मालवाहक वाहन गेझा तिराहा से दाहिने टर्न, यूटर्न कर नोएडा-ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेस-वे, परी चौक होकर अपने गंतव्य को जा सकेंगे।

फूल मंडी तिराहा से सेक्टर-88 चौक तक मार्ग बंद रहेगा। मार्ग से जाने वाला यातायात कोतवाली फेज-2 तिराहा से लावा कंपनी तिराहा होकर अपने गंतव्य को जा सकेगा।

पंचशील, एल्डिको सेक्टर-93 की ओर से सेक्टर-83 याकूबपुर, सेक्टर-87 नयागांव, सेक्टर-88 कैंट आरओ चौक, एनएसइजेड, फेज-2 होकर सूरजपुर की ओर जाने वाले समस्त प्रकार के मालवाहक वाहन पंचशील अंडरपास, सेक्टर-93 से नोएडा-ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेस-वे, परी चौक होकर अपने गंतव्य को जा सकेंगे।

सोहरखा, सेक्टर-78 से ककराला फेस-2 होकर डीएससी मार्ग की ओर जाने वाले समस्त प्रकार के मालवाहक वाहन पर्थला, किसान चौक, बिसरख होकर अपने गंतव्य को जा सकेंगे।

**ऐसी रहेगी पार्किंग व्यवस्था**

सेक्टर/जोनल मजिस्ट्रेट के वाहन फूल मंडी गेट नंबर-1 से प्रवेश कर फूल मंडी परिसर के अंदर गेट नंबर-2 के पास खाली मैदान/पार्क में बनी पार्किंग (पी-1) में पार्क होगें।

ईवीएम वितरण करने व जमा करने वाले स्ट्रांग रूम पर ड्यूटी में लगे कर्मियों के वाहन फूल मंडी गेट नंबर-1 से प्रवेश कर फूल मंडी परिसर में स्थित ब्लाक/दुकान संख्या सी-26 व बी-23 के सामने बने पक्के चबूतरे के मध्य बनी पार्किंग (पी-2) में पार्क होगें।

मीडियाकर्मियों के वाहन फूल मंडी के गेट नंबर 1 से प्रवेश कर गेट नंबर-2 के निकट दुकान संख्या सी-150 से सी-139 निकट फूल मंडी पुलिस चौकी तक पक्की सड़क पर बनी पार्किंग (पी-3) में वाहन पार्क कर सकेंगे।

निर्वाचन प्रक्रिया/ड्यूटी में लगे कर्मियों के मोटर साइकिल वाहन हेतु पार्किंग व्यवस्था मोटर साइकिल से आने वाले कर्मी फूल मंडी के गेट नंबर-1 से प्रवेश कर गेट नंबर-2 के निकट ब्लाक/दुकान संख्या सी-150 से सी-139/ फूलमंडी पुलिस चौकी तक कच्ची सडक निकट बाउंड्री वाल पर बनी पार्किंग (पी-4) में मोटर साइकिल पार्क कर सकेंगे।

## एक क्लिक पर मिलेगी यमुना प्राधिकरण के सेक्टरों से लेकर संपत्ति की जानकारी, घर बैठे देख सकेंगे लोकेशन

यमुना प्राधिकरण के सेक्टरों से लेकर संपत्ति की जानकारी के लिए अब लोगों को परेशान नहीं होना पड़ेगा। यह काम बस माउश के क्लिक से हो सकेगा। यमुना प्राधिकरण क्षेत्र में सेक्टरों के विकास से लेकर ढांचागत सुविधाओं को विकसित किया जा रहा है। प्राधिकरण नियोजित क्षेत्र की जानकारी ऑनलाइन करने की तैयारी कर रहा है। इसमें भूखंड ढांचागत सुविधाएं परियोजना आदि की जियो टैगिंग की जाएगी।

**ग्रेटर नोएडा।** यमुना प्राधिकरण के सेक्टरों से लेकर संपत्ति की जानकारी जल्द ही माउस के क्लिक पर उपलब्ध होगी। जियो टैगिंग के जरिये सड़क, बिजली लाइन से लेकर परियोजना की स्थिति और किसी भी भूखंड की लोकेशन की जानकारी मिल सकेगी। प्राधिकरण नक्शा व ढांचागत सुविधाओं को ऑनलाइन करने जा रहा है। जानकारी ऑनलाइन करने की तैयारी यमुना प्राधिकरण क्षेत्र में सेक्टरों के विकास से लेकर ढांचागत सुविधाओं को विकसित किया जा रहा है। प्राधिकरण में संपत्ति के खरीदारों को मौके पर जाकर ही उसकी स्थिति की वास्तविक जानकारी मिल पाती है। इसमें अधिक समय लगता है। जो लोग बाहर रहते हैं, उन्हें प्राधिकरण क्षेत्र की जानकारी लेने के लिए काफी दिक्कत होती है। लोगों की सुविधा के लिए प्राधिकरण नियोजित क्षेत्र की जानकारी ऑनलाइन करने की तैयारी कर रहा है। इसमें भूखंड, ढांचागत सुविधाएं, परियोजना आदि की जियो टैगिंग की जाएगी।

माउस के क्लिक पर मिलेगी सारी डिटेल प्राधिकरण क्षेत्र में संपत्ति खरीदने वाले, आवंटी से लेकर निवेशक माउस के क्लिक पर जानकारी हासिल कर सकें। उन्हें क्षेत्र में जाकर भौतिक स्थिति जानने की जरूरत नहीं रहेगी। वहीं प्राधिकरण को इसका एक फायदा कालोनाइजर, भूमाफिया पर निगरानी के रूप में भी होगा। प्राधिकरण क्षेत्र में नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के बाद से कालोनाइजर व भूमाफिया की सक्रियता बढ़ी है। अवैध कॉलोनी काटी जा रही है।

# गौतमबुद्ध नगर में इन दिग्गजों की प्रतिष्ठा दांव पर, प्रत्याशियों को सता रहा हार का डर

**गौतमबुद्ध नगर लोकसभा सीट पर 26 अप्रैल को मतदान होना है। इस सीट पर चुनाव में सभी राजनीतिक दलों के दिग्गजों की प्रतिष्ठा दांव पर लगी है। नेताओं के लिए अपने बिरादरी के वोट बैंक को पार्टी प्रत्याशी के खाते में डलवाने की चुनौती है। अपने गोत्र और बिरादरी में कम वोट मिलने से दिग्गजों की प्रतिष्ठा पर कैंची चलेगी। इसी से भविष्य में उनका पार्टी में कद तय होगा।**

परिवहन विशेष न्यूज

**ग्रेटर नोएडा।** गौतमबुद्ध नगर के चुनाव मैदान में उतरे प्रत्याशियों को जहां एक तरफ हार का डर सता रहा है, वहीं पार्टियों के दिग्गजों की प्रतिष्ठा भी दांव पर लगी है। दिग्गज अपनी-अपनी बिरादरी और गोत्र बहुल क्षेत्र में अपनी पार्टी के प्रत्याशी को कितना वोट दिलाने में कामयाब होते हैं, यह उनके लिए चुनौती है।

इसी से भविष्य में उनका पार्टी में कद तय होगा। जानकार बताते हैं कि पार्टियों का नेतृत्व भी इसकी मानीटरिंग कर रही है। वह इसकी रिपोर्ट हाईकमान को देंगे। चुनाव में कम वोट मिलने पर उसका खामियाजा दिग्गजों को भी भुगतना पड़ सकता है।

**नागर गोत्र के सपा की तरफ खिसकने का डर**

भाजपा के राष्ट्रीय सचिव व राज्यसभा सदस्य सुरेंद्र नागर और पश्चिमी उप्र के क्षेत्रीय अध्यक्ष सतेंद्र सिसोदिया भाजपा के स्टार प्रचारक हैं। गौतमबुद्ध नगर में दोनों की प्रतिष्ठा दांव पर है। सपा के प्रत्याशी डॉक्टर महेंद्र नागर भी नागर गोत्र से हैं। ऐसे में नागर गोत्र के सपा की तरफ खिसकने का डर भाजपा को है।

इसी वजह से सोमवार को सुरेंद्र नागर ने दुजाना गांव में नुक्कड़ सभा की। नागरों में कम वोट मिलते हैं तो भविष्य में सुरेंद्र नागर के पार्टी में कद पर असर पड़ेगा। दादरी विधायक तेजपाल नागर के लिए भी भाजपा को नागर गोत्र के वोट दिलवाना चुनौती होगी।

**गुर्जरों के कद्दावर नेता हैं नरेंद्र भाटी**

पूर्व मंत्री व विधान परिषद सदस्य नरेंद्र भाटी भी पश्चिमी उप्र के गुर्जरों के कद्दावर नेता हैं। भाटी गोत्र में उनका बड़ा प्रभाव रहता है। भाजपा प्रत्याशी डॉक्टर महेश शर्मा को गुर्जरों के वोट दिलाने के लिए उन्होंने दनकौर क्षेत्र में सोमवार को गुर्जरों की बड़ी जनसभा कराई।

गुर्जरों के वोटों के लिए भाजपा हाईकमान ने उन्हें गौतमबुद्ध नगर के साथ बुलंदशहर की भी जिम्मेदारी दी है। गुर्जरों के कितने वोट दोनों जगह नरेंद्र भाटी कितनी वोट दिलवा पाते हैं, इससे भविष्य में उनका भी कद तय होगा। गत विधानसभा चुनाव में नोएडा से भाजपा विधायक पंकज सिंह करीब 67 प्रतिशत वोट लेकर जीते थे।

भाजपा प्रत्याशी को अपने विधान सभा से इतने मत दिलवाना चुनौती बन गया है। नोएडा में सपा नेता सुनील चौधरी, जितेंद्र यादव, दीपक विज, राकेश यादव, महेंद्र यादव, वीर सिंह यादव आदि द्वारा अपनी जाति के साथ शहरी वोट दिलवाना चुनौती है।

**बसपा से प्रत्याशी हैं राजेंद्र सोलंकी**

बसपा महानगर अध्यक्ष नरेश उपाध्याय को अपनी जाति के साथ बसपा प्रत्याशी राजेंद्र सोलंकी को

नोएडा में वोट दिलवाना बड़ी चुनौती है। ठाकुरों में मजबूत पकड़ रखने वाले जेवर विधायक धीरेंद्र सिंह की प्रतिष्ठा भी दांव पर है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में ठाकुरों को साधने के लिए सतेंद्र सिसोदिया को क्षेत्रीय अध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गई थी।

माना जाता है साठा चौरासी व सहित ठाकुर बहुल गांवों में उनकी अच्छी पैठ है। ठाकुरों की नाराजगी के बीच रूठों को मनाकर धीरेंद्र सिंह और सतेंद्र सिसोदिया कितने वोट पार्टी प्रत्याशी महेश शर्मा को दिलवा पाते हैं, यह दोनों के लिए बड़ी चुनौती है। बसपा में पूर्व मंत्री करतार नागर की मजबूत पकड़ है।

पिछले लोकसभा चुनाव में पार्टी ने सतवीर नागर को मैदान में उतारा था। नागर समाज में दोनों की अच्छी पकड़ का परिणाम पिछले चुनाव में देखने को मिला था। सतवीर नागर ने लगभग पांच लाख वोट प्राप्त किए थे। यह देखना होगा कि दोनों पार्टी प्रत्याशी राजेंद्र सोलंकी के पक्ष में नागर समाज के वोट को साधने में करतार नागर व सतवीर नागर को कितनी सफलता मिलती है।

# अभिभावक छुट्टी मनाने न जाएं! नोएडा, ग्रेटर नोएडा में 27 अप्रैल को खुलेंगे सभी बोर्ड के स्कूल, आदेश जारी

परिवहन विशेष न्यूज

नोएडा स्कूल गौतमबुद्ध नगर में 26 अप्रैल यानी शुक्रवार को मतदान होना है। अभिभावक मतदान वाले दिन छुट्टी मनाने न जाएं इसके लिए नोएडा ग्रेटर नोएडा में 27 अप्रैल को सभी बोर्ड के स्कूल खुलेंगे। इसे लेकर जिला विद्यालय निरीक्षक डॉक्टर धर्मवीर सिंह की ओर से आदेश जारी किया गया है। यह आदेश सभी बोर्ड के स्कूलों पर लागू होगा।

**ग्रेटर नोएडा।** लोकसभा चुनाव के दूसरे चरण के तहत गौतमबुद्ध नगर में 26 अप्रैल यानी शुक्रवार को मतदान होना है। 25 अप्रैल को नोएडा की फूल मंडी से पोलिंग पार्टियां को रवाना किया जायेगा।

**26 लाख 75 हजार से अधिक मतदाता करेंगे सांसद का चुनाव**

26 अप्रैल को सुबह छह बजे से शाम छह बजे तक मतदान होगा। मतदान में 26 लाख 75 हजार से अधिक मतदाता सांसद का चुनाव करेंगे। शुक्रवार को चुनाव होने के कारण सवेतनिक अवकाश प्रशासन की ओर से घोषित किया गया है।

**पोलिंग बूथ वाले स्कूलों में 25 अप्रैल को अवकाश**

जिला विद्यालय निरीक्षक डॉक्टर धर्मवीर सिंह की ओर से आदेश जारी किया गया है कि 27 अप्रैल को सीबीएसई, आईसीएसई, यूपी बोर्ड के अलावा अन्य बोर्ड के स्कूल खुलेंगे। डीआईओएस कार्यालय की ओर से यह आदेश इस लिए जारी किया गया है कि अभिभावक छुट्टी मनाने के लिए न चले जाएं, जिससे मतदान प्रतिशत पर असर पड़े।

**25 और 26 को अधिकतर स्कूलों में होगी ऑनलाइन क्लास**

जिन स्कूलों में पोलिंग बूथ बनाए गए हैं। उन्हीं स्कूलों में 25 को अवकाश घोषित किया गया है। हालांकि अधिकतर स्कूलों ने 25 और 26 अप्रैल को ऑनलाइन क्लास चलाने का निर्णय लिया है। डीआइओएस डॉक्टर धर्मवीर सिंह ने बताया कि 27 अप्रैल को सभी बोर्ड के स्कूल खुलेंगे। स्कूलों को आदेश की प्रति भेज दी गई है।

## गाजियाबाद में फंदे पर लटका मिला 10वीं के छात्र का शव, नहीं मिला कोई सुसाइड नोट

कौशांबी थाना क्षेत्र के भोवापुर में बुधवार दोपहर को 10वीं कक्षा के छात्र का शव फंदे से लटका मिला। अस्पताल से पुलिस को सूचना मिली। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। आत्महत्या के कारण की जांच की जा रही है। पुलिस के अनुसार बुधवार दोपहर पौने तीन बजे थाने पर सूचना मिली कि एक किशोर स्वजन लेकर आए हैं।

**गाजियाबाद।** कौशांबी थाना क्षेत्र के भोवापुर में बुधवार दोपहर को 10वीं कक्षा के छात्र का शव फंदे से लटका मिला। अस्पताल से पुलिस को सूचना मिली। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। आत्महत्या के कारण की जांच की जा रही है। पुलिस के अनुसार, बुधवार दोपहर पौने तीन बजे थाने पर सूचना मिली कि एक किशोर स्वजन लेकर आए हैं। पुलिस ने जांच की तो पता चला कि 17 वर्षीय किशोर घर पर अकेले था। दोपहर को छोटी बहन घर आई तो दरवाजा बंद था। काफी देर तक खटखटाने के बाद भी नहीं खोला तो पड़ोसियों को बुलाया गया। दरवाजा तोड़कर अंदर गए तो देखा कि किशोर का शव फंदे पर लटका हुआ था। फंदे से उतारकर अस्पताल ले जाया गया, जहा डॉक्टर ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

# वोट की स्याही दिखाई तो मिलेगा बच्चों को ग्रेस मार्क्स, बस अभिभावकों को करना होगा ये काम

परिवहन विशेष न्यूज

26 अप्रैल को होने वाले लोकसभा चुनाव में मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए जिला प्रशासन की ओर से कई प्रयास किए जा रहे हैं। शहर के 200 से अधिक स्कूलों के प्रधानाचार्यों के साथ मंगलवार को जिला निर्वाचन अधिकारी मनीष कुमार वर्मा और जिला विद्यालय निरीक्षक डॉक्टर धर्मवीर सिंह ने ऑनलाइन बैठक की थी। बैठक के दौरान कई स्कूलों के प्रधानाचार्यों ने मतदान बढ़ाने के लिए कई सुझाव रखे थे।

**ग्रेटर नोएडा।** 26 अप्रैल को होने वाले लोकसभा चुनाव में मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए जिला प्रशासन की ओर से कई प्रयास किए जा रहे हैं। शहर के 200 से अधिक स्कूलों के प्रधानाचार्यों के साथ मंगलवार को जिला निर्वाचन अधिकारी मनीष कुमार वर्मा और जिला विद्यालय निरीक्षक डॉक्टर धर्मवीर सिंह ने ऑनलाइन बैठक की थी। बैठक के दौरान कई स्कूलों के प्रधानाचार्यों ने मतदान बढ़ाने के लिए कई सुझाव रखे थे। जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय से मिली जानकारी के अनुसार, कई स्कूलों के प्रधानाचार्यों ने सुझाव रखा कि वोट की स्याही दिखाकर सेल्फी भेजने वाले अभिभावकों के बच्चों को फाइनल परीक्षा में एक-दो नंबर का ग्रेस मार्क्स दिया जाएगा।

**मतदान प्रतिशत रह गया था कम**

उन्होंने कहा कि मतदान के प्रतिशत को बढ़ाने के लिए यह व्यवस्था की जा रही है। पिछले चुनाव में देखने में आया था कि नोएडा और दादरी विधानसभा में मतदान प्रतिशत कम रह गया था। इसको बढ़ाने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

इसके साथ ही कई स्कूलों के प्रधानाचार्यों ने कहा कि 90 प्रतिशत से अधिक मतदान करने वाले स्कूलों के अभिभावकों को भी सम्मानित किया जाना चाहिए। कई प्रधानाचार्यों ने कहा कि सबसे अधिक कक्षा के अभिभावकों की ओर से मतदान करने वाले शिक्षकों को उनकी ओर से सम्मानित किया जाएगा।

**इन स्कूलों के प्रधानाचार्य हुए शामिल**

डीपीएस नोएडा, एमिटी इंटरनेशनल स्कूल नोएडा, राजकीय इंटर कॉलेज नोएडा, स्टेप बाई स्टेप नोएडा, जीडी गोयंका, पेसिफिक वर्ल्ड स्कूल नोएडा, उत्तराखंड पब्लिक स्कूल नोएडा, हेरिटेज स्कूल नोएडा, मॉर्डन स्कूल ग्रेटर नोएडा, डीपीएस ग्रेटर नोएडा एवं जीसस एंड मेरी स्कूल सहित अन्य विद्यालयों के प्रधानाचार्यों ने भाग लिया।

मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए 200 से अधिक प्रधानाचार्यों के साथ बैठक की गई थी। नोएडा के कई प्रधानाचार्यों ने वोट की स्याही दिखाने वाले अभिभावकों के बच्चों को ग्रेस मार्क्स देने का सुझाव रखा था। हर स्कूल की ओर से मतदान प्रतिशत बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

*-डॉ. धर्मवीर सिंह, जिला विद्यालय निरीक्षक*

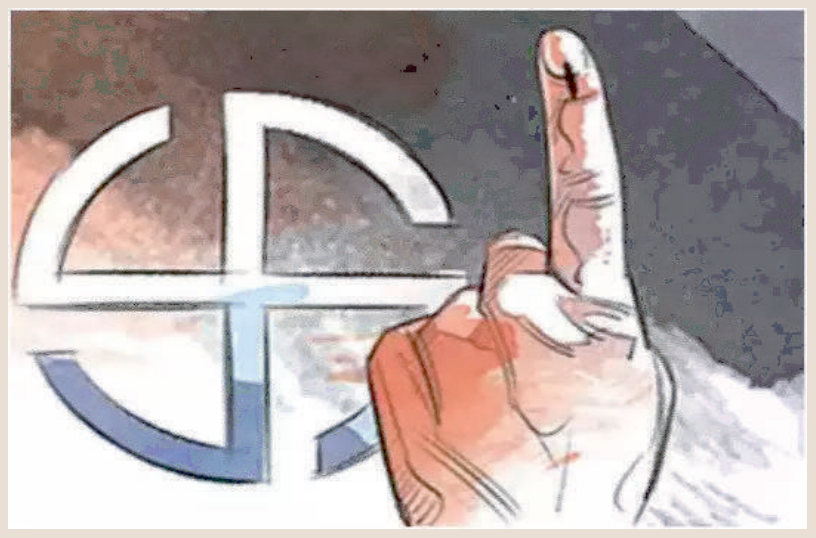

# हिन्दुत्व के ग्लोबल ब्रांड एम्बेसडर हैं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

कृष्णमुरारी त्रिपाठी अटल

प्रधानमंत्री मोदी जिस प्रकार से राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए एक श्रेष्ठ नेतृत्वकर्ता के रूप में जाने जाते हैं। ठीक उसी प्रकार से वे अपनी हिन्दुत्व के प्रति आदर-श्रद्धा-भक्ति एवं निष्ठा के लिए भी जाने जाते हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी वर्तमान में विश्व के सबसे लोकप्रिय राजनेता के रूप में ख्यातिलब्ध हो चुके हैं। भारतीय राजनीति से लेकर वैश्विक राजनीति में उनके विचारों एवं निर्णयों की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही है। यह सब इसलिए सम्भव हो पा रहा है क्योंकि वे भारत के 'स्व' के अधिष्ठान को अपना ध्येय बनाकर सतत्गतिमान हैं। भारत का यह 'स्व'- सनातन हिन्दुत्व के वे मानबिन्दु एवं चिरकालिक शाश्वत मूल्य बोध हैं जिन्हें उन्होंने प्रखरता के साथ अपनी कार्यशैली से प्रकट किया है। वर्ष 2014 में प्रथम बार सांसद एवं प्रधानमंत्री के रूप में निर्वाचित होते ही संसद प्रवेश के समय प्रवेश द्वार पर साष्टांग दंडवत प्रणाम से ही उन्होंने नए संकेत दे दिए थे। वे थे हिन्दू अस्मिता और हिन्दुत्व के प्रति अनन्य निष्ठा के भाव। आगे चलकर विश्व इतिहास में रेखांकित की जाने वाली तारीख 5 अगस्त 2020 को मोदी का एक नया रूप देखने को मिला। उन्होंने अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि में मंदिर निर्माण के भूमि-पूजन के साथ ही पुनश्च एक नया शंखनाद किया। जोकि आगे चलकर पौष शुक्ल द्वादशी तदनुसार 22 जनवरी 2024 को रामलला के नूतन विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा के साथ ही नूतन शक्ति संचार के रूप में दर्ज हो गया। इस अवसर के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने पूर्णरूपेण वैदिक विधान के साथ 11 दिवसीय कठोर व्रत का पालन करते हुए अपने तपस्वी साधक रुप का परिचय दिया था। उक्त अवसर पर उनके उद्बोधन का यह अंश उनके उसी भाव विचार को प्रकट करता है—

"22 जनवरी, 2024, ये कैलेंडर पर लिखी एक तारीख नहीं। ये एक नए कालचक्र का उद्गम है। राम मंदिर के भूमिपूजन के बाद से प्रतिदिन पूरे देश में उमंग और उत्साह बढ़ता ही जा रहा था। निर्माण कार्य देख, देशवासियों में हर दिन एक नया विश्वास पैदा हो रहा था। आज हमें सदियों के उस धैर्य की धरोहर मिली है, आज हमें श्रीराम का मंदिर मिला है। गुलामी की मानसिकता को तोड़कर उठ खड़ा हो रहा राष्ट्र, अतीत के हर दंश से हौसला लेता हुआ राष्ट्र, ऐसे ही नव इतिहास का सृजन करता है। आज से हजार साल बाद भी लोग आज की इस तारीख की, आज के इस पल की चर्चा करेंगे। और ये कितनी बड़ी रामकृपा है कि हम इस पल को जी रहे हैं, इसे साक्षात घटित होते देख रहे हैं। आज दिन-दिशाएँ... दिग-दिगंत... सब दिव्यता से परिपूर्ण हैं। ये समय, सामान्य समय नहीं है। ये काल के चक्र पर सर्वकालिक स्याही से अंकित हो रहीं अमिट स्मृति रेखाएँ हैं।"

**साथ आगे अपने अखंड संकल्प को व्जियक्त करते हुए कहते हैं—**

"हमें अपनी चेतना को देव से देश, राम से राष्ट्र-देवता से राष्ट्र तक विस्तारित करना है। यह भव्य मंदिर वैभवशाली भारत के उत्कर्ष और उदय का गवाह बनेगा। यह भारत का समय है और हम आगे बढ़ रहे हैं।"

मोदी जिस ढंग से हिन्दुत्व के नायक के रूप में अपने कार्य वैशिष्ट्य के साथ गतिमान है। वह स्वर्णिम भारत के भविष्य की आधारशिला के रूप में इतिहास के सुनहरे पन्नों में दर्ज होता चला जा रहा। एक राजनेता जब साधक एवं तपस्वी के रूप में राष्ट्र जीवन को दिशा देता है तो निश्चय ही उसके सुफल पुण्यता का पथ प्रशस्त करने वाले होते हैं। प्रधानमंत्री मोदी जिस प्रकार से राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए एक श्रेष्ठ नेतृत्वकर्ता के रूप में जाने जाते हैं। ठीक उसी प्रकार से वे अपनी हिन्दुत्व के प्रति आदर-श्रद्धा-भक्ति एवं निष्ठा के लिए भी जाने जाते हैं। उन्होंने अपनी कार्यप्रणाली एवं विचार निष्ठा से एक भारतीय राजनीति में हिन्दुत्व की अपरिहार्यता की नई लकीर खींच दी है। इसी के कारण स्वतंत्रता के बाद से भारतीय राजनीति में 'हिन्दू व हिन्दुत्व की अस्मिता के विरुद्ध रोपी गई सेकुलरिज्म की विषबेल समाप्ति की ओर है। नरेन्द्र मोदी ने अपनी वेशभूषा, खान-पान एवं कार्य-व्यवहार में जिस ढंग से हिन्दुत्व के मूल्यों को आत्मसात करते हुए सार्वजनिक रूप से प्रकट किया है। उसका लोहा समूचा विश्व मानने लगा है। वर्षों तक हिन्दुत्व के प्रति दुराग्रह एवं घ्रणा का जो षड्यंत्र सत्तालोलुपों ने तुष्टिकरण के चलते रचा। उसे नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री की कुर्सी पर आते ही क्रमशः ध्वस्त कर दिया। प्रधानमंत्री अपने निजी जीवन से लेकर सार्वजनिक जीवन में हिन्दू परम्पराओं के अनुसार आचरण करते हुए निरंतर दिखते हैं। वे शक्ति के उपासना पर्व 'नवरात्रि' में निराहार व्रत रहते हैं। माथे पर चंदन, रुद्राक्ष की माला, भगवा वस्त्र और पूजन अर्चन के समस्त विधि विधानों का निः संकोच पालन करते हैं। अपनी आस्था के प्रति इस प्रकार की निष्ठा ने उन कई सारी भ्रान्तियों को भी तोड़ा है जो इन परम्पराओं पर लगातार कुठाराघात करते थे।

आज विदेशी राजनेता और राजनयिक हमारी सम्बोधन पध्दति के शब्द 'नमस्ते' को बड़े ही आदर के साथ अपनाते हैं और उसका प्रयोग करते हैं। प्रधानमंत्री मोदी के प्रयासों के चलते ही 21 जून 2015 को 'अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस' के रूप में मान्यता मिली। साथ ही यह प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व की ही छाप है कि— आज विश्व के विभिन्न देशों में भारतीय दर्शन एवं ज्ञान परम्पराओं जुड़े हुए धर्मग्रंथों- वेद,

उपनिषद, श्रीमद्भगवद्गीता, रामायण एवं महाभारत के मूल्यों पर खुलकर चर्चा की जा रही है। उन्हें अपनाने पर जोर दिया जा रहा है। वर्ष 2015 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की यूएई की यात्रा के दौरान ही वहां की सरकार ने राजधानी आबू धाबी में मंदिर निर्माण की स्वीकृति एवं जमीन देने की घोषणा की थी। यूएई के उसी पहले हिन्दू मंदिर का विधिवत उद्घाटन प्रधानमंत्री मोदी ने 14 फरवरी 2024 को किया। यह अपने आप में ऐतिहासिक एवं अनुपमेय था। इसी प्रकार भारत को जी 20 की अध्यक्षता मिलने के पश्चात भारतीय संस्कृति से जुड़े हुए विविध पहलुओं से जी 20 देश परिचित हुए। इसके अतिरिक्त नई दिल्ली में सम्पन्न हुए जी 20 शिखर सम्मेलन 2023 से भी मोदी की उसी दूरदर्शिता की झलक दिखाई दी। चाहे बात 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की थीम की हो याकि बात भारत मंडपम् के बाहर लगी हुई 'नटराज' की 27 फीट ऊंची प्रतिमा हो। AI एआई वाली श्रीमद्भगवद्गीता के माध्यम से जीवन से जुड़े हुए प्रश्नों को गीता के श्लोकों के द्वारा उत्तर देने का नवाचार हो। इसके साथ ही 13 वीं सदी में बने कोणार्क के सूर्य मंदिर को दर्शाना हो। याकि विश्व को ज्ञान कोष से समृद्ध करने वाले नालंदा विश्वविद्यालय के ध्वंसावशेषों की स्मृतियों को विश्व समुदाय के ध्यान में लाना हो। 'वॉल ऑफ डेमोक्रेसी' के द्वारा भारत की सनातनी लोकतान्त्रिक प्रणाली एवं आदर्शों से भी साक्षात्कार करवाया। जब वे संयुक्त राष्ट्र संघ के मंच से भारत को 'मदर ऑफ डेमोक्रेसी' अर्थात लोकतन्त्र की जननी के रूप में विभिन्न उदाहरण देते हुए परिभाषित करते हैं तो इससे एक अमिट चिन्ह बनते हैं। वर्तमान में विश्व समुदाय भारत व भारतीय संस्कृति अर्थात हिन्दू संस्कृति-हिन्दुत्व के प्रति बड़ी ही आशा भरी दृष्टि से देख रहा है। आज विश्व भारत के बारे में पूर्व की कूटरचित दुराग्रही धारणाओं से मुक्त होकर- नए ढंग से मूल भारत को देखने-जानने-समझने और आत्मसात करने की ओर अग्रसर हुआ है। इसमें निश्चय ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की हिन्दुत्व के ग्लोबल ब्राण्ड एम्बेसडर के रूप में माननीय भूमिका है।

प्रधानमंत्री के रूप में सत्तारूढ़ होने के बाद से ही नरेन्द्र मोदी ने एक राजनेता से कहीं आगे बढ़कर वीतरागी 'राजर्षि' के रूप में राष्ट्र संस्कृति-हिन्दू संस्कृति के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की है। उन्होंने भारत की पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण समस्त सीमाओं के तीर्थक्षेत्रों, धार्मिक आस्था के मानबिन्दुओं के संरक्षण एवं सम्वर्धन के लिए स्पष्ट नीति रखी। नीतियों को साकार रूप में ढाला और एक नए सांस्कृतिक उन्मेष की ओर कदम बढ़ाए। वे 'सर्वपंथ समादर' की भावना को आत्मसात कर आगे बढ़ते हैं और राष्ट्रोन्नति के संकल्प को चरितार्थ करते हैं। काशी विश्वनाथ कॉरीडोर से लेकर उज्जैन के महाकाल लोक के विकास और केदारनाथ धाम में आदिशंकराचार्य जी की प्रतिमा का अनावरण किया। काशी तमिल संगमम को एक नए ढंग से प्रकट किया।

चारधाम तीर्थ क्षेत्र परियोजना को मूर्तरूप देने से लेकर मध्यप्रदेश के सागर के बड़तूमा में भव्य संत रविदास मंदिर एवं स्मारक की नींव रखी। इसके अतिरिक्त वे भारत को सांस्कृतिक रूप से जोड़ने वाले प्रत्येक आस्था एवं श्रद्धा केन्द्रों और मानबिन्दुओं के संरक्षण के लिए अनेकानेक कार्य करते आ रहे हैं। देश के नवीन संसद भवन में संतों की उपस्थिति में सत्य एवं न्यायपूर्ण शासन तन्त्र के प्रतीक धर्मदण्ड — 'सेंगोल' की स्थापना में हिन्दुत्वनिष्ठा ही सन्निहित है। इसी प्रकार गणेश चतुर्थी की तिथि (19 सितम्बर 2023) से संसद की कार्यवाही का शुभारम्भ अपने आप में एक नई गाथा कह रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से शिक्षा प्रणाली को भारतीय पद्धति एवं दर्शन पर आधारित करने की नीति भी उसी दिशा की स्पष्ट परिचायक है। गर्व से कहो हम हिन्दू हैं हिन्दुस्थान हमारा है। यह नारा अब देश ही नहीं बल्कि विदेशों ने भी स्वीकार कर लिया है। अब समूचा विश्व समुदाय हिन्दू व हिन्दुत्व के प्रति आदर एवं श्रध्दा के साथ भाव प्रकट करता है। यह सब इसीलिए सम्भव हुआ है क्योंकि वर्तमान में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हिन्दुत्व के संवाहक के रूप में अपनी स्पष्ट रीति नीति को रखा है। उनकी स्पष्ट दूरदर्शी- स्व आधारित हिन्दुत्वनिष्ठ नीति उन्हें सबसे विरला बनाती है। और वर्तमान भारतीय राजनीति ही नहीं अपितु वैश्विक परिदृश्य के श्रेष्ठ यशस्वी लोकनायक की छवि को उकेरती है।

# अफॉर्डेबल सीएनजी कार: कम दाम में उपलब्ध हैं ये सीएनजी कारें, बेहतरीन माइलेज के साथ होगी इको-फ्रेंडली ड्राइविंग

परिवहन विशेष न्यूज

टाटा पंच सीएनजी की कीमत 7.10 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) है। हुंडई एक्सटर सीएनजी की कीमत वर्तमान में 8.33 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) है। मारुति सुजुकी फ्रोंक्स सीएनजी की कीमत 8.41 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) है। मारुति सुजुकी ब्रेजा सीएनजी की शुरुआती कीमत 9.34 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) है। मारुति सुजुकी ग्रैंड विटारा सीएनजी की कीमत 13.05 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) है। आइए इसके बारे में जान लेते हैं।

**नई दिल्ली।** लगातार बढ़ रहे पेट्रोल-डीजल के दाम और चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर को लेकर अनिश्चितताओं के बीच लोग CNG Cars को अभी भी किफायती विकल्प मानते हैं। आइए, देश की 5 सबसे अफोर्डेबल सीएनजी कार के बारे में जान लेते हैं।

**Tata Punch CNG**

टाटा पंच सीएनजी की कीमत 7.10 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) है, जो इसे भारत में सबसे किफायती सीएनजी एसयूवी बनाती है। कंपनी इसे 1 लीटर 3-सिलेंडर, नैचुरली एस्पिरेटेड इंजन के साथ पेश करती है। इसे ट्विन सिलेंडर तकनीक के साथ पेश किया गया है।

**Hyundai Exter CNG**

हुंडई एक्सटर सीएनजी की कीमत वर्तमान में 8.33 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) है। इसमें सीएनजी किट के साथ 1.2-लीटर 4-सिलेंडर एनए पेट्रोल मोटर का उपयोग किया गया है। ये हुंडई की सबसे किफायती एसयूवी है।

**Maruti Suzuki Fronx CNG**

मारुति सुजुकी फ्रोंक्स सीएनजी की कीमत 8.41 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) है, जो इसे भारतीय बाजार में तीसरी सबसे किफायती सीएनजी एसयूवी बनाती है। कंपनी इसे 1.2 लीटर 4-सिलेंडर एनए इंजन के साथ पेश करती है।

**Maruti Suzuki Brezza CNG**

मारुति सुजुकी ब्रेजा सीएनजी की शुरुआती कीमत 9.34 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) है, और इसे 1.5-लीटर पेट्रोल इंजन के साथ पेश किया गया है। आप इसे फैमिली कार के रूप में यूज कर सकते हैं।

**Maruti Suzuki Grand Vitara CNG**

मारुति सुजुकी ग्रैंड विटारा सीएनजी की कीमत 13.05 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) है, और यह ब्रेजा सीएनजी के समान 1.5-लीटर एनए पेट्रोल इंजन प्रदान करता है। टोयोटा भी इसका रीबैज वर्जन सेल करती है।

**Toyota Hyryder CNG**

टोयोटा हायराइडर सीएनजी को आप 13.56 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) की बेस कीमत पर खरीद सकते हैं। ये भारत की सबसे प्रीमियम सीएनजी एसयूवी है। दावा किया गया है कि यह 26.6 किमी/किलोग्राम का माइलेज दे सकती है।

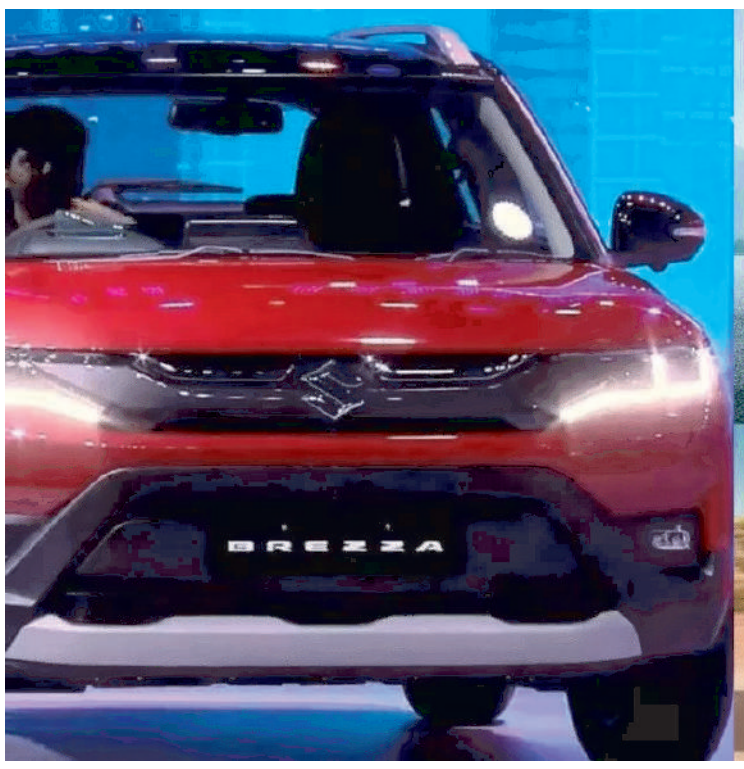

## होण्डा 2 व्हीलर्स को इन राज्यों में मिले सबसे ज्यादा ग्राहक, कंपनी ने पार किया 80 लाख यूनिट सेल का आंकड़ा

HMSI ने पूर्वी भारत में 8 मिलियन से अधिक यूनिट बेची हैं जिसमें बिहार झारखंड पश्चिम बंगाल ओडिशा और उत्तर-पूर्व भारत शामिल है। कंपनी का कहना है कि ये उपलब्धि पूर्वी क्षेत्र में ग्राहकों को हाई-क्वालिटी इनोवेशन और विश्वसनीय दोपहिया वाहन प्रदान कराने के बदौलत हासिल हुई है। 1100 से अधिक टचप्वाइंट के व्यापक नेटवर्क के साथ एचएमएसआई की भारत के पूर्वी राज्यों में मजबूत उपस्थिति है।

**नई दिल्ली।** पॉपुलर दोपहिया वाहन निर्माता कंपनी होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया (HMSI) ने पूर्वी भारत में 8 मिलियन से अधिक यूनिट बेची हैं, जिसमें बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा और उत्तर-पूर्व भारत शामिल है।

**क्वालिटी और इनोवेशन ने दिलाई सफलता**

कंपनी का कहना है कि ये उपलब्धि पूर्वी क्षेत्र में ग्राहकों को हाई-क्वालिटी, इनोवेशन और विश्वसनीय दोपहिया वाहन प्रदान कराने के बदौलत हासिल हुई है। इस क्षेत्र में उपभोक्ताओं की अनूठी जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार किए गए विभिन्न खंडों में फैले उत्पादों के विविध पोर्टफोलियो के साथ, एचएमएसआई ने खुद को प्रदर्शन, स्टाइल और स्थायित्व के पर्यायवाची एक विश्वसनीय ब्रांड के रूप में स्थापित किया है।

**कंपनी ने क्या कहा?**

इस उपलब्धि पर टिप्पणी करते हुए, होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया के निदेशक, बिक्री और विपणन, योगेश माथुर ने कहा-

पूर्वी क्षेत्र में 8 मिलियन बिक्री के माइलस्टोन तक पहुंचना ग्राहकों द्वारा होंडा पर रखे गए विश्वास और भरोसे का प्रमाण है।

**कंपनी के प्रोडक्ट्स**

1100 से अधिक टचप्वाइंट के व्यापक नेटवर्क के साथ एचएमएसआई की भारत के पूर्वी राज्यों में मजबूत उपस्थिति है। होंडा की ओर से एक्टिवा, डियो, एक्टिवा 125, डियो 125, शाइन 100, सीडी 110 ड्रीम डिलक्स, लिवो, शाइन 125, एसपी125, यूनिकॉर्न, एसपी160, हॉर्नेट 2.0 और सीबी200एक्स जैसी मोटरसाइकिलें शामिल हैं।

## कम दाम में चाहिए बेहतरीन 7-सीटर कार, ये हैं 5 जबरदस्त ऑप्शन

हम आपके लिए इंडियन मार्केट में मौजूद 5 अफोर्डेबल 7-सीटर एसयूवी की लिस्ट लेकर आए हैं। महिंद्रा बोलेरो नियो 9.63 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) की बेस कीमत के साथ भारत में सबसे किफायती सात-सीटर एसयूवी बनी हुई है। महिंद्रा बोलेरो की कीमत 9.79 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) है और यह बोलेरो नियो की तरह ही 7-सीट लेआउट भी प्रदान करती है। आइए सभी 7-सीटर एसयूवी के बारे में जान लेते हैं।

**नई दिल्ली।** देश में लगातार SUVs की मांग बढ़ रही है और कारमेकर्स भी इस सेगमेंट में सबसे ज्यादा रुचि दिखा रहे हैं। अपने इस लेख में हम आपके लिए इंडियन मार्केट में मौजूद 5 अफोर्डेबल 7-सीटर एसयूवी की लिस्ट लेकर आए हैं। आइए, इनके बारे में जान लेते हैं।

**Mahindra Bolero Neo**

महिंद्रा बोलेरो नियो 9.63 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) की बेस कीमत के साथ भारत में सबसे किफायती सात-सीटर एसयूवी बनी हुई है। कंपनी इसे 1.5 लीटर 3 सिलेंडर, नैचुरली एस्पिरेटेड इंजन के साथ बेचती है।

**Mahindra Bolero**

महिंद्रा बोलेरो की कीमत 9.79 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) है और यह बोलेरो नियो की तरह ही 7-सीट लेआउट भी प्रदान करती है। इसे भी 1.5 लीटर 3 सिलेंडर, नैचुरली एस्पिरेटेड इंजन के साथ पेश किया जाता है।

**Citroen C3 Aircross**

Citroen C3 Aircross भारत में नवीनतम 7-सीटर SUV है, जिसके थ्री-रो वर्जन की कीमत 11.69 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) है। इसे 1.2 लीटर 3 सिलेंडर, नैचुरली एस्पिरेटेड इंजन दिया गया है।

**Mahindra Scorpio Classic**

महिंद्रा स्कॉर्पियो क्लासिक की कीमत 13.25 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) है और यह एकमात्र 2.2-लीटर डीजल इंजन के साथ उपलब्ध है। महिंद्रा की ये एसयूवी ग्रामीण और शहरी इलाकों में काफी पॉपुलर है।

**Mahindra Scorpio-N**

महिंद्रा स्कॉर्पियो-एन की कीमत 13.26 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) है और इसमें सात सीटों वाला लेआउट मिलता है। यह एसयूवी वैकल्पिक 4WD के साथ पेट्रोल और डीजल दोनों इंजन विकल्पों के साथ उपलब्ध है।

## महिंद्रा XUV 3XO केवल 4.5 सेकेंड में पकड़ेगी 0-100 KMPH की रफ्तार, मिलेगा 20 KMPL से भी ज्यादा का माइलेज

**टीजर जारी करते हुए महिंद्रा ने खुलासा किया कि आगामी XUV3XO में 20.1 किमी प्रति लीटर की क्लेम्ड फ्यूल एफिशियंशी मिलेगी। XUV3XO पेट्रोल और डीजल दोनों वेरिएंट में उपलब्ध होगी और संभवतः दावा किया गया माइलेज डीजल पावरट्रेन का हो सकता है। इसके अलावा टीजर में आगे कहा गया है कि XUV3XO केवल 4.5 सेकंड में 0 से 100 किमी प्रति घंटे की रफ्तार पकड़ सकेगी।**

**नई दिल्ली।** Mahindra की ओर से 29 अप्रैल, 2024 को XUV3XO लॉन्च की जाएगी। कंपनी पिछले कुछ दिनों से लगातार छोटे-छोटे वीडियो के माध्यम से इसकी जानकारी साझा कर रही है। कंपनी ने नया टीजर जारी किया है।

**XUV3XO का माइलेज**

हाल ही में एक टीजर जारी करते हुए महिंद्रा ने खुलासा किया कि आगामी XUV3XO में 20.1 किमी प्रति लीटर की क्लेम्ड फ्यूल एफिशियंशी मिलेगी। XUV3XO पेट्रोल और डीजल दोनों वेरिएंट में उपलब्ध होगी और संभवतः दावा किया गया माइलेज डीजल पावरट्रेन का हो सकता है।

महिंद्रा ने टीजर में खुलासा किया है कि आगामी XUV3XO में Zip-Zap-Zoom ड्राइविंग मोड होंगे, जिसमें अधिक गतिशील ड्राइविंग अनुभव के लिए स्पोर्ट (Zoom) मोड के साथ-साथ इको (Zip) और कम्फर्ट (Zap) मोड शामिल होंगे।

**केवल 4.5 सेकंड में 0 से 100 KMPH प्रति घंटे की रफ्तार**

इसके अलावा टीजर में आगे कहा गया है कि XUV3XO केवल 4.5 सेकंड में 0 से 100 किमी प्रति घंटे की रफ्तार पकड़ सकेगी। टीजर से पता चलता है कि एसयूवी में केवल दो ड्राइविंग मोड हो सकते हैं, क्योंकि डैशबोर्ड डिस्प्ले में एक्सेलेरेशन रन के दौरान जैप मोड दिखाया गया है।

**इंटीरियर और फीचर्स**

ढेर सारे फीचर्स से भरपूर Mahindra XUV3XO कई सेगमेंट-फर्स्ट और बेस्ट-इन-सेगमेंट फीचर्स पेश करने के लिए तैयार है। ये एसयूवी पैनोरमिक सनरूफ, एड्रेनोएक्स ऑपरेटिंग सिस्टम और 7-स्पीकर हरमन-कार्डन साउंड सिस्टम से लैस होगी।

इसके अतिरिक्त यह एक मोबाइल फोन से एयर कंडीशनिंग को कंट्रोल करने के लिए रिमोट फंक्शनलिटी, 360-डिग्री कैमरा और 7 एयरबैग और लेवल 2 एडास के साथ आएगी।

**बुकिंग डिटेल्स**

Mahindra XUV3XO की बुकिंग पहले ही शुरू हो चुकी है, शुरुआती बुकिंग राशि 21,000 रुपये है। ग्राहक अन्य मॉडलों के लिए अपनी मौजूदा बुकिंग को XUV3XO में भी बदल सकते हैं। इसके अतिरिक्त, आउटगोइंग XUV300 मॉडल पर 1.59 लाख रुपये तक की छूट भी पेश की जा रही है।

## मारुति सुजुकी इंडियन मार्केट में जल्द लॉन्च करेगी 3 SUV, 10 लाख से भी कम होने वाली है कीमत

**मारुति सुजुकी मौजूदा समय में कई पैसेंजर व्हीकल डेवलप कर रही है जिसमें भारतीय बाजार के लिए तैयार किए गए इलेक्ट्रिक मॉडल भी शामिल हैं। सबसे पहले टोक्यो में पेश की गई नई मारुति सुजुकी स्विफ्ट अगले महीने अपने प्रोडक्शन- रेडी अवतार में भारतीय सड़कों पर उतरने की तैयारी कर रही है। मारुति सुजुकी फ्रॉन्क्स को जल्द ही अपडेट मिलने वाला है और कंपनी इसे डेवलप कर रही है।**

परिवहन विशेष न्यूज

मारुति सुजुकी मौजूदा समय में कई पैसेंजर व्हीकल डेवलप कर रही है जिसमें भारतीय बाजार के लिए तैयार किए गए इलेक्ट्रिक मॉडल भी शामिल हैं। सबसे पहले टोक्यो में पेश की गई नई मारुति सुजुकी स्विफ्ट अगले महीने अपने प्रोडक्शन- रेडी अवतार में भारतीय सड़कों पर उतरने की तैयारी कर रही है। Maruti Suzuki Fronx को जल्द ही अपडेट मिलने वाला है और कंपनी इसे डेवलप कर रही है।

**नई दिल्ली।** देश की सबसे बड़ी कार निर्माता कंपनी Maruti Suzuki मौजूदा समय में कई पैसेंजर व्हीकल डेवलप कर रही है, जिसमें भारतीय बाजार के लिए तैयार किए गए इलेक्ट्रिक मॉडल भी शामिल हैं। अपने इस लेख में हम आपके लिए कंपनी द्वारा निकट भविष्य में पेश किए जाने वाले 3 मॉडलों की लिस्ट लेकर आए हैं, जिनकी कीमत 10 लाख रुपये से कम होने वाली है।

**2024 Maruti Suzuki Swift**

सबसे पहले टोक्यो में पेश की गई नई मारुति सुजुकी स्विफ्ट अगले महीने अपने प्रोडक्शन-रेडी अवतार में भारतीय सड़कों पर उतरने की तैयारी कर रही है। एक्सटीरियर और इंटीरियर में डिजाइन डेवलपमेंट के साथ इसे एडवांस फीचर्स और तकनीक मिलने वाली है। उम्मीद है कि इसे एक नया 1.2 लीटर जेड-सीरीज, तीन-सिलेंडर पेट्रोल इंजन दिया जाएगा।

**2024 Maruti Suzuki Dzire**

2024 Maruti Suzuki Dzire को इस साल के अंत में पेश किए जाने की उम्मीद है। डिजायर कॉम्पैक्ट सेडान को इसके समकक्ष स्विफ्ट के समान अपडेट मिलने की उम्मीद है। इसके अतिरिक्त, दोनों मॉडल अपनी प्रारंभिक रिलीज से ही सीएनजी वेरिएंट पेश करने की संभावना रखते हैं।

डिजायर ने लंबे समय तक देश में सबसे ज्यादा बिकने वाली सेडान के रूप में अपनी स्थिति बरकरार रखी है और नए मॉडल से इसके प्रभुत्व को और मजबूत करने की उम्मीद है। इसे भी 1.2 लीटर जेड सीरीज पेट्रोल इंजन दिए जाने की संभावना है, जो मैनुअल और ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन विकल्पों के साथ उपलब्ध है।

**Maruti Suzuki Fronx Facelift**

Maruti Suzuki Fronx को जल्द ही अपडेट मिलने वाला है और कंपनी इसे डेवलप कर रही है। आंतरिक रूप से YTB नाम वाली ये प्रीमियम एसयूवी 2025 की शुरुआत में भारतीय बाजार में लॉन्च हो सकती है। यह मिड-लाइफ अपडेट ब्रांड के हाईली लोकलाइज्ड हाइब्रिड इलेक्ट्रिक पावरट्रेन को पेश करेगा और ये 35 किलोमीटर प्रति लीटर से अधिक का दावा किया गया माइलेज प्रदान करेगी।

# बॉलीवुड और नेतागिरी

डा. वरिंद्र भाटिया

फिल्म के पर्दे की राजनीतिक दुनिया से एक अपनी अलग ही दुनिया और अलग ही दास्तां है। यहां सफलता पर दर्शकों की तालियों की गूंज बार-बार सुनाई देती है। लेकिन फिल्मी स्टार से नेता बनने के बाद मन में दबी-छुपी आशंकाएं जन्म लेती हैं। ऐसे में अपनों से टकराहट, शिकायत और उलाहने के दौर के बीच की भी एक दुनिया होती है, जहां कई बार कोई साथ नहीं होता।

यही वजह है कि अपनी प्रसिद्धि को देखते हुए फिल्मों के कलाकार राजनीति में आ तो जाते हैं, पर कम ही लंबी पारी खेल पाने में सफल होते हैं। फिल्म के पर्दे की राजनीतिक दुनिया से एक अपनी अलग ही दुनिया और अलग ही दास्तां है। यहां सफलता पर दर्शकों की तालियों की गूंज बार-बार सुनाई देती है। लेकिन फिल्मी स्टार से नेता बनने के बाद मन में दबी-छुपी आशंकाएं जन्म लेती हैं। ऐसे में अपनों से टकराहट, शिकायत और उलाहने के दौर के बीच की भी एक दुनिया होती है, जहां कई बार कोई साथ नहीं होता। सोचना होगा कि बॉलीवुड और नेतागिरी किस हद तक एक-दूसरे के पूरक हैं। बॉलीवुड समाज के लिए क्या कर सकता है ...

लोकसभा चुनाव नजदीक हैं। वहीं चुनाव से पहले माहौल को रोचक बनाने में सिनेमा भी कदमताल कर रहा है। अनेक स्टार पुराने चुनावों की तरह इस बार भी चुनावी मैदान में हैं। हिंदी सिनेमा इंडस्ट्री को बॉलीवुड के नाम से जाना जाता है। वहीं साउथ की फिल्मों को टॉलीवुड, कॉलीवुड और अमरीकी फिल्मों को हॉलीवुड कहा जाता है। दुनिया में सबसे ज्यादा फिल्में बनाने का रिकॉर्ड भारत के नाम है। फिल्म सिर्फ मनोरंजन का साधन ही नहीं है, बल्कि समाज से संवाद का एक बड़ा माध्यम भी है। कई फिल्में सच्ची घटनाओं पर आधारित होती हैं, जो हमें अतीत की झलक देती हैं। सिनेमा लोगों की सोच बदलने में बड़ी भूमिका निभाता है। फिल्में हमें हंसा सकती हैं, रुला सकती हैं, सोचने पर मजबूर कर सकती हैं और हमें प्रेरित कर सकती हैं। यह एक ऐसा शक्तिशाली माध्यम है, जो लोगों के जीवन को कई तरह से प्रभावित करता है। बॉलीवुड में मशहूर अभिनेताओं के राजनीति में आने की शुरुआत सबसे पहले जवाहर लाल नेहरू के समय में हुई थी। इंदिरा फाइल्स नाम की बुक में बताया गया है कि कैसे इस समय के शीर्ष नेता ने उस वक्त के जाने-माने अभिनेता दिलीप कुमार का राजनीति में इस्तेमाल किया था। सोशल मीडिया पर उपलब्ध जानीकारी के अनुसार 'एक बार इनकम टैक्स से संबंधित दिलीप कुमार का कोई केस फंस गया था तो उन्होंने तत्कालीन शीर्ष नेता से मदद मांगी।

सुनते हैं कि नेता जी ने उनकी मदद तो कर दी, मगर बदले में उस समय के महाराष्ट्र के नेता से कह दिया कि इनका इस्तेमाल करो। शायद यह पहली बार था जब किसी अभिनेता को राजनीति में शामिल किया गया। लगातार चुनावी प्रचार के लिए दिलीप कुमार को उतारा गया।' एक दौर ऐसा भी आया जब दिवंगत संजय गांधी ने चुनाव प्रचार के लिए दिलीप कुमार को रायबरेली बुलाया। दिलीप कुमार रायबरेली फुरसतगंज हवाई अड्डे पहुंच गए। वहां पहुंचकर उन्होंने दो घंटे तक इंतजार किया, लेकिन कोई लेने ही नहीं आया। फिर किसी से लिफ्ट लेकर संजय गांधी के पास पहुंचे। वहां जाकर पता चला कि रैली तो अगले दिन है। ऐसे ही कई किस्स हैं। दूसरे अभिनेताओं को भी राजनीति में शामिल किया जाने लगा। फेहरिस्त काफी लंबी है। साल 1975 में इमरजेंसी के समय सदाबहार अभिनेता किशोर कुमार और देवानंद के गाने बैन कर दिए गए थे। इससे देवानंद ने नाराज होकर सरकार के खिलाफ लडने के लिए एक राजनीतिक पार्टी बना ली थी। 1977 में इमरजेंसी हटने के बाद चुनाव से पहले तमाम फिल्मी सितारों ने एकजुट होकर सत्ता बदलने के लिए नेशनल पार्टी का गठन किया था। अभिनेता देवानंद पार्टी के अध्यक्ष थे। साल 1979 में बॉलीवुड की नेशनल पार्टी ने मुंबई के शिवाजी पार्क में पहली रैली की थी। रैली में लोगों का जनसमूह देख तमाम राजनीतिक पार्टियां हैरान रह गई थी। देवानंद के अलावा शत्रुघन सिन्हा, धर्मेंद्र, हेमामालिनी, संजीव कुमार जैसे अनेक सितारे भी पार्टी से जुड़े थे।

हालांकि राजनीतिक दबाव के चलते धीरे-धीरे नेशनल पार्टी में शामिल सभी फिल्मी सितारे किनारा करने लगे। देवानंद अकेले ही पार्टी में रह गए थे। चुनाव से पहले राजनीति से प्रेरित फिल्मों का आना भी नई बात नहीं है? ऐसा इमरजेंसी के समय से देखने को मिल रहा है। हालांकि बदलते समय के साथ अब ऐसा ज्यादा होने लगा है। याद होगा सबसे पहले 1975 में राजनीति से प्रेरित फिल्म 'आंधी' रिलीज हुई थी। फिल्म पर इंदिरा गांधी की जिंदगी से जुड़े होने का आरोप लगा था। इमरजेंसी के समय सरकार ने इस फिल्म पर बैन लगा दिया था। इसके अलावा इमरजेंसी के समय एक फिल्म 'किस्सा कुर्सी का' रिलीज होनी थी। यह फिल्म जनता पार्टी सांसद अमृत नाहटा ने बनाई थी। इस फिल्म के कुछ प्रिंट जला दिए गए थे। उपरोक्त स्थितियां आज भी दिख जाती हैं। सिनेमा और राजनीति में काफी समानता दिखती है, वो इसलिए कि इन दोनों ही दुनिया में सब कुछ असमंजस भरा होता है। एक समय तक जिस फिल्म स्टार की फिल्में बॉक्स ऑफिस पर धूम मचाती रहती हैं, अचानक कोई एक फ्लॉप फिल्म उसका करियर चौपट कर देती है। यही स्थिति राजनीति में भी है। एक चुनावी हार किसी नेता के राजनीतिक जीवन को रसातल में ले जाती है। दोनों ही दुनिया में सबसे बड़ी भूमिका उन लोगों की होती है जो उन्हें चाहते हैं। फिल्मी दुनिया में ये चाहने वाले दर्शक होते हैं और राजनीति में तथाकथित समर्थक। बीते कई दशकों से फिल्म और राजनीति की दो अलग दुनिया, एक-दूसरे में समाहित होती जा रही हैं। जिस अभिनेता की एक झलक पाने को दर्शक घंटों इंतजार करते थे, वही अभिनेता लोगों से वोट के लिए हाथ जोड़े खड़ा नजर आने लगता है। सिर्फ समाजसेवा की इच्छा रखकर राजनीति में आने वाले सुनील दत्त जैसे अभिनेता तो अब नहीं रहे, जिनके दिल में समाज के प्रति वास्तव में सहानुभूति और दर्द बसता था।

लेकिन उनके बाद भी कई फिल्म स्टार्स, जैसे अमिताभ बच्चन, राज बब्बर, शत्रुघन सिन्हा, धर्मेंद्र, हेमामालिनी, जयाप्रदा, जया बच्चन, राजेश खन्ना, विनोद खन्ना, गोविंदा, परेश रावल और मिथुन चक्रवर्ती इत्यादि अपने दौर में राजनीति में आए हैं। इनमें से बहुत कम ही सफल हुए और जो नहीं चल सके, वे वापस लौट गए। यह सवाल आज भी बरकरार है कि आखिर फिल्म कलाकारों का राजनीति में आने का असल मकसद क्या होता है? उनकी अपनी अलग दुनिया है, चाहने वालों की भीड़ है, अथाह पैसा है, फिर उनको राजनीति में ऐसा क्या मिलता है जो पाने की उनकी चाहत खत्म नहीं होती। जहां तक राजनीतिक पार्टियों का सवाल है तो नामी अभिनेताओं के प्रति उनका सिर्फ इतना स्वार्थ होता है कि उन्हें किसी मुश्किल सीट पर आसान जीत के लिए सामने लाया जाता है।

निःसंदेह आज ज्यादातर पॉलिटिक्स यूज एंड थ्रो के प्लेटफार्म पर चलती है। आज फिल्मी स्टार सभी दलों की पहली पसंद हैं। ये सिने स्टार यदि लोक सेवा में जीवन लगाना चाहते हैं तो कोई बुरी बात नहीं है, लेकिन कटु सत्य है कि फिल्म और राजनीति ये दोनों ही ऐसी दुनिया है कि यदि इनमें संभलकर चलें तो जनता सिर पर बैठाती है, लेकिन जरा चूके तो सारी लोकप्रियता धराशायी होते देर नहीं लगती। यही वजह है कि अपनी प्रसिद्धि को देखते हुए फिल्मों के कलाकार राजनीति में आ तो जाते हैं, पर कम ही लंबी पारी खेल पाने में सफल होते हैं। फिल्म के पर्दे की राजनीतिक दुनिया से एक अपनी अलग ही दुनिया और अलग ही दास्तां है। यहां सफलता पर दर्शकों की तालियों की गूंज बार-बार सुनाई देती है। लेकिन फिल्मी स्टार से नेता बनने के बाद मन में दबी-छुपी आशंकाएं जन्म लेती हैं। ऐसे में अपनों से टकराहट, शिकायत और उलाहने के दौर के बीच की भी एक दुनिया होती है, जहां कई बार कोई साथ नहीं होता। सोचना होगा कि बॉलीवुड और नेतागिरी किस हद तक एक-दूसरे के पूरक हैं। बॉलीवुड समाज के लिए क्या कर सकता है?

## संपादकीय

### चुनाव की फिरौती

हिमाचल में लोकसभा एवं छह उपचुनावों ने चंद चेहरों से फिरौती मांग ली है। सलवटें माथे पे आईं तो करवटें बदल गईं, महफिल को लूटने का मजा कुछ अजीब था। टिकटों के आबंटन में फंसी पार्टियों की उधेड़बुन अंततः विधायकों की जेब में सियासत तलाश रही है और इस बस्ती में शोर है- देखो-देखो वह शेर आ गया। शेर होते तो मंचों पर दहाड़ नहीं रहे होते, लेकिन बनते-बिगड़ते समीकरणों में दूरबीन खोज रही है। चुनाव को दूरबीन से देखने वाले नेताओं की बाढ़ में कुछ चेहरे पहचान में आ रहे हैं और कुछ सियासी घटनाक्रम में महान हो रहे हैं। मंडी में कंगना के स्वागत में कांग्रेस का अंगना पैरवी कर गया कि इस इलाके में उनका शेर विक्रमादित्य सिंह है। शेर ढूंढने निकली कांग्रेस के पास विधायकों के सिवाय और हो भी कौन सकता, वरना आठ-दस गैर विधायकों को मिले कैबिनेट रैंक चुनाव की जमीन पर खड़े होते। यहां तर्क-वितर्क में फंसी सियासत को अगर बागी विधायकों को भाजपा की उम्मीदवारी पर रंज है, तो कांग्रेस के वर्तमान विधायकों को लोकसभा चुनाव में उतारने का भी यही प्रपंच है। जाहिर है सत्तारूढ़ होकर पार्टियां अपने ही नेताओं का शिकार करते-करते ऐसी स्थिति में पहुंच गई हैं कि कहीं फिल्मी कलाकार को राजनीतिक पर्दे पर उतारा जा रहा है, तो कहीं अपनी ही सत्ता की परिक्रमा में मजा आ रहा है। चुनाव भारी है, इसलिए फिरौती में कांग्रेस के कुछ विधायक मांग लिए। चुनाव आभारी है, इसलिए भाजपा की फिरौती में कांग्रेस के बागी छह जगह उतार दिए, वरना पार्टी के पास संगठनात्मक ताकत तो सब पर भारी है। बहरहाल जिस सर्कस से होकर कांग्रेस के टिकट गुजर रहे हैं, वहां हल्का-हल्का मनोरंजन व पार्टी के दांतों पर एक ही तरह का मंजन भी हो रहा है। अब जबकि मैदान के दूसरे छोर पर विपक्ष की सेना तैनात है, कांग्रेस अपनी ताकत की पोथी से सर्वेक्षण निकालकर देख रही है कि किसे सेनापति बनाया जाए। पहले ही चुनावी फिरौती ने कांग्रेस की सत्ता से मंडी में उम्मीदवार छीन लिया और अब सर्वेक्षण के जरिए यह पुख्ता हो रहा है कि हमीरपुर से उप मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री और कांगड़ा संसदीय क्षेत्र से आरएस बाली जैसा कोई नहीं। यकीनन सर्वे इन दोनों नेताओं की कद काठी पर कांग्रेस के अरमान चढ़ाना चाहता है, लेकिन जिन्हें बिना चुनाव लड़े बड़े-बड़े पद व सरकार के ओहदे मिले, उनकी उपयोगिता अब आड़े आ रही है। सत्ता के पदों का आबंटन खुशफहमी दे सकता है, लेकिन किसी नेता का उदय जनता के अखाड़ों पर मिट्टी से सन कर ही होता है। हम मान सकते हैं कि वर्तमान सरकार में विक्रमादित्य सिंह, मुकेश अग्निहोत्री व आरएस बाली की हस्तियों में कांग्रेस की पतवार थामने का कौशल है। यह सिद्ध हो रहा है कि ये नेता अपने वजूद में पार्टी का हुजूम लेकर चल सकते हैं। दूसरी ओर बागियों के खेत में मूली ढूंढ कांग्रेस को उनके कद को नीचा करना टेढ़ी खीर बना हुआ है। मुख्यमंत्री के निशाने पर सुधीर शर्मा व राजेंद्र राणा का रहना, यह भी साबित करता है कि अगर ये दोनों चुनाव की फिरौती में साबित हो गए, तो हिमाचल की सियासी धुरी में इनका भी कमाल होगा। जाहिर तौर पर कांग्रेस को वीरभद्र सिंह के बाद ऐसे नेताओं की जरूरत थी जो प्रदेश को चलाने की अलावा पार्टी को सत्ता में बनाए रखने का करिश्मा पैदा कर सकें। कांग्रेस ने सुखविंदर सुक्खू को चुना, इसलिए वह तमाम नेताओं पर भारी पड़े, लेकिन अब उन्हें लोकसभा तथा उपचुनावों में अपनी हस्ती के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन को चूमना होगा। परिणाम जो भी हों, हिमाचल दोनों प्रमुख दलों के बीच कुछ नेताओं के वजन को महसूस कर सकता है, वरना सत्ता के बीच गमलों में उगे नेता तो बहुत नxार आते हैं।

## राय

### 'मंगलसूत्र' की सियासत

प्रधानमंत्री मोदी ने 'हिंदू-मुसलमान' बयान देकर लोकसभा चुनाव को आक्रामक बना दिया है। हिंदू माताओं, बहनों के 'पवित्र मंगलसूत्र' और सोना-चांदी के जवाहरात को लेकर प्रधानमंत्री ने कांग्रेस की जो घेराबंदी की है, उससे चुनाव के आगामी चरणों की दशा-दिशा तक बदल सकती है। ध्रुवीकरण ऐसा देखा-महसूसा जा सकता है कि चुनाव दोफाड़ हो जाएं! सवाल है कि प्रथम चरण के कम मतदान ने भाजपा का आत्मविश्वास क्या यहां तक हिला दिया है कि पार्टी को अपने आजमाए, पुराने 'हिंदू-मुस्लिम' फॉर्मूले की सियासत पर लौटना पड़ा है? क्या भाजपा के बुनियादी मतदाता ने प्रधानमंत्री मोदी से ऐसी ही आक्रामक और सांप्रदायिक टिप्पणी की अपेक्षा की थी? प्रधानमंत्री ने यह सार्वजनिक बयान देकर खासकर हिंदू महिलाओं को उकसाने की कोशिश की है कि मां-बहनों के 'मंगलसूत्र' और सोने-चांदी के गहनों को छीन कर ज्यादा बच्चे पैदा करने वालों, मुसलमानों और घुसपैठियों में बांट दिए जाएंगे। नौकरीपेशा लोगों के कमाए हुए धन और जमीन-मकान का भी सर्वे कराया जाएगा। यदि आपके पास दो घर हैं, तो एक घर छीन लिया जाएगा और उसे मुसलमानों में बांट दिया जाएगा। कांग्रेस की यह नक्सलवादी सोच उसके चुनाव घोषणा-पत्र में साफ दिखती है। क्या आप ऐसी सरकार बनने देंगे? देश के आर्थिक संसाधनों पर 'शहरी नक्सलियों' का कब्जा होगा। बेहद अहम सवाल तो यह है कि प्रधानमंत्री मोदी ने मुसलमानों को 'घुसपैठिया' क्यों कहा? देश की करीब 15 फीसदी आबादी अल्पसंख्यक जरूर है, लेकिन मुसलमान भी देश के नागरिक हैं। उनके भी संवैधानिक, मौलिक अधिकार हैं। यदि प्रधानमंत्री ने रोहिंग्या का जिक्र किया है, तो उनका स्पष्ट नाम लेना चाहिए था।

यह मुद्दा तो संसद तक में गूंजता रहा है। प्रधानमंत्री ने किस आधार पर ऐसा बयान दिया है कि हिंदू माताओं-बहनों के 'मंगलसूत्र' तक बांट दिए जाएंगे? प्रधानमंत्री ने पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के 9 दिसंबर, 2006 को 'राष्ट्रीय विकास परिषद' की बैठक में दिए गए बयान की व्याख्या भी गलत की है। डॉ. सिंह ने तब नई योजनाओं के संदर्भ में दलित, आदिवासी, ओबीसी, महिलाओं और बच्चों के संग मुस्लिम अल्पसंख्यकों की भी बात कही थी। देश के संसाधनों पर मुस्लिम अल्पसंख्यक सबसे पहला दावा करते रहे हैं, पूर्वप्रधानमंत्री ने उन पर भी सोचने की बात कही थी। संसाधनों पर प्रथम अधिकार किसी भी समुदाय का नहीं हो सकता। तब पूर्व प्रधानमंत्री के बयान की भी तीखी आलोचना की गई थी। एक समुदाय के प्रति कांग्रेस की प्रतिबद्धता हो सकती है। भाजपा की प्रतिबद्धता बहुसंख्यक हिंदुओं के प्रति है। प्रधानमंत्री का सूत्रवाक्य 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास'' भी सवालिया होता लगता है। वैसे भी 17 साल 4 महीने पुराना बयान आज अप्रासंगिक है, क्योंकि बीते 10 साल से तो देश में मोदी सरकार है। उसकी नीतियां देश के सामने हैं। कांग्रेस के चुनाव घोषणा-पत्र में ऐसा कोई भी वायदा नहीं है, जैसा प्रधानमंत्री ने बताया है। 'मंगलसूत्र' छीनने और बांटने की भी घोषणा नहीं की गई है।

यह व्याख्या प्रधानमंत्री ने की है। बेशक जातीय जनगणना, जातियों-उपजातियों की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों का पता लगाने, मुसलमानों के सशक्तिकरण, सर्वे के आधार पर भागीदारी और अधिकार तय करने की बात घोषणा-पत्र में है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने हैदराबाद की रैली में कहा था कि यह आर्थिक सर्वे भी कराया जाएगा कि किस वर्ग के पास कितना धन है।

# मशहूर हस्तियों का सार्वजनिक आचरण

लोकप्रिय एवं मशहूर हस्तियों को अपनी सीमित एवं संकुचित विचारधारा से ऊपर उठकर पूरे राष्ट्र तथा मानव समाज के हित में सोचना एवं बोलना चाहिए'...

प्रत्येक व्यक्ति का विचार, उसकी सोच, उसका मन और बोलने, बतियाने का लहजा दूसरों से भिन्न होता है। बहुतों में विचारों की साम्यता हो सकती है। परंतु हूबहू, वही विचार, वैसी ही सोच, भावनाएं शायद ही किसी की दूसरे से मिलती हों। जैसे हाथ की पांच उंगलियां एक ही हथेली में होने के बावजूद, वे एक-दूसरी से अलग हैं। उनके काम अलग-अलग हैं। उनके भाव, उनके रूप-गुण, इशारा-संकेत अलग-अलग होते हैं। बेशक वे एक ही हथेली से जुड़ी होती हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि एक हाथ की उंगलियों की भी अपनी भिन्न क्रियाएं और विशेषताएं होती हैं। परंतु उंगलियां जब मु_ी के रूप में जुड़, बंध जाती हैं, तो वे एक होकर ताकत से भर उठती हैं। बंद मु_ी को देख सामने वाला कोई तारीफ करता है, तो कोई घबरा जाता है। यह बंद मु_ी की विशेषता है। ऐसी ही विशेषता मनुष्यों के विचारों के संबंध में हैं। जिनके विचार एक-दूसरे से बेशक कुछ भिन्न हों, परंतु बहुत अधिक साम्यता हो, तो उनमें अपनापन एवं एकता की भावना का होना स्वाभाविक है। उनमें आपस में मित्रता, प्रेम भाव, निकटता एवं एक-दूसरे के लिए आदर भाव होना अस्वाभाविक नहीं है। यह मनुष्य की प्रवृत्ति है कि वह समान विचारधारा, समान सोच और समझ वाले व्यक्ति से तुरंत प्रभावित हो उठता है। उससे शीघ्र ही घुलमिल जाता है। न केवल घुल-मिल जाता है, बल्कि एक-दूसरे का आदर- मान, स्नेह-प्रेम, आकर्षण-खिंचाव, नजदीकी-निकटता में बंधता-बिंधता जाता है। ये समभाव इतने प्रबल हो उठते हैं कि वह उसे अपने से अलग मानने को तैयार नहीं होता है।

इसे विचारों की समानता, बुद्धि की साम्यता अथवा सोच की परिपक्वता कह सकते हैं। ऐसे मनोनुकूल विचारों वाले व्यक्ति की गतिविधियों, कार्यों एवं चारित्रिक गुणों से उसके प्रशंसक तुरंत प्रभावित हो उठते हैं। वे उसके विरुद्ध कुछ भी सुनने, जानने को तैयार नहीं होते हैं। अपनी विशेष उपलब्धियों, कार्यों के कारण वह सामान्य से विशेष व्यक्ति के तौर पर प्रतिष्ठित हो जाता है। वह समाज में, क्षेत्र में, देश में, विदेश में अर्थात सब जगह ख्याति प्राप्त कर लेता है। वह एक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय व्यक्तित्व के तौर पर उभर आता है। एक सार्वजनिक व्यक्तित्व (पब्लिक फिगर) बन जाता है। ऐसे विशेष व्यक्ति से हर कोई अपनापन, अधिकार, आदर-मान जताने लगता है। तब उस व्यक्ति विशेष के अपने निजी विचार, भावनाएं, समाज, धर्म, जाति आदि गौण हो जाते हैं। वह धर्म, जाति, समाज, संस्कार से ऊपर उठ जाता है। ऐसा व्यक्ति सबके लिए सम्माननीय, श्रद्धेय एवं नायक के रूप में दिल-दिमाग, कार्य-व्यवहार, भाषा-बोली में एक दीप स्तंभ की तरह सबके दिलों में स्थान बना लेता है। लेकिन सभी के दिलों में राज करने, बसने वाला वह विख्यात व्यक्ति अथवा मशहूर हस्ती जब एक क्षेत्र विशेष, पार्टी विशेष, विचार विशेष, धर्म विशेष, जाति विशेष, व्यक्ति विशेष इत्यादि के लिए गुणगान करने लगता है, अपनी भावनाएं उस विशेष वर्ग के प्रति व्यक्त करने लगता है, तब वह उसके चाहने वाले लाखों-करोड़ों लोगों के दिलों से उतर जाता है। न केवल दिल से उतर जाता है, बल्कि उनकी नजरों से गिर जाता है। करोड़ों लोगों के लिए वह जैसे मर जाता है। ऐसे एकतरफा अथवा एक पक्षीय विचारों के कारण सामान्य जन समूह में, समाज में, देश में, प्रशंसकों में उसकी जो नायक, देव छवि स्थापित हुई होती है, वह खंडित हो जाती है।

जब वह किसी विशेष राजनीतिक पार्टी अथवा धर्म, जाति, वर्ग की ही प्रशंसा करने लगे, तथा अन्य राजनीतिक दलों, धर्म, जाति, संप्रदाय, क्षेत्र के विरुद्ध बोलने लगता है. तब वह नैतिक रूप से अन्य विचाधारा वाले व्यक्तियों, धर्म, जाति, संप्रदाय के लिए जैसे मर जाता है। ऐसे में वह प्रसिद्ध व्यक्ति अथवा मशहूर शख्सियत केवल उसकी चहेता पार्टी या धर्म, जाति इत्यादि तक ही सिमट कर रह जाता है। शुरुआत में जैसे उल्लेख किया गया है, हर व्यक्ति का अपना निजी विचार होता है। अलग दृष्टिकोण, अलग भावनाएं होती हैं। जरूरी नहीं है कि उसके विचार, उसकी भावनाएं सबको भाए। लेकिन ऐसे किसी भी लोकप्रिय यानी पब्लिक फिगर व्यक्तित्व को सार्वजनिक रूप से किसी राजनीतिक दल, धर्म, जाति, वर्ग, क्षेत्र, भाषा, बोली के विरुद्ध अपनी भावनाएं व्यक्त नहीं करनी चाहिए। यदि वह ऐसा करता है, और केवल अपने चहेते दल या धर्म, जाति की तरफदारी करने लगता है, तो उसका करोड़ों लोगों की नजरों से गिर जाना स्वाभाविक है। जो लोग कल तक उसके एक पक्षीय विचारों,

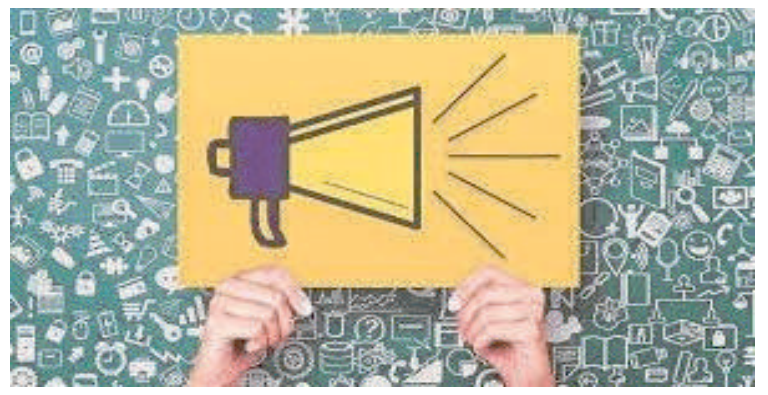

भावनाओं से अनभिज्ञ थे, उसके विचारों को जानकर उससे घृणा करने लगते हैं। हमारे देश में व्यक्ति पूजा की भावना बहुत बलवती है। ऐसी मशहूर हस्तियों को अपने विचारों का सार्वजनिक रूप से प्रदर्शन नहीं करना चाहिए। किसी दल, जाति, धर्म, संप्रदाय या वर्ग विशेष के विरुद्ध नहीं बोलना चाहिए।

न ही किसी विशेष वर्ग, दल, जाति इत्यादि के लिए प्रचार अथवा प्रशंसा करनी चाहिए। ऐसी महान हस्तियों को अपने निजी विचारों को अपने तक ही सीमित रखना चाहिए। यदि निजी विचार व्यक्त करते हैं, तो अपने कुछ अत्यंत निकट के लोगों तक ही सीमित होना चाहिए, क्योंकि वह भी मनुष्य ही है, भगवान नहीं। मानवीय दुर्बलताएं हर किसी में होती हैं। अब प्रश्न उठता है कि मशहूर हस्तियां कौन हैं? मशहूर शख्सियतों का क्या मतलब है, अथवा मशहूर हस्तियां किनको मानें? इसमें नामों की लंबी सूची हो सकती है। मेरा मानना है कि विख्यात व्यक्तित्वों अथवा मशहूर हस्तियों में लोकप्रिय गायक-गायिकाएं, कलाकार-संगीतकार, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, अभिनेता, खिलाड़ी एवं उच्च पदों पर आसीन गणमान्य व्यक्ति इत्यादि हैं। लेकिन इस सूची में राजनीतिक नेता एवं धार्मिक नेता शामिल नहीं हैं। इन लोकप्रिय एवं मशहूर हस्तियों को अपने सीमित एवं संकुचित विचारधारा से ऊपर उठकर पूरे राष्ट्र तथा मानव समाज के हित में सोचना एवं बोलना चाहिए। आज हमारे देश में कुछ मशहूर हस्तियां जीवित किंवदंती बन चुके हैं। ऐसा कोई भी व्यक्तित्व यदि किसी दल, वर्ग, जाति एवं धर्म विशेष के लिए ही केवल प्रचार करे, उनका स्तुतिगान करे और अपने से इतर दूसरे धर्म, वर्ग, जाति, दल की बुराई-आलोचना करे, तो वे लोग जो उनको अपना प्रेरणापुंज, जीवित भगवान, देवी-देवताओं की तरह मानते और पूजते हैं, वह उनके दिलों से सदा के लिए उतर जाएंगे।

-शेर सिंह

# अशोक गौतम नई सरकार, ट्रांसपेरेंसी अपार

पुरानी जैसी नई सरकार जैसे ही एक्शन मोड में आई तो उसने सबसे पहले अपनी पहली गारंटी को पजामा पहनाते पुरानी सरकार की सड़ी ट्रांसपेरेंसी नीति को सिरे से खारिज करते विभाग में हज्जामों के पद भरने का निर्णय लिया। दर्जियों के पद भरने का नहीं। सबको पता है कि जो दर्जी पहले मैन को जेंटलमैन बनाने के लिए जाने जाते थे, अब वे ही उसके तन से कपड़े उतार रहे हैं। आदमी दिमाग से तो पहले ही नंगा था, अब बदन से भी नंगा हो रहा है। ऐसे में दर्जी के पद भरने का मतलब था कि जनता के पैसे की बरबादी। आदमी नंगा हो तो अच्छा लगता है, पर जो कपड़े पहन कर नंगे से भी नंगा लगे तो बुरा नहीं, बहुत बुरा लगता है। ज्यों ही हाथों में ईमानदारी से एक से एक डिग्रियां लिए बूढ़े होते हज्जामों को पता चला कि सरकार अपनी पहली गारंटी पूरी करने जा रही है तो उनके जंग लगे उस्तरे जनता के गंजे सिरों तक को नया लुक देने के लिए मचल उठे। उनके हाथ जनता की गरदन अपने हिसाब से मरोडने तोडने को खारिश करने लगे।

तय तिथि को सरकार ने जनता के सिर को नया रूप देने के लिए हर विभाग में हज्जाम के पद भरने के लिए सच्ची को पहली बार पूरी ट्रांसपेरेंसी से साक्षात्कार लिए। पूरी ईमानदारी से लिए। कहीं कोई भाई नहीं, कहीं कोई भतीजा नहीं। पार्टी वर्कर तो दूर दूर तक नहीं। पुराने पैटर्न की नई सरकार चाहती थी कि उसमें पारदर्शिता आए या न, पर वह अबसे भर्तियों में पूरी पारदर्शिता लाएगी। मलमल की तरह! बहुत हो लिया साक्षात्कारों में ये कि बैठे कोई तो अपाइंटमेंट ले कोई। अब जो योग्य होगा, वही अपाइंटमेंट भी पाएगा। हे हमारे वोटरो! गए वे दिन जब अपने को सरकारी पैसे पर ऐश करवाने के लिए ही सार्वजनिक भर्तियां निकाली जाती थीं। और जब तक अपना बंधु उस पद की योग्यता पूरी नहीं कर लेता था, तब तक पद भरने का विज्ञापन नहीं निकाला जाता था। हज्जामों की नई सरकार में भर्ती की ईमानदारी से लिस्ट फाइनल से पहले की फाइनल हुई। सरकारी हज्जामों का ईमानदारी से चयन करने में पहली बार हज्जामों का चयन करने वालों के पसीने छूटे। इससे पहले तो इंटरव्यू होने से पहले ही चयनित उम्मीदवारों की लिस्ट तैयार हो जाया करती थी। हज्जामों की फाइनल लिस्ट ले वे मंत्री जी के पास पहुंचे। उन्होंने लिस्ट ऊपर से नीचे तक देखी। उसमें अपना एक भी हज्जाम न देख वे चौंके। 'तो कैसे रहे अबके इंटरव्यू?' उन्होंने अपने इंटरव्यू अधिकारी से पूछा तो वे सिर झुकाए बोले, 'सर! अबके पूरी ईमानदारी बरती गई है।

ऐसी जैसी किसी लोक में भी नहीं बरती गई होगी आज तक। जैसे कि आपके आदेश थे, हम योग्य की इज्जत करते हैं। हम देश में योग्यता की पूजा करने चाहते हैं।' 'तो ये हज्जाम पूरी तरह योग्य हैं न?' 'सौ टका योग्य सर! ऐसे कि इनके हाथ से उस्तरा शत प्रतिशत जनता के बचे बाल ही काटेगा। गरदन जरा सी भी नहीं। चाहे ये आंखें बंद कर ही जनता की हजामत क्यों न करें? जैसा आप चाहेंगे, जनता के सिरों को ये वैसी ही लुक दे आपके विजन को बहुत आगे तक ले जाएंगे सर!' 'तुम्हें पूरी उम्मीद है न?' 'जी सर!' 'तो इनमें ये हमारे हज्जाम डाल दो।'

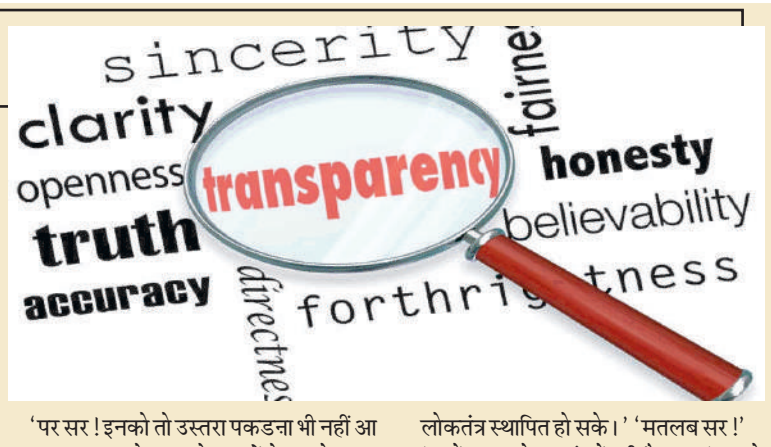


'पर सर! इनको तो उस्तरा पकडना भी नहीं आ रहा था। कुछ के पास तो उस्तरों के बदले चाकू का अनुभव था।' 'तो क्या हो गया! कल को जो पद पर बैठेंगे तो उस्तरा चलाना भी सीख जाएंगे।' 'पर सर! अगर जो इन्होंने जनता की हजामत करते करते उनकी गरदन, कान काट दिए तो?' 'तो क्या हो गया! जनता की गरदन, कान कटे हुए ही अच्छे लगते हैं। बल्कि हम तो चाहते हैं कि अगली गारंटी को पूरा करते हम ऐसे डॉक्टरों की भर्ती करें जो जनता की आंखों को ठीक करने के बदले उनकी आंखें फोड़ दें, बची जुबान भी काट दें ताकि देश में सच्चा लोकतंत्र स्थापित हो सके।' 'मतलब सर!' 'तुम्हें जनता ने अपाइंटमेंट दी है या'।' 'आपने सर!' झुका सिर बिल्कुल झुका। 'हम तुम्हारे बदले किसी और को ले आते तो तुम्हारा क्या होता?' 'आपके चरणों के बदले घर में फटे गद्दों पर पड़ा होता सर!' 'तो तुम्हारी पहली वफादारी किसके लिए बनती है? जनता के लिए या'।' 'आपके लिए सर!' 'तो चुने प्रत्याशियों की लिस्ट में इनको हटा कर इनको डाल दो।' 'ठीक है सर!' उन्होंने उनसे लिस्ट ली और अपनी लिस्ट फाड़ उस पर अपने हस्ताक्षर कर दिए।

# रीट, इनविट ने चार साल में जुटाए 1.3 लाख करोड़ रुपये, आरबीआई ने दी जानकारी

रियल्टी और बुनियादी ढांचा क्षेत्र के निवेश साधनों-रीट और इनविट-ने मार्च के अंत तक पिछले चार साल में 1.3 लाख करोड़ रुपये जुटाए हैं। विशेषज्ञों और संबंधित पक्षों का मानना है कि भारत की तेज गति से वृद्धि के साथ रीट और इनविट वैकल्पिक निवेश साधनों के रूप में उभर रहे हैं। खासकर अधिक धनी व्यक्तियों के बीच इनकी लोकप्रियता बढ़ रही है।

**नई दिल्ली।** RBI की नई रिपोर्ट में जानकारी सामने आई है कि रियल्टी और बुनियादी ढांचा क्षेत्र के निवेश साधनों यानी रीट और इनविट ने मार्च के अंत तक पिछले चार साल में 1.3 लाख करोड़ रुपये जुटाए हैं। इसके अलावा ये भी पता चला है कि इन निवेश साधनों में और अधिक निवेश आने की उम्मीद है।

विशेषज्ञों और संबंधित पक्षों का मानना है कि भारत की तेज गति से वृद्धि के साथ, रीट और इनविट वैकल्पिक निवेश साधनों के रूप में उभर रहे हैं। खासकर अधिक धनी व्यक्तियों के बीच इनकी लोकप्रियता बढ़ रही है। आरबीआई के अप्रैल बुलेटिन में 'अर्थव्यवस्था की स्थिति' विषय पर प्रकाशित एक लेख में कहा गया है कि भारत ने रियल एस्टेट निवेश ट्रस्ट (रीट) और बुनियादी ढांचा निवेश ट्रस्ट (इनविट) को देर से अपनाया, हालांकि अब इनका बाजार बढ़ रहा है।

रीट और इनविट ने जुटाए 1.3 लाख करोड़ रुपये

इस लेख के मुताबिक, 'रीट और इनविट ने 2019-20 से (मार्च 2024 तक) 1.3 लाख करोड़ रुपये जुटाए हैं।' इस साल मार्च में एक इनविट सूचीबद्ध हुआ, जिसने सार्वजनिक निर्गम के जरिये 2,500 करोड़ रुपये जुटाए।

रिजर्व बैंक ने एक रिपोर्ट में कहा कि रियल्टी और बुनियादी ढांचा क्षेत्रों के लिए निवेश वाहनों - आरईआईटी और इनविट - ने पिछले चार वर्षों में मार्च के अंत तक 1.3 लाख करोड़ रुपये जुटाए हैं, और अधिक पूलिंग की सुविधा की उम्मीद है।

**निवेश आकार और ट्रेडिंग लॉट को किया गया कम**

मार्च में एक इनविट की लिस्टिंग देखी गई, जिसने सार्वजनिक निर्गम के माध्यम से 2,500 करोड़ रुपये जुटाए, जिससे विदेशी निवेशकों की काफी रुचि आकर्षित हुई। लेख में कहा गया है कि बाजार नियामक सेबी ने न्यूनतम निवेश आकार और ट्रेडिंग लॉट को धीरे-धीरे कम कर दिया है, जिससे इन हाइब्रिड टूल्स में अधिक खुदरा भागीदारी संभव हो सकी है।

इस क्षेत्र को और विकसित करने के लिए, बाजार नियामक ने 8 मार्च, 2024 को छोटे और मध्यम आरईआईटी के लिए नियमों को अधिसूचित किया।

आरबीआई के डिप्टी गवर्नर माइकल देबब्रत पात्रा के नेतृत्व वाली एक टीम द्वारा लिखे गए लेख में कहा गया है कि इससे एक विनियमित वित्तीय उत्पाद के रूप में रियल एस्टेट परिसंपत्तियों की एक विस्तृत श्रृंखला में एकत्रित निवेश की सुविधा मिलने की उम्मीद है, जिससे भारत में आरईआईटी की और वृद्धि में मदद मिलेगी।

ICRA के वरिष्ठ उपाध्यक्ष और समूह प्रमुख - कॉरपोरेट रेटिंग्स, राजेश्वर बुर्ला ने कहा कि आरबीआई ने बैंकों को इनविट्स को ऋण देने की अनुमति दी है, जो सरफेसी अधिनियम के तहत ऋणदाताओं के लिए सुरक्षा प्रवर्तन के साथ-साथ हाल के दिनों में उठाए गए कुछ आशाजनक कदम हैं।

बुर्ला ने कहा कि एक अनुकूल नियामक ढांचे

और अच्छी परिचालन परिसंपत्तियों की एक मजबूत पाइपलाइन के लिए धन्यवाद, उद्योग वित्त वर्ष 2020 से 1.3 लाख करोड़ रुपये से अधिक जुटाने में सक्षम था। InvITs और REITs ने पहले से ही परिचालन बुनियादी ढांचे की परिसंपत्तियों में अवरुद्ध पूंजी को खोलने में मदद की, जिसे निर्माणाधीन परियोजनाओं में और भारत में बुनियादी ढांचे के विकास का समर्थन करते हुए फिर से निवेश किया जा सकता है।

भारतीय आरईआईटी एसोसिएशन ने कहा कि सेबी के प्रगतिशील नियमों, विशेष रूप से एकल इकाइयों को खरीदने के लिए इसे अन्य सूचीबद्ध कंपनियों के बराबर लाने के लिए लॉट साइज में कमी ने आरईआईटी को खुदरा निवेशकों के लिए एक आकर्षक परिसंपत्ति वर्ग में बदल दिया है।

# सीजीएचएस कार्ड होल्डर को 30 जून तक निपटाना होगा ये काम, वरना इलाज कराने में हो जाएगी परेशानी

CGHS ABHA Linking सरकारी कर्मचारियों को सेंट्रल गवर्नमेंट हेल्थ स्कीम (CGHS) का लाभ मिलता है। यह लाभ कर्मचारी के साथ उनके परिवार के सदस्यों को भी मिलता है। अप्रैल की शुरुआत में स्वास्थ्य मंत्रालय और परिवार कल्याण ने आदेश दिया कि सभी सीजीएचएस कार्ड होल्डर को अपने कार्ड आयुष्मान भारत स्वास्थ्य खाता आईडी (Ayushman Bharat Health Account ID) से लिंक करना होगा।

**नई दिल्ली।** सेंट्रल गवर्नमेंट हेल्थ स्कीम (CGHS) चलाई जा रही है। इस स्कीम का लाभ सरकारी कर्मचारियों को मिलता है। इसमें कर्मचारी और उनके परिवार को फ्री इलाज की सुविधा मिलती है।

इस महीने की शुरुआत में स्वास्थ्य मंत्रालय और परिवार कल्याण ने सभी सीजीएचएस कार्ड होल्डर को आदेश दिया था कि वह अपने कार्ड को आयुष्मान भारत स्वास्थ्य खाता आईडी (Ayushman Bharat Health Account ID) से लिंक करें। इसके लिए मंत्रालय ने 30 दिन की मोहलत दी थी।

अब मंत्रालय ने केंद्र सरकार स्वास्थ्य योजना (CGHS) बेनेफिशिएरी आईडी को आयुष्मान भारत हेल्थ अखाउंट (ABHA) नंबर से लिंक करने की समयसीमा को आगे बढ़ाकर 30 जून 2024 कर दिया है। मंत्रालय ने कहा कि सीजीएचएस लाभार्थी की सहायता के लिए यह फैसला लिया गया है।

**CGHS कार्डहोल्डर को क्या काम करना होगा?**

मंत्रालय द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार सीजीएचएस लाभार्थी को अपने सीजीएचएस कार्ड को ABHA नंबर से लिंक करना होगा। इसके काम को पूरा करने के लिए कार्ड होल्डर अपने नजदीक के CGHS कल्याण केंद्र पर जा सकते हैं।

- लाभार्थी को अपना मोबाइल नंबर अपडेट करना होगा।
- इसके अलावा लाभार्थी नाम, जन्म का साल या फिर लिंग जैसी गलतियों को भी सुधार सकते हैं।
- सीजीएचएस कार्डहोल्डर को अपना सीजीएचएस आईडी को आभा नंबर से लिंक करना होगा।

**ABHA नंबर क्या है?**

जिन लोगों के पास आयुष्मान भारत स्वास्थ्य खाता कार्ड है, उन्हें 14 डिजिट का यूनिक आईडी नंबर मिलता है। इसी नंबर को ABHA ID या ABHA नंबर कहते हैं। इस नंबर का इस्तेमाल सभी हेल्थ रिकॉर्ड को लिंक करने के लिए किया जाता है।

4 अप्रैल 2024 को मंत्रालय ने कहा था कि आभा नंबर बनाने या हेल्थ आईडी के लिए आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (ABDM) में फ्री रजिस्ट्रेशन किया जा सकता है।

**ABHA नंबर से लिंक करने का क्या है लाभ**

अगर सीजीएचएस आईडी को ABHA नंबर से लिंक कर दिया जाएगा तो लाभार्थी के पास आसानी से अपने हेल्थ रिकॉर्ड पहुंच जाएगा। इससे बार-बार होने वाले टेस्ट के खर्चे बच जाएंगे। लाभार्थी अपने फोन में पर्सनल हेल्थ रिकॉर्ड (PHR) ऐप के जरिये हेल्थ रिकॉर्ड देख सकता है।

उदाहरण के तौर पर अगर लाभार्थी किसी इलाज के लिए अस्पताल जाता है और वहां से इलाज करवाने के बाद वह किसी और डॉक्टर के पास जाता है तो उसके पास उसका पूरा हेल्थ रिकॉर्ड होगा। इसके अलावा सरकार ऑनलाइन ओपीडी अपॉइंटमेंट पर भी काम कर रही है।

भविष्य में सीजीएचएस लाभार्थी वेलनेस सेंटर में ओपीडी अपॉइंटमेंट के लिए रजिस्ट्रेशन डेस्क के सामने मौजूद अपने मोबाइल डिवाइस के QR कोड स्कैन का इस्तेमाल कर सकता है।

# फल और सब्जी विक्रेताओं को पीएम स्वनिधि में मिला सबसे अधिक कर्ज

परिवहन विशेष न्यूज

सूचना के अधिकार के तहत पूछे गए सवाल के जवाब में शहरी मामलों के मंत्रालय ने जवाब दिया और योजना के लिए आवंटित 60 प्रतिशत से अधिक धनराशि का उपयोग 31 मार्च तक किया जा चुका है। आपको बता दें कि 23 अप्रैल तक इसके तहत 84.51 लाख से अधिक कर्ज बांटे गए जिनमें से अब तक 30.11 लाख से अधिक ऋण चुकाए जा चुके हैं।

**नई दिल्ली।** पीएम स्वनिधि योजना के लिए आवंटित 60 प्रतिशत से अधिक धनराशि का उपयोग 31 मार्च तक किया जा चुका है। सूचना के अधिकार के तहत पूछे गए एक सवाल के जवाब में आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय ने यह जानकारी दी।

**फल,सब्जी विक्रेता को मिला सबसे अधिक कर्ज**

इस योजना को जून, 2020 में लॉन्च किया गया था और 23 अप्रैल तक इसके तहत 84.51 लाख से अधिक कर्ज बांटे गए, जिनमें से अब तक 30.11 लाख से अधिक ऋण चुकाए जा चुके हैं। आरटीआई के जवाब से पता चलता है कि इस योजना के तहत फल और सब्जी विक्रेताओं को सबसे अधिक कर्ज दिया गया।

आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय ने बताया कि केंद्र ने वित्त वर्ष 2027-28 तक पीएम स्वनिधि योजना के तहत 2,096.49 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। कुल परिव्यय में से 31 मार्च तक 1262.60 करोड़ रुपये की राशि का उपयोग किया जा चुका है।

दरअसल, इस योजना का उद्देश्य बिना किसी गारंटी के उन स्ट्रीट वेंडरों को कार्यशील पूंजी उपलब्ध कराना था, जो कोरोना महामारी से प्रभावित हुए थे। योजना के तहत पहले साल 10 हजार रुपये की कार्यशील पूंजी दी जाती है और जब यह ऋण वापस आ जाता है तो अगले साल सात प्रतिशत ब्याज सब्सिडी पर 20 हजार रुपये और 50 हजार रुपये का कर्ज दिया जाता है।

# जेन जेड के 50% भारतीय अकेले कर सकते हैं विदेश यात्रा, सर्वे में सामने आई ये डिटेल

परिवहन विशेष न्यूज

एक नई रिपोर्ट में जानकारी सामने आई है कि नए जनरेशन के 50% लोग( Gen Z) अकेले इंटरनेशनल यात्रा करना चाहते हैं। इसमें से 80 प्रतिशत से अधिक लोग अपनी पहली तनख्वाह जमा करने के बाद ही यात्रा पर जाना पसंद करते हैं। सर्वे में पता चला कि तीन में से दो युवा भारतीय लगन से बचत कर रहे हैं।

**नई दिल्ली।** एक नए सर्वे से पता चलता है कि भारत में लगभग 50 प्रतिशत जेन जेड अपनी पहली स्वतंत्र अंतरराष्ट्रीय यात्रा (इंटरनेशनल ट्रिप्स) की योजना बना रहे हैं, जिनमें से 80 प्रतिशत से अधिक लोग अपनी पहली तनख्वाह जमा करने के बाद ही यात्रा पर जाना पसंद करते हैं।

वैश्विक यात्रा बाजार स्काईस्कैनर द्वारा किए गए सर्वेक्षण में कहा गया है कि जहां तीन में से दो युवा भारतीय लगन से बचत कर रहे हैं, वहीं पांच में से केवल एक ही अपनी यात्रा के सपने को जल्द साकार करने के लिए अभी खरीदें-बाद में भुगतान करें विकल्प का उपयोग करता है।

Gen Z के भारतीय करेंगे विदेशी यात्रा

रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत की जेन जेड (18-25 आयु वर्ग) के बीच यात्रा की तीव्र इच्छा है। उनमें से लगभग आधे (47 प्रतिशत) अपने माता-पिता या अभिभावकों के बिना और 49 प्रतिशत एडवेंचर और नई खोज की गहरी इच्छा से उत्साहित होकर विदेश में अवकाश यात्राओं की योजना बना रहे हैं।

दिलचस्प बात यह है कि स्काईस्कैनर के साथ पहली यात्रा शीर्षक वाली रिपोर्ट के अनुसार, वित्तीय स्वतंत्रता जेन जेड के लिए महत्वपूर्ण है, जिसमें 81 प्रतिशत लोग अपनी पहली नौकरी पाने या अपनी पहली तनख्वाह प्राप्त करने के बाद अपने पहले विदेशी साहसिक कार्य की योजना बनाना चुनते हैं।

परिणाम भारत में जेन जेड द्वारा विचार किए गए यात्रा व्यवहार और कारकों पर भी प्रकाश डालते हैं क्योंकि वे अपने माता-पिता या अभिभावकों के बिना अपनी पहली स्वतंत्र यात्रा के लिए अपना पाठ्यक्रम तैयार करते हैं।

इसलिए, 46 प्रतिशत संगीत समारोहों,

खेल आयोजनों और अन्य बड़े सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अनुभव करने के लिए विदेश जाने के लिए प्रेरित हुए, और 51 प्रतिशत ने यात्रा को मुक्त होने और नई संस्कृतियों में डूबने के अवसर के रूप में देखा, अधिकांश जेन जेड के लिए यह सब कुछ है।

**बजट के लिए जागरूक है नई पीढ़ी**

स्काईस्कैनर के यात्रा और गंतव्य विशेषज्ञ मोहित जोशी ने एक बयान में कहा कि भारत में जेन जेड को अन्वेषण का शौक है! चाहे वह अपनी घूमने की लालसा (42 प्रतिशत) को बढ़ाने के लिए सेमेस्टर ब्रेक और लंबे सप्ताहांत के अवसर का लाभ उठाने की उनकी इच्छा हो, या जन्मदिन, वर्षगाँठ, या स्नातक (39 प्रतिशत) जैसे विशेष मील के पत्थर का जश्न मनाने की, यात्रा के प्रति उनका जुनून निर्विवाद है,"

रिपोर्ट के अनुसार, जेन जेड यात्री, जो अपनी पहली विदेश यात्रा पर निकल रहे हैं, हर विवरण की योजना बनाना चाहेंगे। लगभग 4 में से 3 जेन जेड अपनी पहली यात्रा की योजना बनाते समय अपने यात्रा कार्यक्रम (76 प्रतिशत) और वापसी टिकट (73 प्रतिशत) बुक करना पसंद करते हैं।

# सरकार ने किसानों को किया अलर्ट, 17वीं किस्त के लिए जरूर करवा लें ये काम, वरना अटक जाएंगे पैसे

परिवहन विशेष न्यूज

पीएम किसान योजना का लाभ देश के करोड़ों किसानों को मिल रहा है। हालांकि योजना का लाभ पाने के लिए किसानों को ई-केवाईसी और जमीन का सत्यापन करवाना जरूरी है। अगर कोई किसान e-KYC नहीं करवाता है तो उसे किस्त की राशि अटक जाती है। चलिए जानते हैं कि योजना के लिए ई-केवाईसी करने का प्रोसेस क्या है?

**नई दिल्ली।** भारत सरकार द्वारा एग्रीकल्चर सेक्टर को बढ़ावा देने के लिए कई लाभकारी और कल्याणकारी योजनाएं चलाई जा रही है। इन योजना में से एक प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना (Pradhan Mantri Kisan Samman Nidhi Yojana) भी है।

इस योजना में किसानों को सालाना 6,000 रुपये की राशि मिलती है। यह राशि किसानों के अकाउंट में किस्त के तौर पर आती है। एक साल में सरकार इस योजना की तीन किस्त जारी करती है।

हर किस्त में किसानों के अकाउंट में

2,000 रुपये की राशि आती है। अभी तक किसानों के अकाउंट में 16वीं किस्त आ गई है। अब किसान 17वीं किस्त (PM Kisan Yojana 17th Installment) का इंतजार कर रहे हैं।

सरकार ने योजना से जुड़े कई नियम भी बनाए हैं। इन नियमों के अनुसार योजना का लाभ केवल उन किसानों को मिलेगा जिसने ई-केवाईसी (e-KYC) करवाया है। सरकार ने ई-केवाईसी को अनिवार्य कर दिया है।

**ई-केवाईसी क्यों है जरूरी?**

सरकार ने फर्जीवाड़ा को रोकने के लिए यह फैसला लिया है। योजना के सभी लाभार्थी चाहें वो पुराने हो या फिर नए सभी को यह काम करना जरूरी है।

अगर कोई किसान ई-केवाईसी नहीं करवाता है तो उसे योजना का लाभ नहीं मिलेगा। इसका मतलब है कि पीएम किसान योजना की किस्त की राशि अटक जाएगी।

**कैसे करें ई-केवाईसी (PM Kisan Yojana e-KYC Process)**

- किसान अपने नजदीक के सीएससी सेंटर जाकर आसानी से बायोमेट्रिक के जरिए ई-केवाईसी करवा सकते हैं।
- कई बैंक में भी पीएम किसान योजना के लिए ई-केवाईसी (PM Kisan Yojana e-KYC) की जा रही है।
- इसके अलावा किसान चाहे तो पीएम किसान पोर्टल (pmkisan.gov.in) के जरिये भी आसानी से ई-केवाईसी करवा सकता है। इसमें ओटीपी के जरिये ई-केवाईसी होगी।
- सरकार द्वारा लॉन्च पीएम किसान मोबाइल ऐप (PM Kisan App) के जरिये भी बड़ी आसानी से ई-केवाईसी किया जा सकता है।

# RBI अब कोटक महिंद्रा बैंक पर हुआ सख्त, नए ग्राहक बनाने पर लगाई पाबंदी; क्रेडिट कार्ड भी नहीं कर सकेगा जारी

कमजोर वित्तीय स्थिति वाले बैंकों पर भारतीय रिजर्व बैंक (Reserve Bank of India) की कार्रवाई जारी है। रिजर्व बैंक ने बुधवार को कोटक महिंद्रा बैंक को अपने ऑनलाइन और मोबाइल बैंकिंग चैनलों के जरिए नए ग्राहक बनाने पर तत्काल प्रभाव से रोक लगाने को कहा है। साथ ही बैंक के नए क्रेडिट कार्ड (Credit Card) जारी करने पर भी रोक लगा दी गई है।

**नई दिल्ली।** कमजोर वित्तीय स्थिति वाले बैंकों पर भारतीय रिजर्व बैंक (Reserve Bank of India) की कार्रवाई जारी है और लगभग हर दिन ऐसी खबरें सामने आ रही हैं जब किसी न किसी बैंक पर रिजर्व बैंक (RBI) कार्रवाई करता है। ताजा मामला कोटक महिंद्रा बैंक (Kotak Mahindra Bank Limited) से जुड़ा है। रिजर्व बैंक ने बुधवार को कोटक महिंद्रा बैंक को अपने ऑनलाइन और मोबाइल बैंकिंग चैनलों के जरिए नए ग्राहक बनाने पर तत्काल प्रभाव से रोक लगाने को कहा है। साथ ही बैंक के नए क्रेडिट कार्ड (Credit Card) जारी करने पर भी रोक लगा दी गई है।

केंद्रीय बैंक ने कहा है कि वर्ष 2022 और 2023 के लिए रिज़र्व बैंक की आईटी जांच से उत्पन्न महत्वपूर्ण चिंताओं और इन चिंताओं को व्यापक और समय पर ढंग से संबोधित करने में बैंक की ओर से लगातार विफलता के आधार पर ये कार्रवाई आवश्यक हो गई है।

आरबीआई ने एक बयान में कहा, "आईटी इन्वेंट्री प्रबंधन, पैच और परिवर्तन प्रबंधन, उपयोगकर्ता पहुंच प्रबंधन, विक्रेता जोखिम प्रबंधन, डेटा सुरक्षा और डेटा रिसाव रोकथाम रणनीति, व्यापार निरंतरता और आपदा वसूली कठोरता और ड्रिल, आदि के क्षेत्रों में गंभीर कमियां और गैर-अनुपालन देखे गए।"

# चलती ट्रेन में हुई चोरी, अब रेलवे यात्री को ब्याज समेत देगा हर्जाना

**ट्रेन में सफर के दौरान बैग मोबाइल या अन्य सामान चोरी होने की घटनाएं अक्सर होती रहती हैं। लेकिन रेलवे इसे अपनी सेवा में कमी नहीं मानता है। ऐसी ही घटना होने पर एक यात्री ने इसे कोर्ट में चुनौती दी। तीस हजारी कोर्ट स्थित जिला उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग ने यात्री के पक्ष में फैसला सुनाते हुए उत्तर रेलवे को यात्री को ब्याज समेत हर्जाना देने का आदेश दिया।**

**नई दिल्ली।** ट्रेन में सफर के दौरान बैग, मोबाइल या अन्य सामान चोरी होने की घटनाएं अक्सर होती रहती हैं। लेकिन, रेलवे इसे अपनी सेवा में कमी नहीं मानता है। ऐसी ही घटना होने पर एक यात्री ने इसे कोर्ट में चुनौती दी। तीस हजारी कोर्ट स्थित जिला उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग ने यात्री के पक्ष में फैसला सुनाते हुए उत्तर रेलवे को यात्री को ब्याज समेत हर्जाना देने का आदेश दिया।

यात्री का आरोप था कि सात जून, 2014 को वो दिल्ली से पटना के लिए महानंदा एक्सप्रेस से यात्रा कर रही थी। इस दौरान चलती ट्रेन से उसका ट्रॉली बैग चोरी हो गया। चोरी हुए समान की कीमत 1,20,000 रुपये थी।

**रेलवे की सेवा में कमी**

शिकायतकर्ता ने मानसिक प्रताड़ना सहने के लिए 50 हजार मुआवजे की भी मांग की। आयोग ने दोनों पक्षों की दलीलों को सुनने के बाद कहा कि रेलवे की सेवा में कमी के कारण यात्री को सीधे नुकसान उठाना पड़ा है।

**मुआवजा देने का दिया आदेश**

आयोग के अध्यक्ष दिव्य ज्योति जयपुरियार और सदस्य अश्वनी कुमार मेहता ने उत्तर रेलवे को शिकायतकर्ता को एक माह के अंदर सात सितंबर 2017 से अब तक 1,20,000 रुपये नौ प्रतिशत ब्याज के साथ देने को आदेश दिया। इसके साथ मानसिक पीड़ा और उत्पीड़न के लिए शिकायतकर्ता को मुआवजे के तौर पर 25,000 रुपये का भुगतान करने का भी आदेश दिया है।

**शिकायतकर्ता का आरोप- रेलवे की लापरवाही से चोरी हुआ सामान**

शिकायतकर्ता के मुताबिक ट्रेन में यात्रा दौरान उसके चोरी हुए ट्रॉली बैग में कपड़े, जेवर समेत कुछ दस्तावेज थे। चोरी किए गए सामान की कीमत एक लाख बीस हजार रुपये थी। आरोप लगाया गया कि रेलवे की लापरवाही के कारण सामान चोरी हो गया था।

शिकायतकर्ता ने चोरी की घटना के बाद सबसे पहले एस-छह कोच के टीटीई को प्राथमिकी दर्ज करने के लिए कहा। लेकिन, प्राथमिकी दर्ज करने की स्थिति के बारे में उन्हें कुछ नहीं बताया गया। इसके बाद, शिकायतकर्ता को रेलवे पुलिस बल से सात सितंबर, 2014 को केवल चोरी की पुष्टि करते हुए एक पत्र मिला।

इस पत्र में प्राथमिकी दर्ज करने के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया था। जिसके बाद उसने 23 अप्रैल, 2015 को रेलवे पुलिस में प्राथमिकी दर्ज कराई थी जो 15 मई, 2017 को अप्राप्य (अनट्रेस्ड) के रूप में भेजी गई थी।

**रेलवे की दलील- सामान के नुकसान के लिए जिम्मेदार नहीं**

आयोग ने यात्री की शिकायत पर उत्तर रेलवे को जवाब दाखिल करने के लिए नोटिस जारी किया था। रेलवे ने दलील दी कि घटना शिकायतकर्ता की लापरवाही के कारण हुई है। रेलवे कर्मचारी सामान के नुकसान के लिए जिम्मेदार नहीं है क्योंकि न तो सामान रेलवे को उसकी सुरक्षित अभिरक्षा के लिए सौंपा गया था और न ही रेलवे कर्मचारी को शिकायतकर्ता के सामान के बारे में पता था। शिकायतकर्ता द्वारा खोया सामान रेलवे के क्लाक रूम में भी नहीं था, इसलिए रेलवे की कोई कमी नहीं है। शिकायत खारिज करने का अनुरोध करते हुए रेलने ने तर्क दिया कि शिकायतकर्ता के पास अगर कोई सामान था, तो यह उसकी जिम्मेदारी थी कि वह अपने निजी सामान की सुरक्षा करे। रेलवे ने कहा कि वह व्यक्तिगत अभिरक्षा में रखे गए सामान और बिना बुक की गई वस्तुओं की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार नहीं है।

# उडीशा मे नबीन का लुंगी पहनका राजनीति

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड उडीशा

**भुबनेश्वर :** चुनाव से पहले ओडिशा की राजनीति में दिलचस्प घटनाक्रम देखने को मिला है । नवीन के लुंगी पहनने की घटना पर बिजेड़ी -बीजेपी के बीच जुबानी जंग शुरू हो गई है । पहले केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान पर निशाना साधा गया और फिर उनके काउंटर पर लुंगी पहनकर बिजेड़ी के राज्यसभा सांसद सस्मित पात्रा और प्रवक्ता स्वयं प्रकाश महापात्र ने प्रेस कॉन्फ्रेंस की ।मुख्यमंत्री के जोड़ी शंख वीडियो के बाद राज्य में लुंगी पॉलिटिक्स जोर पकड़ रही है । मुख्यमंत्री ने सोमवार रात अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर वीडियो शेयर किया । जिसमें मुख्यमंत्री लुंगी पहने नजर आ रहे थे । जिसे कुछ ही समय में लाखों लोगों ने देख लिया । वहीं, धर्मेंद्र ने मुख्यमंत्री के लुंगी पहनने वाले वीडियो की आलोचना की है । मंगलवार को झारसुगुड़ा लिकारा में एक बैठक में भाग लेते हुए उन्होंने कहा कि कल एक वीडियो में नवीन बाबू लुंगी पहनकर आये और शंख चिन्ह पर वोट देने को कहा । धर्मेंद्र ने कहा कि लुंगी की जगह कुर्ता पायजामा पहनकर वीडियो बनाना बेहतर होता। बिजेड़ी ने मंगलवार को इसे दाखिल कर पलटवार किया है ।

बीजेडी के राष्ट्रीय प्रवक्ता सस्मित पात्र ने कहा, नबीन ने जो लुंगी पहनी है, वह संबलपुरी बुनकरों द्वारा बनाई गई है। इस लुंगी को बनाने में सैकड़ों बुनकरों की मेहनत लगती है । ये हमारी परंपरा है । ग्रामीण इलाकों में रहने वाले लाखों उड़िया लोग लुंगी पहनते हैं। इसलिए केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने मुख्यमंत्री द्वारा पहनी गई लुंगी का नहीं बल्कि पहनने वाले का अपमान किया है ।इतना ही नहीं, उन्होंने संबलुरी संस्कृति को भी चोट पहुंचाई है । इसलिए उन्होंने राज्य के बुनकरों से माफी मांगने की मांग की। इसके अलावा बिजेड़ी प्रवक्ता स्वन्याप्रकाश महापात्रा पर भी निशाना साधा गया है ।

# 'कांग्रेस क्या न्याय सुनिश्चित करेगी, उसके पार्षद को ही नहीं मिल रहा न्याय', केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर का हमला

कर्नाटक के हुबली में कॉलेज परिसर में हुई छात्रा नेहा हिरेमथ की हत्या को लेकर केंद्रीय मंत्री एवं भाजपा नेता अनुराग ठाकुर ने बुधवार को कांग्रेस पर हमला बोला। कहा- कांग्रेस क्या न्याय सुनिश्चित करेगी जब उसकी पार्टी के ही पार्षद की बेटी की हत्या हो गई और पीड़ित परिवार को न्याय के लिए सीबीआई जांच की मांग करनी पड़ी।

**हैदराबाद।** कर्नाटक के हुबली में कॉलेज परिसर में हुई छात्रा नेहा हिरेमथ की हत्या को लेकर केंद्रीय मंत्री एवं भाजपा नेता अनुराग ठाकुर ने बुधवार को कांग्रेस पर हमला बोला। कहा- कांग्रेस क्या न्याय सुनिश्चित करेगी जब उसकी पार्टी के ही पार्षद की बेटी की हत्या हो गई और पीड़ित परिवार को न्याय के लिए सीबीआई जांच की मांग करनी पड़ी।

उन्होंने कहा कि ये हाल तो तब है जब कर्नाटक में कांग्रेस सत्तारूढ़ है और उसके चुनावी घोषणापत्र को 'न्याय पत्र' नाम दिया गया है। अनुराग ने पूछा - ₹राहुल गांधी, सोनिया गांधी, प्रियंका गांधी, जागिए। आप किसे न्याय दिलाने की बात करते हैं।₹ साथ ही कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार में 'सबका साथ, सबका विकास' सुनिश्चित किया गया है।

उन्होंने कहा कि राहुल गांधी की नफरत की दुकान में नफरत का बाजार खुल गया है। भाजपा नेता ने कहा कि गांधी- नेहरू के परिवार का कोई भी सदस्य नेहा के परिजनों के साथ खड़ा नहीं हुआ। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस चुप्पी साधे हुए हैं और तुष्टीकरण की राजनीति कर रही है। उन्होंने कहा कि मुझे लगता है कि एआईएमआईएम नेता असदुद्दीन ओवैसी और राहुल गांधी दोनों औरंगजेब की विचारधारा से प्रभावित हैं। इसलिए वे तुष्टीकरण की राजनीति करते हैं।

अनुराग ने कहा कि मोदी के मजबूत नेतृत्व के कारण ही आतंक के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक हो सकी तो दूसरी तरह राहुल हैं जो देश को कमजोर करने और परमाणु हथियार खत्म करने की बात करते हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि डोकलाम मसले पर राहुल चीनी अधिकारियों के साथ थे न कि भारतीय सेना के साथ।

इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष सैम पित्रोदा द्वारा भारत में विरासत टैक्स की पैरवी करने के मसले पर अनुराग ने कहा कि वह इसे कांग्रेस का वसूली टैक्स कहेंगे। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस के घोषणापत्र और उसके सोच से आम लोगों की संपत्ति, उनके बच्चों के भविष्य, देश की सीमाओं और सनातन को भी खतरा है।

**फैयाज छह दिन के लिए सीआईडी की कस्टडी में भेजा**

कांग्रेस पार्षद निरंजन हिरेमथ की बेटी नेहा की हत्या के आरोपित फैयाज को अदालत ने छह दिन के लिए सीआइडी की कस्टडी में भेज दिया है। एमसीए छात्रा नेहा की 18 अप्रैल को बीवीबी कॉलेज परिसर में उसके पूर्व सहपाठी और आरोपित फैयाज ने चाकू से गोदकर हत्या कर दी थी। पुलिस ने उसे कुछ ही समय बाद गिरफ्तार कर लिया था। पुलिस ने अपनी जांच में कहा कि नेहा और फैयाज एक-दूसरे के संपर्क में थे जबकि पीड़ित परिवार ने कहा है कि वह उसे परेशान कर रहा था और नेहा ने उसके शादी के प्रस्ताव को भी ठुकरा दिया था।

**पिता ने कहा - बेटी को बदनाम करने के लिए पुरानी तस्वीरें पोस्ट की जा रहीं**

एएनआई के अनुसार नेहा के पिता निरंजन हिरेमथ ने कहा कि बेटी को बदनाम करने के लिए पुरानी तस्वीरें और वीडियो क्लिप इंटरनेट मीडिया पर पोस्ट की जा रही हैं। उन्होंने कहा - ₹आज मेरी बेटी की मौत हुए हुए छह दिन हो गए हैं। जब हम इस घड़ी से उबरने की कोशिश कर रहे हैं तो कोई पुरानी तस्वीरें पोस्ट कर रहा है। इंटरनेट मीडिया पर बेटी को बदनाम करने के लिए फर्जी आइडी का इस्तेमाल किया जा रहा है। हमने इस बारे में साइबर पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है लेकिन मेरी बेटी को बेइज्जत करने की कोशिशों को रोकने के लिए अभी तक कोई कदम नहीं उठाया गया है।

# केवल रक्षा, उपग्रह सेक्टर के लिए ही नीलामी के बगैर स्पेक्ट्रम आवंटन; SC के फैसले को बदलने की कोशिश नहीं कर रही सरकार

सरकार दूरसंचार स्पेक्ट्रम आवंटन के लिए नीलामी को अहमियत देने के सुप्रीम कोर्ट के फैसले में किसी भी तरह के बदलाव की कोशिश नहीं कर रही है। एक अधिकारी ने बताया कि सरकार ने पिछले साल 15 दिसंबर को शीर्ष अदालत में एक अर्जी दायर कर कुछ विशिष्ट क्षेत्रों को स्पेक्ट्रम आवंटन के संबंध में स्थिति स्पष्ट करने की गुहार लगाई थी।

**नई दिल्ली।** सरकार दूरसंचार स्पेक्ट्रम आवंटन के लिए नीलामी को अहमियत देने के सुप्रीम कोर्ट के फैसले में किसी भी तरह के बदलाव की कोशिश नहीं कर रही है। सुप्रीम कोर्ट ने वर्ष 2012 के अपने फैसले में दूरसंचार स्पेक्ट्रम के आवंटन के लिए नीलामी को ही माध्यम बनाने का निर्देश दिया था। हालांकि, उपग्रह संचार और रक्षा जैसे विशिष्ट क्षेत्रों को इसके दायरे में नहीं रखा गया था। एक अधिकारी ने बताया कि सरकार ने पिछले साल 15 दिसंबर को शीर्ष अदालत में एक अर्जी दायर कर कुछ विशिष्ट क्षेत्रों को स्पेक्ट्रम आवंटन के संबंध में स्थिति स्पष्ट करने की गुहार लगाई थी। इसमें विशिष्ट उद्देश्यों वाले क्षेत्र जैसे उपग्रह संचार, रक्षा बलों और सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों, मेट्रो या रेलवे संचालन के लिए नीलामी के बगैर स्पेक्ट्रम आवंटित करने को लेकर स्पष्टीकरण देने का आग्रह किया गया था।

याचिका दिसंबर के अंत में संसद में दूरसंचार विधेयक को पारित करने से पहले दायर की गई थी। यह याचिका सोमवार को सुनवाई के लिए रखी गई। नए विधेयक में 19 छूटें दी गई हैं।

**कब होगी अगली नीलामी?**

सूत्र ने अदालत के समक्ष याचिका आने के बाद उपजे विवाद को 'बेमतलब' बताते हुए कहा कि सरकार से 2जी फैसले को बदलने जैसे सवाल किए जा रहे हैं, लेकिन तथ्य यह है कि दूरसंचार क्षेत्र में कई मुकदमों को देखते हुए पारदर्शिता बनाए रखने के लिए यह आवेदन दायर किया गया था। इसमें साफ किया गया था कि सरकार क्या करना चाहती है।

प्रशासनिक आवंटन मार्ग से एलन मस्क की स्टारलिंक, भारती एयरटेल के वनवेब और अमेजन के प्रोजेक्ट कुइपर जैसे अंतरिक्ष दूरसंचार सेवा प्रदाताओं को काफी राहत मिल सकती है, क्योंकि उन्हें नीलामी प्रक्रिया से गुजरे बिना स्पेक्ट्रम मिलने का रास्ता साफ हो जाएगा। दूरसंचार के लिए स्पेक्ट्रम की अगली नीलामी इस साल जून में होने वाली है।

# 'कांग्रेस के DNA में हैं तुष्टीकरण', राजनाथ सिंह बोले- सेना में की थी धार्मिक जनगणना की कोशिश

**रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कांग्रेस के संपत्ति के पुनर्वितरण के मुद्दे पर उठे बवाल के बीच कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि सत्ता में रहते हुए केंद्र की कांग्रेस नीत सरकार ने सशस्त्र सेनाओं में भी धर्म के आधार पर जनगणना कराने की कोशिश की थी।**

**विशाखापत्तनम।** रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कांग्रेस के संपत्ति के पुनर्वितरण के मुद्दे पर उठे बवाल के बीच कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि सत्ता में रहते हुए केंद्र की कांग्रेस नीत सरकार ने सशस्त्र सेनाओं में भी धर्म के आधार पर जनगणना कराने की कोशिश की थी। अगर कांग्रेस फिर से चुन कर सत्ता में आई तो वह फिर इस कोशिश को दोहरा सकती है। तत्कालीन सरकार ने धर्म आधारित जनगणना के जरिये देश की सेना को भी बांटने का प्रयास किया था।

**राजनाथ सिंह ने क्या कुछ कहा?**

विशाखापत्तनम में चुनाव प्रचार के दौरान राजनाथ सिंह ने बुधवार को कहा कि तुष्टीकरण तो कांग्रेस के डीएनए में हैं। कांग्रेस सरकार की ओर से गठित सच्चर समिति ने वर्ष 2006 में सशस्त्र बलों में धर्म आधारित जनगणना की सिफारिश की थी। कांग्रेस ने तबके लोकसभा चुनाव के दौरान अपने घोषणापत्र में भी निर्वाचित होने पर धार्मिक अल्पसंख्यकों को आरक्षण देने के संकेत दिए थे।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि अगर कांग्रेस धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए आरक्षण की शुरुआत करती है और इसे अगले स्तर पर ले जाकर सेना में भी शुरू करती है तो देश की एकता और अखंडता के लिए यह बहुत ही घातक होगा। रक्षा मंत्री ने कहा,

मुझे इस बात की चिंता है कि कांग्रेस ने अल्पसंख्यकों के जनकल्याण के नाम पर जो कुछ भी अपने घोषणापत्र में दिया है, वह सच्चर समिति की सिफारिशों की ही गूंज लगती है।

**आरक्षण को लेकर क्या कुछ बोले राजनाथ?**

कांग्रेस पर तुष्टीकरण की राजनीति का आरोप लगाते हुए उन्होंने कहा कि देश की सबसे पुरानी पार्टी पिछले दरवाजे से देश में धर्म आधारित आरक्षण की शुरुआत करने का प्रयास कर रही है। कांग्रेस का यही तुष्टीकरण उसका असली चेहरा बेनकाब करता है। उन्होंने कहा कि भाजपा और राजग का उद्देश्य सभी को न्याय और किसी का भी तुष्टीकरण नहीं करने में यकीन रखता है।

# 'संदेह के आधार पर ईवीएम पर नहीं दिया जा सकता है आदेश', VVPAT वेरिफिकेशन पर सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुरक्षित रखा

परिवहन विशेष न्यूज

सुप्रीम कोर्ट में बुधवार को इलेक्ट्रॉनिंग वोटिंग मशीन के जरिये डाले गए सभी वोट का वीवीपैट के साथ मिलान करने के अनुरोध वाली याचिकाओं पर सुनवाई हुई। न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता की पीठ ने चुनाव आयोग के एक अधिकारी से ईवीएम की कार्यप्रणाली के संबंधित पांच सवाल पूछे जिनमें यह सवाल शामिल था कि क्या ईवीएम में लगे माइक्रोकंट्रोलर फिर से प्रोग्राम करने योग्य हैं या नहीं?

**नई दिल्ली।** सुप्रीम कोर्ट में बुधवार को इलेक्ट्रॉनिंग वोटिंग मशीन (EVM) के जरिये डाले गए सभी वोट का वीवीपैट के साथ मिलान करने के अनुरोध वाली याचिकाओं पर सुनवाई हुई। जिसके बाद कोर्ट ने अपना फैसला सुरक्षिता रखा। न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति दीपांजागरण ब्यूरो, नई दिल्ली। इवीएम और वीवीपैट पर बार बार संदेश जताने वालों को सुप्रीम कोर्ट ने संदेश दे दिया है कि बिना किसी तथ्य के केवल संदेह के आधार कोई फैसला नहीं दिया जा सकता है। वकील प्रशांत भूषण से कोर्ट ने कहा-आप जिस रिपोर्ट पर भरोसा कर रहे हैं वह कहती है कि अभी तक हैकिंग की कोई घटना नहीं हुई। फिर इस पर रोक का आदेश कैसे दिया जा सकता है।

**वोट से VVPAT के मिलान मामले में SC ने फैसला रखा सुरक्षित**

कोर्ट ने ईवीएम और वीवीपैट की सुरक्षा और प्रोग्रामिंग के बारे में चुनाव आयोग से कुछ सवाल पूछे और आयोग द्वारा उनका उत्तर दिये जाने और ईवीएम वीवीपैट मशीन में किसी भी तरह की छेड़छाड़ की संभावना से इन्कार किये जाने पर मामले में अपना फैसला सुरक्षित रख लिया। एसोसिएशन फार डेमेक्रेटिक रिफार्मस

(एडीआर) संस्था और कुछ अन्य ने सुप्रीम कोर्ट में याचिकाएं दाखिल कर वीवीपैट पर्चियों का ईवीएम से 100 प्रतिशत मिलान की मांग की है।

सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ता के वकील प्रशांत भूषण ने कोर्ट से बैलेट से चुनाव कराए जाने की पुरानी व्यवस्था लागू करने की भी मांग की थी हालांकि कोर्ट ने यह दलील पहले ही ठुकरा दी थी। वैसे तो कोर्ट इस मामले में बहस सुनकर पहले ही 18 अप्रैल को फैसला सुरक्षित रख चुका था लेकिन बुधवार को कोर्ट ने चुनाव आयोग से कुछ सवालों के जवाब जानने के लिए मामले को फिर से सुनवाई पर लगाया था।

**ईवीएम और वीवीपैट मशीन में छेड़छाड़ के आरोप पर चुनाव आयोग ने क्या कहा?**

बुधवार को न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और दीपांकर दत्ता की पीठ ने चुनाव आयोग से कुछ सवाल पूछे। चुनाव आयोग ने दोहराया कि ईवीएम और वीवीपैट मशीन में किसी तरह की कोई छेड़छाड़ नहीं की जा सकती है। आयोग ने मशीनों की सुरक्षा उन्हें सील किये जाने और उनकी प्रोग्रामिंग के संबंध में स्थिति स्पष्ट की। लेकिन इसके बाद भी जब एडीआर की ओर से पेश वकील प्रशांत भूषण ने मशीन में प्रोग्रामिंग और छेड़छाड़ की आशंका जताई तो जस्टिस दीपांकर दत्ता ने कहा कि क्या सिर्फ संदेह के आधार पर कोर्ट ईवीएम के बारे में आदेश दे सकता है जबकि इसका कोई ठोस सबूत भी नहीं है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023